

Principles of **Organisational Behaviour**



Dr. Indrajeet R. Bhagat

Dr. Mohan S. Rode
Dr. Sandip B. Vanjari

Dr. Laxminarayan C. Kurpatwar
Dr. Dharmaraj B. Tanduljekar



Principles of
**ORGANISATIONAL
BEHAVIOUR**

Authors

Dr. Indrajeet Ramdas Bhagat

M.Com., MBA., SET., NET., Ph.D.

Dr. Mohan S Rode

M.Com., MBA., LLB., Ph.D.

Dr. Laxminaratan S. Kurpatwar

M.Com., MBA., (HRM)., MA.(Eco).,B.Ed.,
M Phil., Ph.D.

Dr. Sandeep B. Vanjari

M.Com.,NET., SET., MBA., DTL., DCS.,
GD&A., Ph.D.

Dr. Dharmaraj B. Tandujekar

M A.(Eco)., SET., Ph.D.



Anand Prakashan
Jaisingpura, Aurangabad.



Principles of
Organisational Behaviour

Authors : Dr. Indrajeet R. Bhagat, Dr Mohan S. Rode,
Dr. Laxminarayan C. Kurpatwar, Dr. Sandeep B. Vanjari
Dr. Dharmaraj B. Tendujekar

Publisher	:	Anand Prakashan, Jaisingpura, Aurangabad.(M.S) Phone No. : (0240) - 2400371. Cell : 9970148704 Email: anandprakashan7@gmail.com www.anandprakashan.in
©	:	Authors
Typeset At	:	Anand Computer Aurangabad.
Edition	:	1 st Edition
Date	:	01 August 2022
Design	:	Blue Design Aurangabad
ISBN No	:	978-93-91204-00-6
Printed At	:	Om Offset Aurangabad.
Main Distributor	:	Anand Book Depot Jaisingpura, Aurangabad - 431004 Phone No. : (0240) - 2400371 Cell : 9890032121
Price	:-	₹ 300 /-

AEON OF NEW ORGANISED
RESEARCH AND ACADEMICS

ANORA

IVth Edition

Indian women's Role at Achieving an equal future in the World



CHIEF EDITOR
DR. INDRAJEET RAMDAS BHAGAT

ANORA: Aeon of New Organized Research and Academics

Edition IVth

Indian Women's Role at Achieving an Equal Future in the World.

15 March 2022

Chief Editor

Dr. Indrajeet Ramdas Bhagat

**HoD, Faculty of Commerce Yeshwantrao Chavan College Ambajogai
District - Beed, State -Maharashtra**



Publication No. 264

© **Dr. Indrajeet Ramdas Bhagat**
HoD, Faculty of Commerce
Yeshwantrao Chavan College
Ambajogai District - Beed,
State - Maharashtra
Mob.No. 7020843425, 9665786454

Publisher :

Samiksha Publication, Pandharpur
Shri. Pravin Anilrao Bhakare
Shankar-Parvati Niwas,
Dhole Lane, Ranzani
Tahsil - Pandharpur,
Dist - Solapur - 413304,
Maharashtra, India
Mo.No. 9689141201 / 8605512742

Printing : Excel Printing Press, Pune

Cover Page : Santosh Ghongade

IVth Edition : 15 March 2022

Typesetting :
Samiksha Typesetters, Pandharpur

ISBN : 978-93-91941-26-0

Price : 400/-

**'ANORA: Aeon of New Organized
Research and Academics'**
Indian Women's Role at Achieving an
Equal Future in the World.

CHIEF EDITOR

Dr. Indrajeet Ramdas Bhagat
HoD, Faculty of Commerce
Yeshwantrao Chavan College Ambajogai
District - Beed, State - Maharashtra
Mob.No. 7020843425, 9665786454

EDITOR BOARD

Dr. Suwarna Ranpise
Faculty of PES College of Education,
Shivajinagar, Pune

Dr. Sanjay Durwasrao Gawai
Associate Professor
Mahatma Basveshwar Mahavidyalaya, Latur

Mr. Sunil T. Bhosale
Yeshwantrao Chavan College, Ambajogai

Prof. Amol A. Solunke
Yeshwantrao Chavan College, Ambajogai

PEER REVIEW / REFEREES

Prof. Viveka Nand Sharama
Dr. Sandeep Vanjari
Dr. T. Aasif Ahmed
Dr. Mahejabin Sayyad
Prof. Dr. Mohan Rode
Dr. Chhetan Chhoidub
Prof. Rajesh Kumar

Samiksha Publication books are available on bookganga.com for online purchase.



INDEX

Chapter 01	Women Transformational Leadership Style - Dr. T Aasif Ahmed, Mr. V. Muthu	10
Chapter 02	Tribal Women of Jharkhand in entrepreneurship – A case of Jharkhand women self-supporting poultry cooperative federation limited (JWSPCFL), Ranchi Jharkhand - Mr. Prem Bhaskar	15
Chapter 03	A key insight to changes and challenges for women in India with reference to Entrepreneurship - Chef. Pawan Ailawadi, Mr. Abhishek Dixit	21
Chapter 04	The Execution of Women in Technology – A Perspective - Dr. U. Surya Kameswari, G. Mounika	27
Chapter 05	Role of Media in Women Empowerment in India -Dr. S. Innasimuthu	33
Chapter 06	A Review About Women Unemployment During Covid'19 - Mr. E. Balraj, Dr. A. Syed Musthafa, Mrs. P. Kalaivani	36
Chapter 07	Women in Sports in India: Perspective, Challenges and Suggestions - Dr. Nirlep Kaur	42
Chapter 08	Women's Empowerment is Essential to Sustainable Development - Amali Arockia Selvi J., Stella P.	48
Chapter 09	The Role of Women in Indian Agriculture – Sericulture - B. Renukadevi, Malathi Eswaran	52

Chapter 20	Future Directions to Women Entrepreneurship Dr. Kunal Sil	105
Chapter 21	भारत में महिला सशक्तिकरण चुनौतियाँ और कठिनाइयाँ और सरकार के प्रयास - डॉ. धर्मराज तंदुलजेकर	109
Chapter 22	राष्ट्र निर्माण में नारी शक्ति की भूमिका - डॉ. राजेन्द्र राउत	113
Chapter 23	विरह जन्य पीड़ा के निमित्त आत्मसम्मान से साक्षात्कार : यशोधरा - डॉ. स्नेहलता कुमारी	116
Chapter 24	महिला सक्षमीकरण आणि समानतेची सुनिश्चितता - वैशाली रामकृष्ण सारणिकर	120
Chapter 25	स्त्री सशक्तिकरण व सामाजिक सुधार - डॉ. बंदना फटाले	123
Chapter 26	ग्रामीण महिलांच्या समस्या : एक व्यापक दृष्टिक्षेप - डॉ. बंडू जयसिंग कदम	126
Chapter 27	मराठी साहित्यात विज्ञान कथा लेखिकांचे योगदान - सुनीता प्रदीप रंगारी	133
Chapter 28	भारतीय महिलांचे क्रीडा क्षेत्रात योगदान - प्रा.भारत विठ्ठलराव पल्लेवाड	138
Chapter 29	महिलांशी संबंधित कायदे - डॉ. सोमा पी. गोंडाणे	141
Chapter 30	महाराष्ट्र शासनाने महिला सक्षमीकरणासाठी उचललेली पावले - प्रा. डॉ. राहुल धुमाळ	145
Chapter 31	स्वरसम्राज्ञी भारतरत्न लता मंगेशकर यांचे भारतीय संगीत क्षेत्रातील बहुमूल्य योगदान - प्रा. स्वाती लक्ष्मणराव भगत (मनवर)	149
Chapter 32	भारतीय कृषीमध्ये महिलांची भूमिका - डॉ. विठ्ठल शंकरराव फुलारी	152
Chapter 33	भारतातील महिला सक्षमीकरणाच्या शासकीय योजना - डॉ. ज्ञानेश्वर शंकर वडजे	155
Chapter 34	The Role of Nutrition in managing the Menopause Syndrome ¹ Kimeera Ambati & ² Dr.S.SanthiSree	159

Chapter 21

भारत में महिला सशक्तिकरण चुनौतियाँ और कठिनाइयाँ और सरकार के प्रयास

डॉ धर्मराज तंदुलजेकर

प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, यशवंतराव चौव्हाण महाविद्यालयम अंबाजोगाई

प्रस्तावना

वर्ष २०२०-२१ महिला अधिकारों की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण वर्ष माना जा सकता है। गौरतलब है कि यह महिला अधिकारों और समाज के विभिन्न स्तरों पर महिलाओं की भूमिका से जुड़ी दो बड़ी घटनाओं की २५वीं वर्षगांठ का वर्ष है। इस वर्ष 'भारत में महिलाओं की स्थिति पर समिति' (CSWI) द्वारा संयुक्त राष्ट्र को 'समानता की ओर' या 'टुवर्ड्स इकालिटी' (Towards Equality) नामक रिपोर्ट को प्रस्तुत किये हुए लगभग २५ वर्ष पूरे हो गए हैं। इस रिपोर्ट में भारत में महिलाओं के प्रति संवेदनशील नीति निर्माण पर ध्यान केंद्रित करते हुए लैंगिक समानता पर एक नवीन दृष्टिकोण प्रदान करने का प्रयास किया गया। साथ ही वर्ष २०२० में 'बीजिंग प्लेटफॉर्म फॉर एक्शन' की स्थापना की २५ वीं वर्षगांठ भी है, जो समाज में महिलाओं की स्थिति और सरकारों के नेतृत्व में उनके सशक्तिकरण के प्रयासों के विश्लेषण का एक बेंचमार्क है। पिछले दो दशकों में भारत में महिला अधिकारों की रक्षा हेतु कई बड़े प्रयास किये गए और इनके व्यापक सकारात्मक परिणाम भी देखने को मिले हैं, हालाँकि ५ ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के लक्ष्य की प्राप्ति के लिये भारत की अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका और इससे जुड़ी चुनौतियों की समीक्षा कर अपेक्षित नीतिगत सुधारों को अपनाना बहुत आवश्यक है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका

भारत में महिला रोजगार संबंधी आँकड़े देश के आर्थिक विकास, कम प्रजनन दर और स्कूली शिक्षा की दर में वृद्धि जैसे संकेतकों से मेल नहीं खाती। वर्ष २००४ से वर्ष २०१८ के बीच स्कूली शिक्षा के मामले में घटते लैंगिक अंतराल के विपरीत कार्य क्षेत्रों में भागीदारी के संदर्भ में लैंगिक अंतराल में भारी वृद्धि देखने को मिली। हाल ही में जारी 'आवाधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS), २०१८-१९' के अनुसार, कार्यक्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी में भारी गिरावट देखने को मिली है। वर्ष २०११-१९ के बीच ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यस्थलों पर महिलाओं की भागीदारी ३५.८% से घटकर २६.४% ही रह गई। वर्ष २०१९ में 'विश्व आर्थिक मंच' (World Economic Forum- WEF) की 'वैश्विक लैंगिक अंतराल रिपोर्ट' में महिलाओं की आर्थिक भागीदारी और इसके लिये उपलब्ध अवसरों के संदर्भ में भारत को १५३ देशों की सूची में १४९ वें स्थान पर रखा गया था। गौरतलब है कि इस सर्वेक्षण में भारत एकमात्र ऐसा देश था जिसमें आर्थिक भागीदारी में लैंगिक अंतराल राजनीतिक लैंगिक अंतराल से अधिक पाया गया। वर्ष २०१९ में जारी ऑक्सफैम रिपोर्ट के अनुसार,

लिंग के आधार पर वेतन के मामले में होने वाले भेदभाव के मामले में एशिया के देश सबसे प्रमुख हैं, एशिया में समान योग्यता और पद पर कार्य करने वाली महिलाओं को ३४% कम वेतन प्राप्त हुआ। अक्टूबर २०२० में जारी आबधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) रिपोर्ट के अनुसार, अक्टूबर-दिसंबर २०१९ में महिला बेरोजगारी की दर ९.८% रही जो वर्ष २०१९ में जुलाई-सितंबर की तिमाही के आँकड़ों से अधिक है, गौरतलब है कि COVID-19 महामारी के बाद देशभर में बेरोजगारी के आँकड़ों में व्यापक वृद्धि देखी गई।

COVID-19 महामारी के बाद देशभर में बेरोजगारी के आँकड़ों में व्यापक वृद्धि देखी गई।

भारतीय महिलाओं की चुनौतियाँ और कठिनाइयाँ

भारतीय महिलाओं की चुनौतियाँ और कठिनाइयाँ: कृषि क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी लगभग ६०% है परंतु १. असंगठित क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी है जिन्हें स्वास्थ्य, सामाजिक या आर्थिक सुरक्षा से संबंधित कोई भी इनमें से अधिकांश भूमिहीन श्रमिक है जिन्हें स्वास्थ्य, सामाजिक या आर्थिक सुरक्षा से संबंधित कोई भी सुविधा नहीं प्राप्त होती है। वर्ष २०१९ में मात्र १३% महिला किसानों के पास अपनी जमीन थी और वर्ष २०१९ की जनगणना के अनुसार, यह अनुपात मात्र १२.८% था। इसी प्रकार विनिर्माण क्षेत्र (लगभग पूरी तरह असंगठित) में महिला श्रमिकों की भागीदारी लगभग १४% ही है। सेवा क्षेत्र में भी अधिकांश महिलाएँ कम आय वाली नौकरियों तक ही सीमित हैं, 'राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण (NSS), २००५' के अनुसार, ४.७५ मिलियन घरेलू कामगारों में से ६०% से अधिक महिलाएँ हैं।

२. सामाजिक और धार्मिक पृष्ठभूमि: भारत में लगभग सभी धर्मों और वर्गों के लोगों में लंबे समय से समाज की मुख्यधारा में महिलाओं की सक्रिय भूमिका को लेकर अधिक स्वीकार्यता नहीं रही है। वर्तमान में भी देश के कई हिस्सों में महिलाओं को घरेलू कामकाज या अध्यापक अथवा नर्स आदि जैसी भूमिकाओं में ही कार्य करने को प्राथमिकता दी जाती है। सामाजिक दबाव और विरोध के भय से कुछ पारंपरिक क्षेत्रों को छोड़कर आमतौर पर अन्य क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी कम ही रही है। भारतीय समाज में व्याप्त इस भेदभाव की शुरुआत बच्चे के जन्म से ही हो जाती है, इस भेदभाव को भारत में जन्म के समय लिंगानुपात में भारी असमानता संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (United Nations Population Fund- UNFP) के अनुमान के अनुसार, लगभग ९१० के आधार पर समझा जा सकता है।

३. उच्च शिक्षा और प्रशिक्षण के अवसरों की कमी: पिछले दो दशकों में देश में प्रारंभिक शिक्षा के मामले में व्याप्त लैंगिक असमानता को दूर करने में बड़ी सफलता प्राप्त हुई है, हालाँकि उच्च शिक्षा और पेशेवर प्रशिक्षण संबंधी कार्यक्रमों में महिलाओं की भागीदारी में कमी अभी भी बनी हुई है। 'अखिल भारतीय उच्च शिक्षा सर्वेक्षण, २०१८-१९' की रिपोर्ट II India Survey on Higher Education (ISHE) report के अनुसार, प्रौद्योगिकी और तकनीकी से संबंधित पाठ्यक्रमों में नामांकित पुरुष छात्रों (७९.९%) की तुलना में महिला छात्रों (२८.९%) की भागीदारी काफी कम रही।

४. संसाधनों की कमी: कार्य क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी शिक्षा और रोजगार के अवसरों की उपलब्धता के साथ आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता पर भी निर्भर करती है। देश में अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों या छोटे शहरों में घर से कार्यस्थल की दूरी, २४ घंटे यातायात के सुरक्षित साधन, सार्वजनिक स्थलों पर प्रसाधन या अन्य आवश्यक संसाधनों का न होना और इनकी वहीनयता भी महिलाओं की भागीदारी में कमी का एक

प्रमुख कारण है। इन संसाधनों की अनुपलब्धता का प्रभाव उनके स्वास्थ्य और कार्यक्षमता पर भी पड़ता है।

कार्यस्थलों पर भेदभाव और शोषण: कार्यस्थलों पर होने वाला भेदभाव महिलाओं के विकास में एक बड़ी बाधा रहा है, देश में सक्रिय सार्वजनिक (सेना, पुलिस आदि) और निजी क्षेत्र के अधिकांश संस्थानों में शीर्ष निर्णायक पदों पर महिला अधिकारियों की कमी इस भेदभाव का एक स्पष्ट प्रमाण है। कृषि क्षेत्र में महिलाओं निर्यात भूमिका अधिक होने के बावजूद भी समाज के साथ-साथ सरकार की योजनाओं में इसकी की सक्रिय भूमिका की कमी दिखाई देती है। कार्यस्थलों पर भेदभाव और शोषण की घटनाएँ पीड़ित व्यक्ति के साथ स्वीकार्यता की कमी के मनोबल को भी कमजोर करती हैं, हाला ही में सोशल मीडिया पर सक्रिय 'मी टू आकांक्षी युवाओं' (MeToo Movement) के तहत सामने आई महिलाओं के अनुभवों ने इस क्षेत्र में व्यापक अभियान' (MeToo Movement) को रेखांकित किया है।

सुधार की आवश्यकता को रेखांकित किया है।

सुधार की आवश्यकता: देश की अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित नीतिगत असफलता: देश की अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करने में सरकार की नीतियाँ अधिक सफल नहीं रही हैं। इसका एक कारण भारतीय राजनीति (लगभग १३% महिला सांसद, स्वतंत्र भारत में मात्र एक महिला प्रधानमंत्री) और नीति निर्माण संबंधी अन्य महत्वपूर्ण पदों पर महिलाओं के प्रतिनिधित्व में कमी को माना जा सकता है।

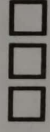
भारत में महिलासशक्तिकरणसरकार के प्रयास:

केंद्र सरकार द्वारा कार्यस्थल पर गर्भवती महिलाओं के हितों की रक्षा के लिये 'मातृत्व लाभ (संशोधन) अधिनियम, २०१७' के माध्यम से मातृत्व अवकाश को १२ सप्ताह से बढ़ाकर २६ सप्ताह कर दिया गया है, इस अधिनियम को सामाजिक सुरक्षा संहिता, २०२० में समाहित किया गया है। विज्ञान एवं इंजीनियरिंग के क्षेत्र में महिला शोधकर्ताओं को शोध एवं विकास गतिविधियों के लिये प्रोत्साहित करने हेतु केंद्र सरकार द्वारा 'सर्ब-पावर' (SERB-POWER) नामक एक योजना की शुरुआत की गई है। देश में 'मी टू अभियान' के बाद कार्यस्थलों पर बड़े पैमाने पर महिला शोषण के मामलों के सामने आने के बाद अक्टूबर २०१८ में केंद्रीय गृह मंत्री की अध्यक्षता में मंत्रियों के समूह (Group of Ministers-GoM²) का गठन किया गया, जिसने इस समस्या के समाधान हेतु अपनी सिफारिशें प्रस्तुत की रेल यात्रा के दौरान महिला सुरक्षा के प्रयासों को मजबूत करने और महिलाओं में सुरक्षा की भावना जगाने के लिये 'रेलवे सुरक्षा बल' (Railway Protection Force-RPF) द्वारा 'मेरी सहेली' (Meri Saheli) नामक एक पहल की शुरुआत की गई है।

उपसंहार

भारतीय अर्थव्यवस्था निगरानी केंद्र द्वारा हाल ही में जारी आँकड़ों के अनुसार, COVID-19 महामारी से उत्पन्न चुनौतियों के कारण अप्रैल और मई माह में ३९% कामकाजी महिलाओं को अपनी नौकरी गंवानी पड़ी। राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण के अनुसार, पुरुषों की तुलना में भारतीय महिलाओं को बिना भुगतान के घरेलू कार्यों में योगदान देना पड़ता है। COVID-19 के दौरान घरेलू हिंसा के मामलों में भारी वृद्धि देखी गई थी, साथ ही इस दौरान महिलाओं के लिये शिक्षा और रोजगार की पहुँच बाधित हुई है जो पिछले कई वर्षों के दौरान इस क्षेत्र में हुए सुधार के प्रयासों पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। भारत में विभिन्न सार्वजनिक (शिक्षा मित्र, आशा

कार्यकर्ता आदि) और निजी क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं को उनके कार्य के अनुरूप अपेक्षा के अनुरूप कम भुगतान दिया जाना एक बड़ी चुनौती है। केंद्र सरकार द्वारा हाल ही में देश के श्रम कानूनों में बड़े बदलाव किये गए हैं हालाँकि इनमें देश की अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित करने, कार्यस्थलों पर महिला हितों की रक्षा आदि मुद्दों के संदर्भ में कोई विशेष सुधार नहीं किया गया है। वर्तमान समय में देश की महिला हितों की रक्षा आदि मुद्दों के बढ़ाने के साथ, कार्यस्थलों पर व्याप्त भेदभाव और महिला सुरक्षा अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी को अपनाया जाना चाहिये। सरकार को असंगठित संबंधी चुनौतियों को दूर करने के लिये बहु-पक्षीय प्रयासों को प्रशिक्षण, सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा आदि) क्षेत्र में कार्य कर रही महिलाओं की भागीदारी और उनके हितों की रक्षा सुनिश्चित करने से जुड़े के साथ अर्थव्यवस्था के सभी स्तरों पर महिलाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिये प्रयासों पर विशेष ध्यान देना होगा। कार्यस्थलों पर प्रसाधन केंद्रों आदि के तंत्र को मज़बूत यातायात साधनों की पहुँच में विस्तार के साथ सर्वजनिक स्थलों पर प्रसाधन केंद्रों आदि के तंत्र को मज़बूत करना बहुत ही आवश्यक है। उच्च शिक्षा और पेशेवर प्रशिक्षणों में शामिल होने के लिये महिलाओं को सहयोग प्रदान करने के साथ ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च शिक्षा की पहुँच को मज़बूत करने पर विशेष ध्यान देना होगा। इसके साथ ही नीति निर्माण और महत्वपूर्ण संसाधनों के शीर्ष तंत्र में महिला प्रतिनिधित्व को बढ़ाने हेतु विशेष प्रयास किये जाने चाहिये। शिक्षा और रोज़गार के अवसरों में वृद्धि से महिलाओं में अपने स्वास्थ्य तथा विकास के प्रति जागरूकता के बढ़ने के साथ अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता में वृद्धि होती है। इस बदलाव का सकारात्मक प्रभाव समाज तथा देश की अर्थव्यवस्था पर भी देखने को मिलता है। देश की अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका को स्वीकार करते हुए बेहतर योजनाओं के क्रियान्वयन के माध्यम से गरीबी, स्वास्थ्य और आर्थिक अस्थिरता से संबंधित चुनौतियों से निपटने में सहायता प्राप्त हो सकती है।





CHIEF EDITOR

DR. INDRAJEET RAMDAS BHAGAT

EDITOR



Dr. Suwarna Ranpise
Faculty of PES College of Education,
Shivajinagar, Pune



Dr. Sanjay Durwasrao Gawai
Associate Professor
Mahatma Basveshwar Mahavidyalaya, Latur



Prof. Amol A. Solunke.

Yeshwantrao Chavan College, Ambajogai



Mr. Sunil T. Bhosale
Yeshwantrao Chavan College, Ambajogai



Price : 400/-

ISBN : 978-93-91941-28-0



II EDITION

Anora

AEON OF NEW ORGANISED RESEARCH AND ACADEMICS

75
YEARS
OF
INDIAN INDEPENDENCE
AN OVERVIEW

भारतीय स्वातंत्र्याच्या ७५ वर्षांचे अवलोकन

CHIEF EDITOR

DR. SANDIP VANJARI



II EDITION

Anora

Aeon of New Organised Research and Academics

75
YEARS
OF
INDIAN INDEPENDENCE
AN OVERVIEW

भारतीय स्वातंत्र्याच्या ७५ वर्षांचे अवलोकन

❁ Chief Editor ❁

Dr. Sandip Vanjari



Anand Prakashan



Scanned with OKEN Scanner

Anora II : Aeon of New Organised Research and Academics

Author : Dr. Sandip Vanjari

Publisher : Anand Prakashan
Jaisingpura Near, Dr. B.A.M.University
Aurangabad. (M.S)
Email : anandprakashan7@gmail.com
Phone : 0240-2400371, 9970148704

© : Author

Typeset at : Anand Computer. A.bad

Edition : 1st Edition

Date : 20 December 2021

ISBN : 978-93-91204-31-0

Cover Design : Aurora Design, Mumbai.

Printed At : Om Offset, Aurangabad

Price : 500 /-



Anera

Aeon of New Organised Research and Academics

75
YEARS
OF
INDIAN INDEPENDENCE
AN OVERVIEW

भारतीय स्वातंत्र्याच्या ७५ वर्षांचे अवलोकन



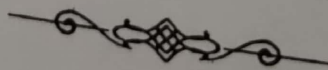
Anora IInd :

Aeon of New Organised Research and Academics

→ INDEX ←

Sr.No	Title of Chapter / Author	Page. No
1.	Opportunities and Challenges in E-commerce in India. - Dr. P. Rizwan Ahmed, - A. Zakiuddin Ahmed	09
2.	Adoption of E- Commerce over Traditional Commerce. - Deepa Nathwani	13
3.	Social Welfare Programs and unsolved problems of Downtrodden Sections of the Society in Tamil Nadu. - A Theoretical Perspectives - Dr. G. Yoganandham	21
4.	Role of Commercial Banks in Agricultural and Rural Development. - Dr. B.R. Dahe	45
5.	A Study of Cashless Economy in India- Present Scenario and their Challenges. - Dr. Vitthal Dhondiba Jadhav	50
6.	Impact of Online Learning on Students. - Dr. P. L. Chitnis	57
7.	Micro Industries Pillar of Economic Development. - Dr. Sudhir V. Mane	63
8.	Agri Tourism – A Business Model of Agri Tourism Development Corporation. - Smt. Vaidya Punam Revnnath	68
9.	Adoption of E – Commerce Over Traditional Commerce. - Naim Husen Khatik	74
10.	A Theoretical Perspective on Unemployment in India. - An Evaluation.- Mr.E.Mohammed Imran Khan, Dr.G.Yoganandham	79
11.	The Role of Taxation System for Development of Indian Economy. - Dr. B. S. Kale	95
12.	Pandit Nehru's Economic Ideology: Its Relevance in the 21 st Century. - Mr. Shrikant Tandale	103
13.	Study of Social Media Marketing. - Prof. Dr. Ratnaparkhe S.D.	108

14. After Pandemic India: A More Inclusive and Sustainable Indian Economy. - Dr. D. B. Tanduljekar 113
15. Digitalization in India: An Innovative Concept. - Bhangare Ganesh Shivnath 116
16. An Overview of International Business Management Philosophy. - Sameh Najib Qaid Salah Al-Ward, - Dr. Epper Vilas Sadashivrao 123
17. A Study of Monetary Policy Reforms in India. - Prof. Deshmukh Ujwala Madhukar 129
18. Envisioning Life Beyond Covid-19. - Mr. Amol Solunke 136
19. आत्मनिर्भर भारत और किसान - श्री. नरेंद्र रमाकांत चोले, प्रा. जयप्रभा महदेव भगत 138
20. विजय तेंडुलकर के नाटक और मॉबलिचिंग - शेख अस्लम युनूस 140
21. भारतीय अधिकोषण उद्योगातील नवप्रवाह आणि भारत सरकारची भूमिका - डॉ. इंद्रजीत भगत 144
22. उद्योजकतेतून महिलांचे सक्षमीकरण - Dr. Anupama Labhe 148
23. स्वातंत्र्योत्तर मराठी नाटकातील स्त्री भूमिकांची मनःस्थिती: एक चिकित्सक शोध - सुरेखा रं. मसाळ 151
24. स्वातंत्र्य आणि मराठी नाटकाचा अनुबंध - प्रा. डॉ. संपदा कुलकर्णी 156
25. आधुनिक महाराष्ट्राच्या शैक्षणिक विकासात यशवंतराव चव्हाण यांचे योगदान - डॉ. अनंत मरकाळे 159
26. कृषी क्षेत्रातील महिला शेतमजुरांच्या आर्थिक सामाजिक स्थितीचा समाजशास्त्रीय अभ्यास - श्रीमती. धुमाळ सीमा काशिनाथ 163
27. "Covid -19 संकटातील Lockdown मुळे भारतातील लघुउद्योगावरील झालेले परिणामाचा एक चिकित्सक अभ्यास." - डॉ. राहूल रघुनाथराव माने 165
28. कृषी व ग्रामीण पर्यटन - प्रा. डॉ. निशा अशोक कळंबे 168
29. मराठवाड्यातील ग्रामीण कथा साहित्यातील कृषक जीवन विशेष संदर्भ - रा. र. बोराडे, 'वानवळा' - काजगुंडे हनुमंत महादेव 172



After Pandemic India: A More Inclusive and Sustainable Indian Economy

■ Dr. D. B. Tanduljekar

Prin. And Professor, YCC, Ambajogai, Dist: Beed.

Introduction:

History shows that the impact of pandemics, unlike financial and banking crises, could be a lot more asymmetric by affecting the vulnerable segments more. The COVID-19 pandemic is no exception. Within countries, contact-intensive service sectors employing large number of informal, low-skilled and low-wage workers have been hit harder. In several emerging and developing economies, lack of health care access has disproportionately affected the family budget of the poor. Even education which was provided online during the pandemic excluded the low-income households due to the lack of requisite skills and resources. Overall, there are evidences across countries that the pandemic may have severely dented inclusivity.

After Pandemic India:

The global recovery has also been uneven across countries and sectors. Advanced economies have normalised faster on the back of higher pace of vaccination and larger policy support. Emerging and developing economies are lagging due to slow access to vaccine and binding constraints on policy support. Multilateralism will lose credibility if it fails to ensure equitable access to vaccine across countries. If we can secure the health and immunity of the poor, we would have made a great leap towards inclusive growth. Global co-operation remains vital for rapid progress on this front.

Needless to add that inclusive growth in the post-pandemic world will require cooperation and participation of all stakeholders. In India, collaborative effort of various stakeholders is helping accomplish a seemingly difficult task of accelerating the pace of vaccination. The private sector is developing and manufacturing the vaccines, the Union Government is centrally procuring and supplying it and the state governments are delivering and administering it in every nook and corner of the country. India is now administering a record of over one crore doses of the vaccine across all segments of the population.

A major challenge to inclusiveness in the post-pandemic world would come from the fillip to automation provided by the pandemic itself. Greater automation would lead to overall productivity gain, but it may also lead to slack in the labour market. Such a scenario calls for significant skilling/training of our workforce. We also need to guard against any emergence of "digital divide" as digitisation gains speed after the pandemic. Further, the need for professional human resources trained in science, technology, engineering and mathematics (STEM) is rising briskly. Major technology-based firms have expressed their intention to hire many new professionals with skills in these areas. In the short-term, the supply of such a workforce cannot be increased by the traditional educational system, and thus there is a need for close involvement of corporates in the design and implementation of courses suitable to the changing industrial landscape.

As India recovers, India must deal with the legacies of the crisis and create conditions for strong, inclusive and sustainable growth. Limiting the damage that the crisis inflicted was just the first step; our endeavour should be to ensure durable and sustainable growth in the post-pandemic future. Restoring durability of private consumption, which has remained historically the mainstay of aggregate demand, will be crucial going forward. More importantly, sustainable growth should entail building on macro fundamentals via medium-term investments, sound financial systems and structural reforms. Towards this objective, a big push to investment in healthcare, education, innovation, physical and digital infrastructure will be required. India should also continue with further reforms in labour and product markets to encourage competition and dynamism and to benefit from pandemic induced opportunities. The Production Linked Incentive (PLI) scheme announced by the Government for certain sectors is an important initiative to boost the manufacturing sector. It is necessary that the sectors and companies which benefit from this scheme utilise this opportunity to further improve their efficiency and competitiveness. In other words, the gains from the scheme should be durable and not one-off.

Again, for growth to be sustainable, a transition towards greener future will remain critical. The need for clean and efficient energy systems, disaster resilient infrastructure, and environmental sustainability cannot be overemphasised. Due

consideration should be given to individual country roadmaps keeping in mind country-specific features and their stage of development while adopting policies towards climate resilience.

Conclusion:

On the whole, while the pandemic has created enormous challenges, it can also act as an inflection point to alter the course of development. Enhanced adoption of technology will give impetus to productivity, growth and income. Leveraging technology in implementing government schemes, training and skill development programme for the unemployed, promoting women-friendly work atmosphere and supporting education of the poor and marginalised sections would be areas of focus as we embark on our journey beyond COVID-19. Income and job creation with digitalisation and innovation can bring about a new age of prosperity for a large number of people.



75 YEARS OF INDIAN INDEPENDENCE AN OVERVIEW

CO-EDITORS

Dr. Mahejabin Sayyad

Dr. T Aasif Ahmed

Dr. Indrajeet Ramdas Bhagat

Dr. Prakash Rodiya

Dr. Pranita Chitnis

Mr. Swapnil Rajpankhe

Books Available at:



Anand Prakashan

Jaisingpura, Aurangabad (M.S.)

Ph: 0240 2400371, Mob.: 99701 48704

www.anandprakashan.in | Email : anandprakashan7@gmail.com



Scanned with OKEN Scanner

ISBN - 978-93-83672-32-5

जलयुक्त शिवार



प्रा. डॉ. डी.बी. तांदुळजेकर



जलयुक्त शिवार

प्रा. डॉ. डी.बी. तांदुळजेकर



Shaurya Publication, Latur

प्रस्तावणा



जलयुक्त शिवार

लेखक :- प्रा. डॉ. डी.बी. तांदुळजेकर

© प्रा. डॉ. डी.बी. तांदुळजेकर

ISBN :- 978-93-83672-32-5

प्रकाशन वर्ष :- 2018

अक्षर जुळवणी :-

अरुण गोदाम

किमत :- 200 रु

प्रकाशक :- शौर्य पब्लिकेशन, लातूर

मुद्रक शौर्य ऑफसेट, लातूर



अनुक्रमणिका

१. प्रस्तावना -----५
२. परभणी जिल्ह्याची माहिती-----४३
३. संशोधन साहित्याचा आढावा-----६४
४. परभणी जिल्ह्यातील पाणलोट क्षेत्र विकास कार्यक्रम-----८६
५. नमुना पाणलोट क्षेत्र विकास प्रकल्पाचे आर्थिक आणि-----१०९

सामाजिक मूल्यमापन

प्रकरण १ ले

प्रस्तावना

जल हे सर्व जीवांच्या उत्पत्तीचे कारक मानले जाते. म्हणून जलाला अमृत मानले जाते. जलांचे संवर्धन व जतन करा म्हणजे जल तुमचे जतन, संवर्धन करेल. या मानवतावादी धारणातून मानवाने जलाशी अनेक पातळ्यांवरून मागील शेकडो वर्षांपासून आपले नाते प्रस्थापित केले आणि त्यामधूनच जलसंस्कृतीचा, जलातून जिजनाकडे बघण्याचा एक विधायक दृष्टीकोन निर्माण झाला. जोपर्यंत मानव या मुलभूत गृहिताशी प्रामाणिक होता तोपर्यंत त्याला पाण्याची अडचण जाणवत नव्हती. परंतु १९ व्या शतकाच्या उत्तरार्धामध्ये पाण्याकडे बघण्याच्या त्याच्या विधायक दृष्टिकोणात बदल होऊ लागला आणि पर्यावरण संतुलन, भूजल संवर्धन, पाण्याचे न्याय वाटप आदीची जागा स्वार्थाने घेतली, तेव्हा पाण्यावरील सार्वभोमत्वाची नवी कल्पना आकार घेऊ लागली, त्यामधून पाण्याचे पावित्र्य, पाण्याचे सांस्कृतिक उत्तरदायित्व आदी संकल्पना पुसल्या गेल्या व पाणी एक व्यापारी मूल्य असलेली वस्तू असून, तिच्या व्यापारी मूल्यामध्ये वाढ कशी होईल आणि भांडवली गुंतवणूक केल्यास आपणास किती लाभ होऊ शकेल यावर माणसाने आपले लक्ष केंद्रित केले त्यामुळे पाण्याशी असलेले सर्व पातळीवरील संबंध धोक्यात आले. ते नव्याने पुन्हा प्रस्थापित करण्याची आज खरी गरज आहे.^१

"तुम्ही देवाचे लाडके आहात म्हणून तुमचा महाराष्ट्र पाण्याच्या बाबतीत सुदैवी आहे, पण त्याची उधळ माधळ करू नका. कारण अजून काही वर्षांनी पाण्याच्या तीव्र टंचाईला तुम्हालाही तोंड द्यावे लागेल. तसे होऊ नये म्हणून आतापासूनच उपाययोजना करा. खबरदारी घ्या. माझ्या राज्यस्थानातला शेतकरी थेंब थेंब पाण्याचे मोल जाणून आहे. अत्यंत गरीब माणूस तुपाचा वापर जेवढ्या काटकसरीने करील तसा तो पाण्याचा वापर करतो. महात्मा गांधी म्हणाले होते की ही भूमी तुमच्या गरजा सहज पूर्ण करू शकते परंतु तुमची लालसा पूर्ण करू शकत नाही. म्हणूनच निसर्गाला ओरबाडू नका आपणही त्यांच्या म्हणण्याप्रमाणे वागले पाहिजे"^२

या विधानावरून पाण्याची उपयुक्तता आणि त्याच्या नियोजनाची आवश्यकता आपल्या लक्षात येते.

भारताला दरवर्षी पावसापासून १८६९ दशलक्ष क्युबिक मीटर (billion cubic metres) पाणी उपलब्धी होते त्यापैकी आपण आपल्या गरजा भागविण्यासाठी ११२३ दशलक्ष क्युबिक मीटर पाण्याचा वापर करतो ज्यामध्ये भूपृष्ठावरील पाणी हे ६९० दशलक्ष क्युबिक मीटर असून भूगर्भातील ४३३ दशलक्ष क्युबिक मीटर त्यामध्ये समाविष्ट असते. इ.स. १९५१ मध्ये भारतात दरडोई ५१७७ घन क्युबिक मीटर पाणी उपलब्ध होते त्यामध्ये घट होऊन इ.स. २००१ साली ते १८२९ घन क्युबिक मीटर झालेले आहे.^३

जगाच्या एकूण लोकसंख्येपैकी १६.७ टक्के लोकसंख्या ही भारताची आहे तर जगाच्या एकूण भू-भागापैकी २.४ टक्के भूभाग हा भारताच्या वाट्याला आलेला आहे.^४ याचा अर्थ



Shaurya Publication,
Kapil Naar, Khadgaon Road,
latur- 413512
contact- 8149668999

ISBN: 978-93-83672-32-5

Rs. 150/-



Vol No. : 4 Issue No : 1 Jan. 2018

ISSN No. : 2350-0972



NIIRJ

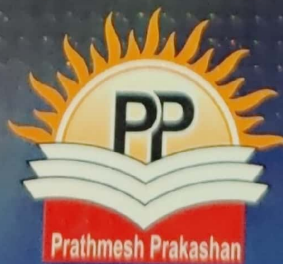
NEW INTERNATIONAL INSISTANT RESEARCH JOURNAL

UGC Approved List No. 63845



◆ Chief Editor ◆

Asst. Prof. A. V. Hingmire



Prathmesh Prakashan, Aurangabad



Scanned with OKEN Scanner

UGC Approved Journal No. 63845



**NEW INTERNATIONAL
INSISTANT RESEARCH JOURNAL**

AIMS & SCOPE

New International Emergent Research Journal is a Quarterly International Journal publishing in multidisciplinary. It is published in All Subject and All Languages.

New International Emergent Research Journal has been started to publish the research paper by great thinkers, intelligentia, scholars, lecturers. Those who have contributed in the field of Higher Education and Research for advanced Knowledge.

Chief Executive Editor
Asst. Prof. A.V. Hingmire

The Editor, Editorial Board and Publisher assume no responsibility for statements and opinions expressed by the Author in this Research Journal

Single Issue Rs. 300/-, Life Membership Rs. 10000/- (Ten Years)
Each Paper Rs. 1200/- Institution Yearly Rs. 1200/-

Instruction Call for papers

The Papers must be an original contribution. The size of the paper should not exceed 2000 to 2500 words in A4 size. in Pagemaker 7.0, Time New Roman (Font size - 12) for English and ISM DVB-tsurekh (Font size 14) font in Marathi and Hindi. along with paper should the title, Authors Name, mailing address and Telephone Nos.

Mode of payment : Payble at State Bank of India Ambajogai Dist. Beed
Account No. : 32887113235, Hingmire A.V.
IFSC Code : SBIN0003403

For Details Information Please visit www.prathmeshpublication.in

www.prathmeshpublication.in



**NEW INTERNATIONAL
INSISTANT RESEARCH JOURNAL**

Chief Executive Editor
Asst. Prof. A.V. Hingmire

ADVISORY BOARD

- ♦ **Dr. Ganesh Shetkar,**
Asst. Professor,
Govt. B.Ed. College, Ambajogai.
Member of Management Council,
Dr. B.A.M.Univ. Aurangabad.
- ♦ **Prof. Dr. Shobhna Joshi,**
Dean, Faculty of Edu.
Head of Dept.(Edu.)
Dr. B.A.M.Univ. Aurangabad.
- ♦ **Dr. B.S. Handibag,**
Dean, (Language Faculty)
Dr. B.A.M.U. Aurangabad.
- ♦ **Dr. V.V. Khandare,**
Dean, (Social Science)
Dr. B.A.M.U. Aurangabad.
- ♦ **Prof.Dr. D.B. Dhaigude,**
Dept. of Maths
Dr. B.A.M.U. Aurangabad.
- ♦ **Dr. D.D. Sawale**
Reader, HOD (Dept. of History)
V.R. Shinde College, Paranda.
Chairman, BOS (History)
Dr. B.A.M.Univ. Aurangabad
- ♦ **Dr. Ganpat Rathod,**
Reader, (Dept. of Hindi)
S.R.T. College, Ambajogai
- ♦ **Dr. Ankush Kadam,**
Asst. Prof. (Dept. of Physics)
Jawahar College, Andur
Member of Academic Council,
President of BAMUCTA A'bad.
- ♦ **Dr. A.Y. Dalvee**
Principal,
Vasundhara Mahavidyalaya,
Ghatnandur, Tq. Ambajogai.
- ♦ **Dr. Haridas Rathod,**
Vice Principal,
Havgiswami Mahavidyalaya,
Udgir, HOD (Dept. of Geo.)
- ♦ **Dr. R.N. Karpe**
Co-ordinator,
N.S.S. Programme,
Dr. B.A.M.U. Univ. Aurangabad.



NEW INTERNATIONAL
INSISTANT RESEARCH JOURNAL

Chief Executive Editor
Asst. Prof. A.V. Hingmire

EDITORIAL BOARD

Sr. No.	Name of Editor	Subject	College / Inst. Name
1	Dr. Giri V.N.	Marathi	Research Student, SRT Univ. Nanded
2	Asst. Prof. Gore M.P.	Marathi	Jaimalhar B.Ed. College, Daskhed Tq. Patoda
3	Shri Rathod L.M.	Hindi	Research Student, Dr.B.A.M.U. Aurangabad
4	Dr. Ingole K.M.	English	Rajiv Gandhi Mahavidyalaya Mukhed Dist. Nanded
5	Miss. Suryavanshi A.G.	English	Research Student, Dr.B.A.M.U. Aurangabad
6	Dr. Vyavhare Kranti	Sanskrit	HOD Dr. BAMU A'bad
7	Asst. Prof. . Tanaji Jadhav	History	HOD. History, Mahatma Phule Nutan Mahavidyalaya Mirajgaon Tq. Karjat
8	Dr. S. Venkata Ratnam	History	Asst. Prof. Dept. of History Nizam College, Hyderabad
9	Asst Prof. Takle R.P.	Geography	SSTE B.Ed. College, Ambajogai Dist. Beed
10	Asst. Prof. Pawar D.R.	Geography	Dnyanjyoti College of Education, Soygaon, Dist. A'bad
11	Dr. A Chandraiah	Public Admn.	Head of Dept. Sardar Patel College, Secundrabad
12	Dr. R.K. Datir	Economics	K.S.K.W. College, Cidco Nashik
13	Asst. Prof. Kulkarni D.B.	Music	Dayanand Arts College, Latur
14	Dr. S.P. Dhake	Defence	HOD. Late M.D. Sisode Bhausahab Arts Com. College Nardana Tq. Sindkhed
15	Dr. Adnak P.S.	Education	Vasandrao Naik B.Ed. College, Jalna
16	Dr. Chavan D.R.	Education	Principal, Om Shanti B.Ed. College, Ambad Dist. Jalna
17	Asst. Prof. Meena Sakalkar	Home Sci.	Mohekar College, Kallamb Dist. Osmanabad

www.prathmeshpublication.in





**NEW INTERNATIONAL
INSISTANT RESEARCH JOURNAL**

CONTENTS

Sr. No.	Title & Name of the Author(s)	Page No.
1	शिवाजी राजे आणि त्यांची आरमारी सत्ता प्रा.भीमराव पांडवे	1
2	Software Maintenance Sonam Dhumal	6
3	CORPORATE GOVERNANCE UNDER THE COMPANIES ACT, 2013: A STUDY IN INDIA Kurlapu Ramakrishna	20
4	अनाथ- एक सामाजिक समस्या जयश्री भावसार	28
5	गोधळ : एक विधीनाट्य अविष्कार प्रा. गुराप्या मा. शेटगार	32
6	TELANGANA STATE NEW INDUSTRIAL POLICY AND DEVELOPMENT SCHEME'S Dileep Jadhav	38
7	MYTH AND MODERN DRAMATIC TECHNIQUES IN THE SELECTED PLAYS OF GIRISH KARNAD -A STUDY A.RAMESH	42
8	श्री. ना.पेंडसे यांच्या कादंबऱ्यातील लोकतत्त्वे प्रा.डॉ.मंजुषा विठ्ठलराव भटकर	47
9	Epistemology of Mahayana Buddhism Yugendar Nathi,	50
10	CULTURAL HEIGHTS OF INDIA – A STUDY ON SPECIAL FEATURES OF SOUTHERN INDIAN CULTURAL LEGACY DR. SHIVANAND YALALA	57
11	DR. AMBEDKAR'S PERSPECTIVES ON EDUCATION GNANADEV CHAPIDI	63
12	TRIBES AND ARMED STRUGGLE IN TELANGANA: A VIEW DHANAVATH SHANTI	68
13	POST-MODERNISM: A STUDY OF ART, ARCHITECTURE AND CULTURE Dr.Parandamulu Ch	74

14	EMPOWERMENT OF WOMEN THROUGH EDUCATION: PROSPECTS AND CHALLENGES M. SHIVALEELA	
15	LAKSHMIPETA MASSACRE: THE RESPONSE FROM MARXIST POLITICS AND DALIT ORGANISATIONS IN ANDHRA PRADESH (ERASTWILE). Dr. B.Sudarshan	81
16	సేవాలాల్ మహారాజ్ చరిత్ర డా॥ ధీరాపత్ మంగమ్మ,	85
17	తెలుగు దినపత్రికలలో క్వాలిటీ సెల్ నిర్మాణం, పనితీరు Structure and Functioning of Quality Cell in Telugu dailies ఎన్. కురుమయ్య,	90
18	The Impact of Information Technology on the Banking Industry (With Special Reference to Nagpur Division) Dr. M. T. Lambat / Sarang R. Alone	95
19	వ్రజాకవి జ్ఞాపకాల మాలిక - కాళోజీ కాహళి డా॥ చవ్వా వెంకటరెడ్డి	103
20	अंबड तालुक्यातील ग्रामीण भागातील मुलींना उच्च माध्यमिक स्तरावर शिक्षण घेतांना येणाऱ्या अडचणींचा अभ्यास पालेकर नारायण गिताराम	108
21	INDIVIDUAL DIFFERENCES IN REASONING ABILITY: COGNITIVE PERSPECTIVES Dr. Sunil Laxman Tribhuvan	114
22	MYTH AND MODERN DRAMATIC TECHNIQUES IN THE SELECTED PLAYS OF GIRISH KARNAD -A STUDY A.RAVINDAR	117
23	Right To Information (RTI) Act And Whistleblower Protection In India Dileep Jadhav	123
24	शाश्वत शेतीसमोरील आव्हाने प्रा.डॉ. डी.बी.तांदुळजेकर	129
25	A Struggle for self identity and human relationships in Anita Desai's 'Cry the peacock Renu Shahuraw Zirmire / Dr. Anar R. Salunke	133
26	खडी गंमत आणि तमाशा प्रयोगरूप तुलना :एक शोध अभ्यास प्रा. मनोज देविदास उज्जैनकर	136
27	Participation of Women in Rural Economy: The Indian Scenario Dr. Subhash S. Savant	140
		145



ORIGINAL ARTICLE

"शाश्वत शेतीसमोरील आव्हाने"

प्रा.डॉ. डी.बी.तांदुळजेकर

अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख,
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, अंबाजोगाई

प्रस्तावना :

डार्विनच्या सिध्दांतानुसार जलातुन जिवाची उत्पत्ती झाली. सजिवसृष्टी निर्माण होणापूर्वी पृथ्वीवर जिवाला आवश्यक असलेले घटक निर्माण झाले. ज्यात जल, जंगल,जमीन हवा, इ. पुढे नदीकाठी मानवी संस्कृती विकसित होत गेली हा मानवी जिवनाच्या इतिहासावरून स्पष्ट होते. जगामध्ये ज्या संस्कृती विकसित झाल्या त्या काळाच्या ओघात नष्ट ही झाल्या पुन्हा नविन संस्कृतीचा उदयही झाला. मानवी समाज विकासाच्या विविध टप्पातुन जात असताना मानवी समाजाने अनेक चढउतार अनुभवलेले आहेत.

भारत आज ज्या विकासाच्या टप्प्यामधुन जात आहे. जगामध्ये भारतीय अर्थव्यवस्था ही सातव्या क्रमांकाची अर्थव्यवस्था आहे. हा विकासाचा वेग कायम राहिला तर २०२२ पर्यंत ती पाचव्या क्रमांकाची अर्थव्यवस्था झाल्याचे आपण पाहणार आहोत. इथपर्यंत येण्यासाठी मागील ७० वर्षांच्या काळात भारतीय अर्थव्यवस्थेची वाटचाल ही जगातील विकसनशील राष्ट्रांना निश्चितच दिशा दर्शक ठरेल. १५ ऑगस्ट १९४७ ला देशाला स्वातंत्र्य मिळाल्यानंतर २६ जानेवारी १९५० पासून देशांत नियोजनाला सुरुवात झाली. देश स्वतंत्र झाला तेव्हा देशाची लोकसंख्या ही ४० कोटी होती. आज ती १२७ कोटी पर्यंत जाऊन पोहचली आहे. आज भारत देश जगामध्ये लोकसंख्येच्या बाबतीत दुसऱ्या क्रमांकाचा देश आहे. जगाच्या एकुण लोकसंख्येपैकी १६.७ टक्के लोकसंख्या ही भारतात वास्तव्यास आहे. तर जगाच्या एकुण भूभागापैकी २.४ टक्के भूभाग हा भारताच्या वाटयाला आलेला आहे. लोकसंख्या अधिक आणि भूभाग कमी असला तरी नैसर्गिक साधन संपत्तीच्या बाबतीत भारत हा जगातील एक संपन्न राष्ट्र आहे. तर दुसऱ्या बाजूला ५० ते ६० कोटी जनता ही निर्धन आहे. यातील जवळजवळ ४० कोटी लोक हे दारिद्र्य रेषेखाली आहेत. म्हणून भारताच्या आणि भारतीय लोकांच्या संदर्भात सधन देशातील निर्धन जनता असा उल्लेख केला जातो.

भारतीय अर्थव्यवस्था कृषीप्रधान अर्थव्यवस्था आहे. भारतीय संस्कृती ही कृषी संस्कृती आहे. भारतीय समाज हा कृषक समाज आहे. आजही देशातील जवळजवळ ५० ते ६० टक्के लोक हे शेती क्षेत्राशी निगडित आहेत. हा टक्का जसजसा कमी होत जाईल तसतसा विकासाचा पुढचा टप्पा भारतीय अर्थव्यवस्थेने गाठलेला असेल.

शेती व्यवसायासमोरील आव्हाने :

आज नियोजन कारांच्या समोर दोन आव्हाने आहेत. एक म्हणजे शेतीवरचा ताण कमी करणे आणि शेतीची गुणात्मकता वाढविणे, आणि दुसरे म्हणजे उद्योग, सेवा क्षेत्रामध्ये नवनवीन संधी निर्माण करणे. शेतीचा गुणात्मक दर्जा वाढविण्यासाठी देशपातळीवर आज ते ४० टक्के सिंचनाचे प्रमाण आहे. सिंचन क्षमता वाढविण्यासाठी 'माथा ते पायथा', जलयुक्त शिवाराच्या माध्यमातुन सिंचनाचे प्रमाण वाढविणे आणि दुसऱ्या बाजूला शेती मातीचे बिघडत चाललेले आरोग्य सुधारणे. वैज्ञानिक पध्दतीने पाण्याचा वापर, खते, किटकनाशके याचा शेतीसाठी केलेल्या भडीमारातून हवा, पाणी, मातीवर झालेला प्रतिकूल परीणाम शेती



मातीचा घटती उत्पादकता, नदयांचे आणि भुजलाचे वाढते प्रदुषण, हवेमधील कार्बनडॉयऑक्साईडचे वाढते प्रमाण, पर्यावरणातील बदल ही आपल्या समोरील आव्हाने आहेत. ही आव्हाने समर्थपणे पेलण्यासाठी विज्ञान आणि तंत्रज्ञानाच्या माध्यमातून पर्यावरण पूरक शेतीचा वापर करणे आज आवश्यक झालेले आहे.

२१ व्या शतकामध्ये जगभर शेतीमध्ये नवर्नाविन प्रयोग करून उत्पादकता वाढविण्याचा प्रयत्न केला जात आहे. भारतही त्याला अपवाद नाही. शेतीमध्ये वारेमाप आदानाचा वापर केल्यामुळे तीची उत्पादकता कमी तर होणार नाही ना, असा जेव्हा प्रश्न निर्माण झाला, तेव्हा आपण शाश्वत शेती करण्याचा विचार करू लागलो.

शाश्वत शेतीसाठी उपाययोजना :

१. शाश्वत शेती, उदरनिर्वाहा ऐवजी व्यावसायिक शेती याकडे वळत असताना आपणाला काही खबरदारी घेणे आवश्यक आहे. शेतीसाठी वापरली जाणारी आदाने यामध्ये पाणी, बी-बीयाणे, खते, किटकनाशके यांचा मेळ बसवत असताना त्याचे काही प्रतिकूल परिणाम तर होणार नाहीत ना, याचीही काळजी घेणे आवश्यक आहे. मातीमध्ये विविध प्रकारचे जे १८ घटक असतात. त्यातील कोणते घटक मातीमध्ये किती प्रमाणात उपलब्ध आहेत, हे मातीपरीक्षण केल्यानंतर लक्षात येते. याचा अर्थ शेती माती आरोग्य काय आहे, हे लक्षात आल्यानंतर कोणत्या घटकाची किती मात्रा शेतीला आवश्यक आहे, त्यानुसार नियोजन केले तर शेतीची उत्पादकता वाढविण्यास मदत होते.
२. शेती मातीचे परीक्षण केल्यानंतर पिकाची निवड, रचना करून त्याप्रमाणे दुर्मीळ अशा पाण्याचे नियोजन करणे हे ही तीतकेच आवश्यक आहे. ज्या क्षेत्रामध्ये ज्या पिकांचे नियोजन केलेले आहे, त्या भागामध्ये पावसाचे प्रमाण काय आहे, पाण्याची उपलब्धता कशी आहे आणि आपण सिंचनाचे कोणते तंत्र वापरतो, याचे नियोजन हा माती परीक्षणानंतरचा शेती उत्पादन वाढीचा दुसरा टप्पा ठरतो.
३. माती आणि पाण्याचे नियोजन केल्यानंतर खते, किटकनाशके यांचा वापरही शेती नियोजनाचा तीसरा टप्पा ठरतो. त्यासाठी हवामानामध्ये होणारा बदल आणि संभाव्य धोके विचारात घेऊन तंत्रज्ञाच्या मार्गदर्शनाखाली किटकनाशकाची फवारणी करून घेणे गरजेचे आहे. केवळ शेतीसाठी जमीन, पाणी, बी-बीयाने, खते, किटकनाशके, अवजारे इत्यादींचा विचार करून शेती ही व्यवसायिक होत नसते तर पीक कापणी पासून ते बाजारात अंतीम उपभोक्त्यापर्यंत वस्तू घेवून जाण्यासाठी प्रभावी यंत्रणा निर्माण करतो ही तितकेच आवश्यक आहे. या प्रभावी यंत्रणेेशिवाय शेती मालाला रास्त योग्य किंमत ही प्राप्त होत नसते.
४. शेतीमाल हा एकतर नाशिवंत असतो आणि फारतर एखादे वर्ष तो टिकणारा असतो. शेती मालातील विविध पिकांचे आयुष्य हे एक दिवस ते एक वर्ष कालावधीचे असते. नाशिवंत किंवा कमी नाशिवंत अशी आपण शेती मातीची विभागणी करू शकतो. भाजीपाला नाशिवंत तर अन्नधान्य कमी नाशिवंत असते. बाजारपेठेमध्ये शेती मालाला योग्य किंमत मिळण्यासाठी देशामध्ये एक प्रभावी यंत्रणा निर्माण करत असताना, शेती मालाच्या स्वरूपानुसार शितगृह आणि गोडाऊनची निर्मिती ही शेतीसाठी एक प्रभावी यंत्रणेचा भाग असेल, यासाठी शासन व्यवस्थेने प्रभाविपणे आणि प्रमाणिकपणे काम करणे हे शेती विकासासाठी आवश्यक आहे. देशामध्ये अन्नधान्याचे, भाजी पाल्याचे, दुधाचे उत्पादन मोठ्या प्रमाणावर वाढलेले आहे. ते साठविण्यासाठी गोदाम, शितगृहांची यंत्रणा उपलब्ध नसल्याने शेती मालाला बाजारात योग्य किंमत मिळत नाही. भविष्यामध्ये ती व्यवस्था शासन व्यवस्थेकडून निर्माण होईल अशी अपेक्षा करण्यास हरकत नाही.
५. शेती मालाला योग्य किंमत मिळवून देण्यासाठी शासन स्तरावर शेतीमाल बाजारात सरकारने हस्तक्षेप करणे आवश्यक आहे. आज शेतीमाल बाजारामध्ये 'हमी भाव' जाहिर केला जातो ती हमी भाव यंत्रणा उत्पादन खर्चाशी निगडीत यंत्रणा निर्माण करणे आवश्यक आहे. नुकतेच सरकारने चालू अंदाज पत्रकामध्ये शेतीमालाला उत्पादन खर्चाच्या दीडपट हमी भाव देणार असल्याचे घोषित केले आहे. ही एक शेतकऱ्यासाठी जमेची बाजू आहे.

६. शेती मालाचा आज जी हंगामी शेतीमाल विक्रीची व्यवस्था आहे. तिच्या जागी शेतकऱ्यांची स्वतःची सक्षम यंत्रणा सहकार तत्वावर निर्माण होणे ही आवश्यक आहे. शेतीमाल बाजार यंत्रणेमध्ये जी व्यापारी वर्गाची घूसखोरी आहे, ती जर कमी केली तर शेतकऱ्यांना आपल्या मालाचा योग्य मोंबदला मिळण्यास मदत होईल. शेतकरी ते ग्राहक आणि शेतकरी - उद्योग - ग्राहक ही जी साखळी आहे, त्यामध्ये संस्थात्मक सुधारणा करणे शक्य आहे.
७. ग्रामिण भागातील बाजार समित्यांचा संख्यात्मक आणि गुणात्मक दर्जा उंचावण्यासाठी शासनाने या बाजारसमित्यांना पायाभूत संरचना निर्माण केल्या तर शेतमालाला शास्वत किंमत प्राप्त होण्यास मदत होवू शकते. आलीकडे भारत सरकारने २२०००/- ग्रामीण बाजार समित्यांच्या सुधारणेसाठी भारत सरकारने ५०० कोटी रूपयाची तरतूद केली, जी जमेची बाजू आहे बाजार समित्यांचा विकास करत असताना.
८. शेतकऱ्यांच्या सहकारी संस्था निर्माण करून बाजारपेठेपर्यंत समुहाने आपापला माल एकत्र करून त्याची सांगड वाहतूकीशी जोडली तर वाहतूक खर्चांमध्ये कपात होवू शकते. शेतकरी वर्गाची संख्या आणि शेतीमालाची विविधता विचारात घेता आवश्यकतेनुसार शेतकऱ्यांनीही पूढे यंणे आवश्यक असून गावा-गावा मध्ये सहकारी तत्वावर समुह निर्माण करून त्या समुहाला स्वतःकडे आकर्षित करणे ही आवश्यक आहे. असे झाले तर निश्चितच शेतीमाल बाजारपेठेपर्यंत आणण्याचा खर्च कमी करणे शक्य होईल.
९. शेतीमाल, त्याचा उत्पादन खर्च, बाजारातील मागणी आणि पूरवठा, त्याची योग्य किंमत ठरविणे हा गुतागुतीचा विषय आहे. प्रत्यक्ष व्यवहारीक, आणि अनुभवावर आधारीत शेतकरी आणि ग्राहक यांना दोघानाही फायदेशीर ठरेल अशी यंत्रणा निर्माण करणे गरजेचे. आज एका विशिष्ट कालखंडात टमाटे, कोथींबीर, कांदे, बटाटे यांच्या बाजारपेठेच्या किंमतीमध्ये कमालीचा चढउतार पाहवयास मिळतो आणि अशा वेळी कधी शेतकरी तर कधी उपभोक्ता रस्त्यावर येतो. याला उपाय म्हणून प्रदेशा-प्रदेशानुसार देशपातळीवर शास्त्रीय पध्दतीने आणि बाजारपेठेचा विचार करून पीकरचना निर्माण करणे आणि त्यामध्ये शेतकऱ्यांना सामावून घेणे आवश्यक आहे, जेणेकरून शेतकरी आणि ग्राहक या दोघांचे हीत हे साध्य केले जाईल.
१०. शेतीमालाच्या आयात-निर्यात विषयक धोरणाचा दरवर्षी आढावा घेवून WTO च्या नियमावलीची बाधा येणार नाही आणि आंतरराष्ट्रीय करार जे बंधनकारक आहेत ते शाबूत ठेवून ज्या ज्या कृषीमालाची आयात निर्यात आणि त्यावरील बंधने कायद्याच्या चौकटीत ठेवून आवश्यक आहे. WTO च्या कायदानुसार आपण शेतीला जी अनुदाने देवू शकतो, ती देत असताना परदेशी शेतीमालाला जकाती लादल्यानंतर उत्तर म्हणून प्रतिक्रिया निर्यातक देशांकडून लादली जाणार तर नाहीत, याचीही काळजी घेणे आवश्यक आहे.
११. आज जगामध्ये तांदळाच्या उत्पादनामध्ये भारत दुसऱ्या क्रमांकावर आहे. तूर दाळ उत्पादनही सरप्लस झाले आहे. अशा परिस्थितीमध्ये साखरेवर १००% आयात शुल्क लादली असता देशातील साखर उद्योगाला स्थिरता येत असताना तांदुळ, तूर उत्पादनावर आयातक देशाने आयात शुल्क आकारले तर त्यातून निर्माण होणाऱ्या प्रश्नास जबाबदार कोण? असा प्रश्न निर्माण होतो. शेतीमाल त्याची गुणवत्ता, टिकावूपणा, बाजार, आयात-निर्यात, आंतरराष्ट्रीय करार, जागतीकीकरणाच्या युगामध्ये या आणि अशा शेतीमाल विषयक उत्पादन किंमत विषयक धोरण ठरविण्यापूर्वी देश आणि प्राप्त प्रदेशानुसार शेतीमाल उत्पादनाचे पॅटर्न जर आपण निर्माण करू शकलो तर शेतीच्या प्रश्नांची दाहकता निश्चितच कमी होण्यास मदत होईल.
१२. अल्पकालावधीचा विचार केला असता आधारभूत किंमत, शेतकरी कर्जमाफी, शेती अनुदाने या उपाययोजना होवू शकतात. परंतू, दिर्घकाळाचा विचार करत आसताना, हे काही कायमचे उपाय होवू शकत नाहीत. शेती आणि शेतकरी यांच्या सर्वांगीण विकासासाठी शेतीशी संबंधीत पायाभूत सेवा सुविधांचा बाजाराचा, आणि नवनवीन तंत्रज्ञान आत्मसात करून त्याचा वापर करणे ही भविष्यातील गरज असणार आहे. यासाठी शासन व्यवस्था आणि शेती उद्योगाचे जाणकार, शेतकरी यांनी एकत्र उत्पादक आणि उपभोक्ता यांचे एकात्मिक कल्याण डोळ्यासमोर ठेवून नियोजन करणे आवश्यक आहे.

ISSN No. : 2350-0972

Publish Research Articles

International Level Multidisciplinary Research Journal Registered
& Reconized Higher Education for All Subject & All Languages

NEW INTERNATIONAL VALUABLE RESEARCH JOURNAL

For all Subject (All Language)

Quarterly published

Respected Sir/ Madam,

We invite original unpublished research paper for all subject.

So your Research Paper will submuted on below Address

Address

Asst. Prof. A. V. Hingmire

Chatrapati Nagar, Ring Road, Ambajogai,

Tq. Ambajogai, Dist. Beed, Pin 431517 (Maharashtra)

E-mail ID : prathmeshpublication@gmail.com, appahingmire@gmail.com

Contact No : 9702272233 9421932292

Visit us : prathmeshpublication.in



Peer Reviewed

ISSN 2319-8648

Indexed (SJIF)

Impact Factor - 7.139

Current Global Reviewer

**UGC Approved International Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages**



**Editor in Chief
Mr. Arun B. Godam**



CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly

Issue XI Vol I , JULY 2017

UGC Approved

Sr. No. 64310

ISSN : 2319 - 8648

Impact Factor : 7.139

Current Global Reviewer

UGC Approved International Research
Refereed Multidiciplanary Journal

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

ISSUE XI Volume I (Half Yearly) JULY 2017

Editorial Office Address :

Khadgaon Road, Kapil Nagar,
Latur, Dist. Latur 413512
(M.S.) India

Contact- 8149668999

Email-

hitechresearch11@gmail.com



Publisher

Shaury Publication

Kapil Nagar, Latur
Contact- 8149668999

EXECUTIVE EDITORS

Dr. ChittaRanjan Panda
P.G. Deptt. Ofodia
Shailabala Women's
Autonomous College
Cuttack – (Orissa)

Dr. U.T. Gaikwad
Dept. of Geography,
Smt. S. D. M. College
Latur, Dist. Latur (M.S.)

MaimanatJahanAra
Head, Dept of Political Science,
Sir Sayyed College,
Aurangabad, Dist. Aurangabad

Dr M.U. Yusuf
Dept of Commerce,
Sir Sayyed College,
Auranabad, Dist. Aurangabad

Dr. Hanumant Mane
R. Guide & Head,
Dept. of Marathi,
Shivchatrapati College,
Kalam, Dist. Osmanabad(M.S.)

B.J. Hirve
Dept. of botany
VasantMahavidyalaya,
Kaij, Dist. Beed. (M.S.)

Dr. PrainDiddeshwarShete
Dept. of Zoology,
Maharashtra
UdaygiriMahavidyalaya,
Udgir,
Dist. Latur

DrU.V.Panchal
H.O.D, Dept of Commerce,
Deogiri College,
Aurangabad, Dist. Aurangabad

Pro. S.B. Karande
Dept. of Economics,
ShriBhausahabVartak College,
Borivali (W), Dist. Mumbai.

Dr. N.J. Waghmare
Research Guide & Head,
Dept. of Pali,
Govt. Sanatketar College,
Shivani, (M.P.)

www.rjournals.co.in

Shaurya Publication, Latur | www.rjournals.co.in | Email-hitechresearch11@gmail.com



Index

Sr. No.	Article Title	Author	Page No.
1	Phytochemical Analysis Of Roots Of <i>Asparagus racemosus</i>	Hirve Babasaheb Jalindarrao	1
2	Make In India: Challenges And Opportunities	Prof. Naval D. Patil	4
3	The Most Probable number (MPN) and index of borewell water From Jalna District of Maharashtra.	Kagne S.R. , Puri S.S.	7
4	The Performance Of Routing Protocols For Cellular Ad-Hoc Networks	Prof. Mane V. D.	11
5	Synthesis And Antimicrobial Activity Of 3-Aryl Substituted 5-Bromo -7-Ethoxy -1, 2, 4-Triazolo-[3, 4-B] Benzothiazoles By Oxidative Cyclisation	Bhagat.T.M.	15
6	The Theme of Casteism in the Recent Marathi Cinema with special reference to the movies <i>Fandry, Sairat and Khwada</i> .	Shuddhodhan P. Kamble	21
7	Theme of Moral Degradation in 'Midnight Woman'	Dr. KaradPrakash Desai	24
8	Organic Farming & Sustainable Agriculture Development	Mr .Pramod B. Deshmukh.	27
9	The Role of Values and Ethical Analysis of Higher Education in India.	Dr. B. K. Shep	32
10	Monthly Rainfall in Nanded District	Dr. Vinkar V.N.	36
11	Study Of The School Students In Respect Of Their Fitness, Academic Achievements, And Attitude Towards Physical Education And Sports	Dr. Sunil Kumar	38
12	Comparative Study Of Diurnal Variation In Selected Physical Fitness Components Of Baseball Players.	Prof. PradeepKhedkar	42
13	Effects Of Pranayamas On Selected Physiological Variables Of College Students	Dr. KalyanMaldhure	47
14	A Comparative Study Of Locus Of Control Among Sports Achievers, Non-Achievers, Non-Participant And Female Tribal	Prof. Sugandh Band	50

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly

Issue XI Vol 1 , JULY 2017

UGC Approved

Sr. No. 64310

ISSN : 2319 - 8648

Impact Factor : 7.139

15	A Review of Sociology of Education: Concept and Origin	Dr. Ramesh D. Rathod	54
16	Role Of Women In Contemporary World	Dr. AnjuBala Sharma	58
17	The Role of Information & Communication Technology (ICT) in Higher Education in India.	Dr. Gaikwad V.B.	63
18	Programmes And Strategies For Attaining Clean And Green India	DeelipkumarNamdevraoJadhav	67
19	Ancient Indian costume in the period of Mauryan and Sunga (321 – 72 B. C.)	Mrs. Rekha B. Lonikar	70
20	Twentieth-century English literature: An Overview	More J. G.	73
21	"Evaluative Study of contaminated soil and Bioremediation Treatment in Marathwada"	Dr. Sanjay Kale	76
22	The Climate Of The Solapur District	Dr. Gavakare R. B.	79
23	Agricultural Development And Crop Pattern In PurandharTahasil	Dr.Dhanushwar R. S.	84
24	A Survey of Educational Thoughts in India	Dr. D.B. Tanduljekar	87





A Survey of Educational Thoughts in India

Dr. D.B. Tanduljekar

H.O.D. Economics, Yashwantrao Chavan College, Ambajogai , Dist Beed.

Origin and Development

The Indian educational thought evolved an all-encompassing view of life and recognized the spiritual and the material. The spiritual emancipation remained the ultimate goal of life and God realization remained the highest objective of education and life. Bhruhu after concentrations on his thoughts spoke of successive layers of revelation; they are Arna Brahma (body as the reality), prana Brahma (life as reality) Mana Brahma (mind as reality), the Gyana Brahma (Wisdom as Reality) and finally Ananda Brahma or (Bliss as Reality). The mandukya Upanishad held that man lived in four states of consciousness; Jagruti or the wakeful, Swapana or the dreaming, Susupti or the perfect sleepy, and Turya or the feature-less which is beyond the first three. Other Upanishads identified various layers of consciousness and knots of knowledge and being.

Indian theories of knowledge: The great Indian scripture the Bhagavad-Gita furthered Indian theories of knowledge. Life was divided into four stages at least theoretically; they are Brahmacharya, Grahyastha, Banaprastha and Sanyasa. Through the universal and the historical applications of these four stages were doubtful these were definitely put to practice by at least the seekers. Indians also distinguished Vidya, craftsmanship and skill, from Gyana or knowledge. Indian Philosophers Gautam Buddha and Mahavir Jain enriched the Indian educational tradition and heritage. Buddha in particular established the cause and effect theory. World is full of sorrow and is anitya (transitory). Kamana or desire is the cause of sorrow. Removal of cause i.e. Kamana would lead them to removal of sorrow, the effect. The cause and effect co-relation was established. Logic and the system of knowledge were now scaling new heights. Buddha also talked of layers of mind and consciousness. Gyan, Vigyan, Pragyan and Paramita were the states of mind and consciousness. Buddha evolved a rational theory of knowledge admitting various aspects of logic and wisdom. Buddhism indicated twelve links leading to causation of the world; Avodua (ignorance), Sanskaras (instincts and impressions), BOGUANA (instincts and impressions), Npmarupa (body and mind), Trishna (sense and sense experience and desire) and the desire to be born again and again were the important ones.

Mahavir Jain similarly evolved a comprehensive concept of reality recognizing various categories such as time, space, matter, conditions of rest and conditions of movement. Buddhism led to the establishment of sanghas and viharas which were communities of teachers and students. Secular, religious and meta—physical breadths of knowledge were imparted in these communities. The Vedic and the Jain traditions of knowledge were followed by the Brahmin traditions from 4th century A.D. till the advent of the modern system. Great individual Brahmin teachers established their own schools of thought in meta-physics. Meta-physics, logic, Astronomy and all other inter-kinked subjects were taught in these schools. A large number of non-Brahmin scholars also enriched the intellectual heritage of India. Various schools of Indian philosophy gradually evolved. Logical traditions were refined. In course of time many of these works were elevated to the status of authority and intellectual exercise got confined to writing commentaries on these and commentaries on commentaries. The advent of Islam brought fresh air to a limited



extent. This freshness led to mutual influence and enrichment of educational thought. Madrassa system of primary education became spread among the Muslim population. Village schools supported by community also became a common feature. In spite of social exclusion of women and low caste from the primary schools, rudimentary education at least was available to one section of the society, the Brahmanism tradition of the rich and the elite continued.

Idea of Ancient Universities vs. Charter act of 1813

Taxsila, Nalanda, Vikramsila and Varanasi were great learning centers. Monasteries of various communities or schools of philosophy and religion survived but had no luster. British government established the Calcutta madras and the Banaras Sanskrit College in order to understand the Hindu and Muslim law to administer the country. The charter act of 1813 mandated an annual expenditure of one lakh rupees for promotion of education in India. The company gradually needed Indians to be engaged in the company service and in the subordinate cadre. This allocation of fund under charter act set in motion the great debate regarding educational system. The first controversy was whether education should be given to a limited number in higher branches of learning or elementary education should be imparted to the masses. Secondly, whether classical languages like Sanskrit, Arabic and Persian and other oriental languages should be the medium of instruction or English should be the medium of instruction. Thirdly, should education be the responsibility of the state or be left to the efforts of individual. These three remained the three major points of contention. The orient lists advocated Sanskrit and Arabic medium of instruction and the Anglicist advocated the English medium of instruction. Finally Macaulay's point of view prevailed. They wanted to create a class of people, who would be Indian in blood and color but English in taste, in opinion, morals and intellect.

Wood's Dispatch

In 1854 Wood's Dispatch provided further boost to education. As a follow-up grant—in aid system for educational institutions was initiated, a department of public instruction was created and finally the three presidency universities were established. Format system of education was given a push and university system was inaugurated. The Human Commission in 1880's advised the government to curtail its educational activities and asked it to encourage private enterprise. It recommended that primary and secondary education should be left to local self government. Though the English wanted education to create only clerks to fill the lower rungs of services, yet it created a small band of elites who became the harbinger of nationalist education in India.

Nationalist Views Regarding Education

Indian Nationalist movement advocated for national education. The concept of national education in India includes the following:

1. Educational system and thought on nationalist lines.
 2. National control over system of education.
 3. A system of education with the objective of serving national interest.
 4. Reversing the present (of the colonial period) system which serves the imperialist interest perpetuates service attitude and promotes mediocrity.
 5. To base the educational system on the roots and the cultural ethos of a society.
- Nationalist education is not necessarily revivalist, reactionary or rightist. It does not reject modernity, industrial revolution, liberalism and even capitalism. It emphasizes that each

nation having a distinct socio-political, religious and cultural identity must evolve a system of education based on its own root but draw freely from all other systems of thought.

Raja Rammohan Ray and Vedanta

The important trends of nationalist education can be reconstructed on the basis of a survey of select thinkers. Christian missionaries had established a number of schools to spread Christianity. There were few schools and colleges run by the government. These created awareness in favor of spread of modern education. Raja Rammohan Ray (1774-1833) was one of the earnest Indian thinkers whose reflection on education is quite enriching. He strongly believed that the root cause of Indian decadence was the absence of education and national thinking. To him an intellectual awakening is to be brought about by rational and liberal thought based on reason and judgment. With this belief he advocated study of English language and western sciences. He was not in favor of abolition of oriental studies and Sanskrit learning. He wanted a system of education which would promote self reliance and stimulate scientific enquiry. He established the Hindu college at Calcutta. It was a secular educational institution free from dogmas and biases. He was the most prominent advocate of new initiatives of education and promotion of Western ideas and science to liberate the mind of Indians. He equally emphasized the education of the masses, promotion of vernaculars, freedom of press, social reform like abolition of Sati and child marriage and promotion of democratic rights. Rammohan Roy had established the Brahmo Samaj, Hindu reformist movements. He was the doyen of modern Indian education thought. He was at once innovative, synthetic and an eager enthusiast to carry forward the best of Indian traditions to modern times.

Arya Samaj and Swami Dayanand Saraswati

Swami Dayanand Saraswati (1824-1883) was equally a great reformer and an educator. He established the Arya Samaj movement. Though to an extent it was reactionary against the influence of Islam and Christianity, yet it was modern in many ways. It was opposed to the corrupt irrational practices of the Hindus. It supported reforming the Hindu society and was intense in its national appeal. Dayananda Saraswati while emphasizing the essence of the Vedic spirit was prepared to accept western science and technology. He was in favor of moral and religious education and was a great advocate of character building. In his system of education Sanskrit held a very high position and the goal of education was nation building. He wanted to administer the pill of reason and doubt, to enable the people to think for themselves and to realize the legacy of their past. The Arya Samaj started the Dayananda Anglo-Vedic or the DAV education movement. The DAV society established a great Gurukul in Kangri and a number of schools and colleges in northwest and northern India. Today the entire country is dotted with DAV schools and colleges. The main objective of the movement was to synthesize the essence of Aryan tradition and western educational system. Dayananda thus pioneered the renaissance movement in Indian education. He still continues to inspire the Indians. Swami Dayanand is dubbed as a revivalist, but he was much more than that.

Spiritualism of Swami Vivekananda

Swami Vivekananda (1863-1902) had a tremendous influence on modern India. From Tilak to Sir Aurobindo, from Gandhi to Subhas Bose, all generations of nationalist thinker activists were illumined with the light of his knowledge. He was a great social reformer, philosopher and the torch bearer of Indian renaissance movement. He was a monist in the line of the great 'Sanjarcarya'. He rejected utilitarianism, individualism and materialism of the west and preached individual salvation and universal divine realization.

His concept of di-vinity was humane. Service to man is service to God was whole heartedly accepted by him. He rejected the su-premacy of the priest. He evolved an Indian system of education. Vivekananda wrote "No perfection is going to be attained. You are already free and perfect. What are these ideas of religion and God and searching for the hereafter...? It is God within your own self that is propel-ling you to seek for him, to realize him... He for whom you have been seeking the entire world overis near-est of the near, is your own self, the reality of your life, body and soul. That is our own nature. Assert it. Not to become pure you are pure already. You are not to be perfect, you are that already. "Thus according to Vivekananda, Each soul is potentially divine The goal is to manifest this divinity within, by controlling nature, ex-ternal and internal."(pani1986)

The Idea of Santiniketan

Rabindranath Tagore (1861-1941), the Nobel lau-reate poet was also a great Indian thinker. Though he had no institutional education' he a centre of Santiniketan, a great university, which is still hilosophi-excellence. He had not propounded any new P cal system and yet had a great understanding of life and man. His ideas of education are consistent with his ide-als of life It is the duty of every human being to master, at least some extent, not only the language of intellect, but also that personality which is the language of art. It is a great world o f reality for man, vast and profound, this growing of this own creative nature. This is the worlds of Art". "it is the vast and infinite, the bhouma that one should seek in life". As in education so in life Rabindranath Tagore had sought bliss. He writes The highest mission of education is to help us realize the inner principle of unity of knowledge and all the activities of our social and spiritual being. Thus for Tagore true education meant the realization of unity and harmony of the human life with all existence. Tagore sees education as the harmo-nization of human nature with universal nature. In other words Tagore views education as the process of evol-v-ing new patterns of life culminating in the realization of universal man. (pani1988)

Spiritualism and Nationalism of Sri Aurobindo

Sri Aurobindo Ghosh, another important thinker, was a scholar extra —ordinary, an accomplished English poet, a fire band political leader and a philosopher of evo-lution and Gnostic being. Besides, he was a sensitive literary critic, a teacher and a great yogi. Aurobindo is associated with the extremist faction of the Indian na-tional congress. Sri Aurobindo's theory of education was twofold — nationalist and spiritual. His chief argument for nationalism in India was that freedom was neither based on bad governance nor on non- representations of Indi-ans in the Government. For him the formations of differ-ent nations are based on variety of nationalistic charac-ters which in turn are the expressions of the principles of variety of the universalization of spirit. Thus each nation needs to be free. He extended the principle of education and held that each nation needs to evolve its own nation-alist education policy. Variation in culture, society and needs demands each nation to evolve its own educa-tional philosophy, practice and system.

Gandhian Self Reliance

Gandhi (Mohandas Karamchand Gandhi) was the most dominant personality of the 20th century India. He was the chief architect of Indian's struggle for free-dom. He was not only a powerful political activist of life and developed blue prints for the future mankind and in-dependent India. Education formed an important com ponent of his writing for more than half a century Gandhi was no armchair thinker. He put great theories toprac-tice and theorized his own innovative practices. Gandhi was not a system builder, but a theory of education emerges out of his writings and experiments. Gandhain philosophy was based on

the supreme value of 'Truth' Truth occupies a central position in his life and he always gave the highest priority to truth in all walks of his life. He followed the path of truth throughout his life in tune with the Hindu scripture's dictum that truth is the highest duty (Satyammasti paramodharmah) Hegrew more ethical and relative as he relied upon it as a principle of judgment and activity (cenker 1989).

Gandhi applied his idea of truth to social and political aspects at all levels in the later part of his life. Truth rules out prejudice, evasion, secrecy and deception as well as exaggeration, suppression or modification of reality. Truth also implies mutual tolerance and avoidance of dogmatism and bitterness, for truth as discerned by man is always relative and fragmentary (Dhanwan 1990). The contribution of Gandhi as an educator and as an essayist on education is indeed manifold

Reformists in Modern Maharashtra

Apart from the above thinkers, Ranade, Gopal Krishna Gokhle, Swami Sradhananda, Iswar Chandra Vidyasagar and host of others contributed to the great debate on Indian education. Issues like break with the past, emphasis on science and technology, English versus mother tongue or English versus Persian as the most suitable mediums of instruction, the rote method of learning, co-education versus gender segregation in school, private versus state control over education and affiliation versus teaching universities were hotly debated in India. Besides these social issues, were also debated. Education always formed a core issue for the nationalists and the imperialists in India.

Contemporary Situation

The above analysis on the educational thoughts and ideals of some western and Indian thinkers would remain incomplete without drawing a broad picture of the contemporary challenges of education. The contemporary challenges of education are both India specific and international. The industrial Revolution, the space revolution, the chip revolution, nanotechnology, robotics and convergence technology is constantly changes the way of human thinking and living As a consequence education has become more dynamic and changing carry fast co structure curriculum, technology. pedagogy and even semantics The concept of progress is becoming the most important governing factor Hedonism is taking new forms in the contemporary world Progress and improvements in social and material conditions. development in science and technology and economic life have now come to shape education

Conclusion :

Education is today consideration to be the most e statements of social re-engineering and empow--rment of people by imparting knowledge and skills and creating an informed citizen capable of setting agenda for good governance great progress and harmonious socio economic We. Education has a so become the most tool of creating inclusive s.; eties and inclusive ;4 Education can alone 'econstruct the world and ire rriank:nd_ The destiny of mankind is shaped in the class rooms. Education determines the level of prosper-ity_ -a a security of the people. Education alone ca- give the right direction to science and technology. a a -g t' af.a —.4: a rd of living of the entire mankind is the E.- cenda cf education today. Exclusion on the basic of socic-ecciomc status gender and faith has to be ad-tressed through education. Empowerment of the ex-: ,te: a—j creation of an inclusive mankind can only be achieves through education. It will be of great significance for Indian aostemia to stick to its ancient tradition.



References :

1. Aby, Fredrich (1952). Development of modern education. New York. Practice Hall. 319
2. Pani S_P. and Pattnaik, S.K. (2006). Vivekananda. Aurobindo and Gandhi on education, New Delhi: Anmol Publication, 26.
3. Gosh, Aurobindo. (1972). Sri Aurobindo Birth Centenary Library/. SABCL. Vol 8 SABDA Pondichhery. 634
4. Gandhi M. K. (1927). My Experiments with Truths. Navjeevan Trust, New Delhi
5. Cenkner. William (1989) The Hindu Personality in Education.
6. Dhawan Gopinath (1990) The philosophy of Mahatma Gandhi. New Delhi, The Gandhi Peace Foundation. 58

Current Global Reviewer

ISSN 2319-8648

Peer Reviewed

Impact Factor - 7.139

UGC Approved Journal
Sr. No. 64310



ISSN 2319-8648



Edited By
Arun B. Godam
Latur, Dist. Latur-413512
(Maharashtra, India)
Mob. 8149668999



Publisher
Shaurya Publication

www.rjournals.co.in



Peer Reviewed

ISSN 2319-8648

Indexed (SJIF)

Impact Factor - 7.139

Current Global Reviewer

**UGC Approved International Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages**



**Editor in Chief
Mr. Arun B. Godam**



CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly
Issue X Vol II, Jan. 2017

UGC Approved
Sr. No. 64310

ISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 7.139

Current Global Reviewer

UGC Approved International Research
Refereed Multidisciplinary Journal

Editor In Chief
Mr. Arun B. Godam

ISSUE X Volume II (Half Yearly)
Published on Jan. 2017

Editorial Office Address :

Khadgaon Road, Kapil Nagar, Latur,
Dist. Latur 413512 (M.S.) India

Contact- 8149668999

Email-

hitechresearch11@gmail.com



Publisher

**Shaurya
Publication**

Kapil Nagar, Latur
Contact- 8149668999

Rs. 400/-

EXECUTIVE EDITORS

Dr. Chittaranjan Panda
P.G. Deptt. Of Odia
Shailabala Women's Autonomous
College, Cuttack - (Orissa)

Dr. U.T. Gaikwad
Dept. of Geography,
- Smt. S. D. M. College
Latur, Dist. Latur (M.S.)

Maimanat Jahan Ara
Head, Dept of Political Science,
Sir Sayyed College,
Aurangabad, Dist. Aurangabad

Dr M.U. Yusuf
Dept of Commerce,
Sir Sayyed College,
Aurangabad, Dist. Aurangabad

Dr. Hanumant Mane
R.Guide & Head,
Dept. of Marathi,
Shivchatrapati College,
Kalam, Dist. Osmanabad (M.S.)

B.J. Hirve
Dept. of botany
Vasant Mahavidyalaya,
Kaij, Dist. Beed. (M.S.)

Dr. Pravin Diddeshwar Shete
Dept. of Zoology, Maharashtra
Udaygiri Mahavidyalaya, Udgir,
Dist. Latur

Dr U. V. Panchal
H.O.D, Dept of Commerce,
Deogiri College,
Aurangabad, Dist. Aurangabad

Pro. S.B. Karande
Dept. of Economics,
Shri Bhausaheb Vartak College,
Borivali (W), Dist. Mumbai.

Dr. Sachin Kadam
Dept. of Hindi
Nagar Palika Art D.J. Malpani Comm.
& B.N. Sarda Sci. College,
Sangmner, Dist. Ahmadnagar (M.S.)

www.rjournals.co.in

© Shaurya Publication, Latur | www.rjournals.co.in | Email-hitechresearch11@gmail.com



CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly

Issue X Vol II, Jan. 2017

UGC Approved

Sr. No. 64310

ISSN : 2319 - 8648

Impact Factor : 7.139

Editorial Board Member

Dr. N.J. Waghmare
Research Guide & Head,
Dept. of Pali,
Govt. Sanatketar College,
Shivani, (M.P.)

Dr. Bharat Handibag
Dean, Faculty of Arts,
Dr. B.A.M. University Aurangabad, (M.S.)

Dr. U.T. Gaikwad
Dept. of Geography,
Smt. S. D. M. College
Latur, Dist. Latur (M.S.)

Pro. S.B. Karande
Dept. of Economics,
ShriBhauasahebVartak College,
Borivali (W), Dist. Mumbai.

B.J. Hirve
Dept. of botany
VasantMahavidyalaya,
Kaij, Dist. Beed. (M.S.)

Dr. Gopal S. Bhosale
Head, Dept. of Hindi,
Janvikas College,
Bansarola, Dist. Beed (M.S.)

Dr. B.T. Lahane
Principal, Head, Dept. of English,
SambhajiraoKendre College,
Jalkot, Dist. Latur (M.S.)

Dr. U.V. Panchal
H.O.D, Dept of Commerce,
Deogiri College,
Aurangabad, Dist. Aurangabad

Dr. M.U. Yusuf
Assistant Professor,
Dept of Commerce,
Sir Sayyed College,
Aurangabad, Dist. Aurangabad

S. R. Uchale
Librarian,
ShriBhauasahebVartak College,
Borivali (W), Mumbai

S.R. Kadam
Head, Dept. of History,
Janvikas College,
Bansarola, Dist. Beed (M.S.)

Dr. Gopal S. Bhosale
Head, Dept. of Hindi,
Janvikas College,
Bansarola, Dist. Beed (M.S.)

Dr. Hanumant Mane
Research Guide & Head, Dept. of Marathi,
Shivchatrapati College,
Kalam, Dist. Osmanabad(M.S.)

Prof. Mohan S. Kamble
Dept. of Marathi,
JanvikasMahavidyalay,
Bansarola, Dist. Beed (M.S.)

Prof. Chitade Nandkishor
Dept. of Economics,
JanvikasMahavidyalay,
Bansarola, Dist. Beed (M.S.)

Dr. Koshidgewar Bhasker
H.O.D (Computer Science)
Vai. D.M. Deglurkar College,
Degloor, Dt. Nanded (M.S)

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly
Issue X Vol II, Jan. 2017

UGC Approved
Sr. No. 64310

ISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 7.139

Index

Sr. No.	Article Title	Author	Page No.
1	Poverty And Economic Growth: A Evaluation	Dr. Shahuraj S. Mule	1
2	<i>The Suggestive Discription Of Motivation- An Important Management Function In The Organization Scenario</i>	<i>Dr. Prashant M. Puranik</i>	4
3	<i>Format of Mock Trial in Vijay Tendulkar's Play "Silence! The Court is in Session"</i>	<i>Mr. Bobade Tukaram Balasaheb</i>	8
4	<i>Impact Of Climate Change On Crop Production In Marathwada Region</i>	<i>Hashmi Irshad Mohiuddin</i>	13
5	<i>Use of Information and Communication Technology (ICT) in the Library</i>	<i>Dr. Mortale Heera Nivrattirao</i>	15
6	<i>"Effect of Demonetization Policy on 'Weaker Sections of Indian Society.'"</i>	<i>Dr. Shyamsundar Pandharinath Waghmare</i>	18
7	<i>Medical Library Cosortium</i>	<i>Devidas Vankati Phad</i>	22
8	<i>Process of rehabilitation with reference to Warana irrigation project of Maharashtra</i>	<i>Mr. M. B. Chavan</i>	27
9	<i>Effect Of Selected Exercises On Arm And Back Strength Of Archers</i>	<i>Dr. Sunil kumar</i>	33
10	<i>Role of Foreign Direct Investment (FDI) In Banking Sector</i>	<i>Syed Vazaeer Syed Isa</i>	42
11	<i>Status of Organic Farming and Insurance Research Experiences in Rice</i>	<i>Dr. Rakesh Patidar , Dr. Dheeraj Negi Director Pragyan</i>	44
12	नारीतुम क्या हो?	विद्या किशनराव सावते	49
13	कुछ मराठवाडाके प्रमुख संत	डॉ. सचिन रमेशराव चोले	53
14	"स्त्रीभूणहल्येचा तात्त्विक अन्वयार्थ "	प्रा. बीबीशन विठ्ठलराव कांबळे	57
15	भारतीय राजभाषाएँ एवं संविधान	प्रा. नयनभादुले-राजमाने	61

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly

Issue X Vol II, Jan. 2017

UGC Approved

Sr. No. 64310

ISSN : 2319 - 8648

Impact Factor : 7.139

16	महिलांचा आर्थिक विकास आणि उद्योजकता	डॉ.सतीश बाबुराव डोंगे	70
17	ऑरिस्टॉटलच्या 'नेतिकसदगुण' संकल्पनेचा अन्वयार्थ	पंडगोसंतोष रमेशराव	74
18	ग्रामीण साहित्य संकल्पना व स्वरूप	प्रा. डॉ. हनुमंत तुकाराम माने	77
19	विद्यार्थ्यांच्या सृजनशीलतेचा विकासासाठी कार्यक्रमनिर्मितीचा अभ्यास	प्रा.मरेवाड पी.पी.	81
20	स्त्रीउत्थानातील डॉ.बाबासाहेब आंबेडकराच्या कार्य व चळवळीचे योगदान	डॉ.पी.जी. राठोड	86
21	हवामान बदल आणि त्याचे परिणाम	प्रा. डॉ. डी.बी. तांदुळजेकर	90
22	सूर्यगीतकाव्य	स.प्रा.डॉ. राजेशप्रल्हादरावआरदवाड	93
23	मालती जोशी की कहानियों में स्त्री विमर्श	डॉ. लहाडे मुरलीधर अच्युतराव	98
24	औसातालुक्यातील जलव्यवस्थापन : एक भौगोलिक अभ्यास	प्रा.डॉ.आर.एस. धनुश्वर	102
25	बौद्ध धर्म आणि स्त्री जिवन	प्रा.डॉ. बी.एस. लासुरे	105





हवामान बदल आणि त्याचे परिणाम

प्रा. डॉ. डी.बी. तांदुळजेकर

अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख, यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, अंबाजोगाई

------(२१)-----

प्रस्तावना :

पृथ्वीचे वातावरण हा पृथ्वीच्या पृष्ठभागागतच्या तिच्या गुरुत्वाकर्षणामुळे लपेटून असलेल्या वायूचा थर आहे. वातावरणात नायट्रोजन (७८.००%) ऑक्सीजन (२१.००%), आर्गॉन (०.९%), कार्बन डायऑक्साईड (०.०३%) आर्द्रता इतर वायू व घटक ०.०७ % इत्यादी घटकांचा समावेश आहे. पृथ्वीतलावरील या वायूच्या मिश्रणाला हवा असे म्हणतात. तर मिश्रणाच्या एकूण प्रमाणाला हवामान असे म्हटले जाते. वातावरणामुळे पृथ्वीवरील सजिवांना जिवन संरक्षण हे मिळत असते. पृथ्वीच्या सभोवताली जे वातावरणाचे वेगवेगळे थर असतात. त्यामुळे पृथ्वीवर जिवनसृष्टीसाठी अनुकूल तापमान तयार होत असते. १६ व्या शतकामध्ये औद्योगिक क्रांतीला सुरुवात झाली पुढच्या तीन चार शतकामध्ये मानवाने जगाची खूप मोठी प्रगती केली. औद्योगिक क्षेत्राचे प्रचंड उत्पादन झाले. हे होत असताना नैसर्गिक साधनसामग्रीचा वारेमाप वापर सुरु झाला. खनिज साधन सामग्रीबरोबरच जल, जंगल आणि त्यातील साधन सामग्रीच्या अतिवापरामुळे नैसर्गिक पर्यावरणीय परिस्थितीकीमध्ये बदल होण्यापर्यंतही मजल गेली असतानाही मानव निसर्गाकडे आणि पर्यावरण परिस्थितीकडे लक्ष देण्यास त्याला वेळ नसल्याचे आज दिसून येते. अभियांत्रिकी क्षेत्रामध्ये १९९० च्या दशकानंतर जगाने उदारीकरण अंगीकारले आणि दोन, चार चाकी वाहनांचे उत्पादन प्रचंड वाढले, संगणकाच्या क्षेत्रामध्येही खूप मोठी क्रांती झाली आणि शेती क्षेत्रामध्ये वापरली जाणारी खते, किटकनाशकांचा वापरही विकसनशील राष्ट्रांच्या मध्ये मोठ्या प्रमाणावर वाढ झाली तर दुसऱ्या बाजूला वारेमाप जंगल कटाई झाली त्याचा परिणाम मातीची खूप मोठ्या प्रमाणावर धूप झाली. पाण्याबरोबर माती वाहून जाण्याचे प्रमाण वाढले. जमीनीमध्ये वापरली जाणारी रासायनिक खते आणि किटकनाशके यामुळे सर्व पाणवटे दुषित झाली. तळे, जलाशय आणि समुद्रातील सजीवसृष्टी त्यामुळे अडचणीत आली तर दुसऱ्या बाजूला हवेमध्ये कार्बनडायऑक्साईड आणि मिथेल वायूचे प्रमाण वाढले आणि त्यामुळे हवेचा वातावरणाचा समतोल बिगडला आणि त्यातून पर्यावरणीय असमतोलाचा प्रश्न मानवजातीसमोर उभा राहिला. पर्यावरणीय असमतोलाचा परिणाम म्हणून कुठे अतिपाऊस तर कुठे कोरडा दुष्काळ, कुठे अतिवृष्टी तर कुठे प्रचंड उण, ज्या प्रदेशाचे तापमान कधीही ४०-४२ अंश सेल्सीयसच्या पुढे गेले नव्हते ते ४७.४९ पर्यंत गेले. एवढेच नव्हे तर उत्तर आणि दक्षिण ध्रुवावरील तापमान वृद्धीमुळे त्या ठिकाणचा बर्फ वितळू लागला. हे जर असेच चालू राहिले तर पुढच्या २५-३० वर्षामध्ये समुद्राची पाणी पातळी ही दोन तीन मीटरने वाढण्याची भिती आज तज्ञ मंडळी व्यक्त करू लागले आणि म्हणून मग आता विकसित देश पुढाकार घेऊन पर्यावरण समतोलासाठी प्रयत्न करत असल्याचे दिसू लागले आहे.

जागतिक तापमान वाढीची कारणे:

१. झाडांची संख्या कमी होणे.
२. दिवसेंदिवस सिमेंटच्या जंगलामध्ये होणारी वाढ
३. पृथ्वीच्या पोट्यातील पाण्याचा अमाप उपसा
४. कारखान्याचे विषारी वायू हवेत सोडणे
५. दुचाकी आणि चारचाकी वाहनाचा वाढता वापर
६. हवेमध्ये कार्बनडाय ऑक्साईड, सल्फर आणि इतर वायूचे वाढते प्रमाण
७. अल निनो आणि त्या निनोचा वातावरणात वाढता प्रभाव.

वातावरणातील बदलाचे दिर्घकालीन परिणाम:

**१) हिमनद्यांचे वितळणे :**

१९४० च्या दशकात ओझोनच्या प्रश्नाने जगाचे लक्ष वेधले गेल्यावर तापमानवाढीचे परिणाम काय असतील याचा मागोवा घेणे चालू झाले. जगातील विविध भागातील होणारे बदल तपासण्यात आले. सर्वात दृश्य परिणाम दिसला तो हिमनद्यावर गेल्या शंभर वर्षात जगातील सर्वच भागातील हिमनद्यांचा आकार कमी होणे चालू झाले. कारण सोपे आहे तापमान वाढीने पडणाऱ्या बर्फापेक्षा वितळणाऱ्या बर्फाचे प्रमाण जास्त झाले व हिमनद्या मागे हटू लागल्या. १९६० पर्यंत आफ्रिकेतील माऊंट किली मांजारो या पर्वतावर मुबलक बर्फ असे व आज तेथे नगण्य बर्फ आहे. हिमालय, आल्प्स, आन्देश व रॉकी या महत्त्वाच्या बर्फाच्छदित पर्वत रांगांमध्ये ही असेच आढळून आले आहे. या हिमनद्या पाणी पूरवठा म्हणून अतिशय महत्त्वाच्या आहेत. या हिमनद्या नष्ट झाल्या तर या नद्यावर अवलंबून असणाऱ्या लोकांना पाणी टंचाईच्या सामना करावा लागेल हे वेगळे सांगण्याची आवश्यकता नाही.

२) उत्तर आणि दक्षिण ध्रुवावरील बर्फ वितळण्यास सुरुवात :

पृथ्वीच्या तापमानामध्ये मागील शंभर वर्षांमध्ये $0.68 + 0.12C$ इतकी वाढ झाली आहे.^३ जगामध्ये आज सरासरी १५ डिग्री इतके तापमान आहे. सद्या जी तापमानात वाढ होते आहे ती खूप जलद गतीने होत असल्याचे दिसून येते. नैसर्गिक घटनांमुळे होणाऱ्या तापमानवाढीचे प्रमाण हे मानवनिर्मित घटनांमधून होणाऱ्या तापमान वाढीपेक्षा जास्त झालं आहे. म्हणजेच निसर्ग बेभरवशाचा झाला आहे आणि हीच खरी चिंतेची बाब आहे.^३

३) अवकाळी पाऊस आणि अतिवृष्टीमुळे शेतीचे नुकसान :

वाढते औद्योगिकीकरण, वाहनांचा वाढता वापर शेतीमध्ये वाढत्या रासायनिक खतांचा वापर जंगलतोड आणि वाढते शहरीकरण (सिमेंटची जगले) रस्त्यासाठी डांबर आणि सिमेंटचा वाढता वापर यामुळे हवेतील कार्बनडाय ऑक्साईडचे प्रमाण वाढले आहे. कार्बनडाय ऑक्साईड हा हवेचा घटक सुर्यापासून मिळणारी उर्जा आणि सुर्यप्रकाश शोषून घेत असल्यामुळे वातावरणातील तापमानात वाढ होत आहे. हे वाढते तापमान कमी दाबाचा पट्टा निर्माण झाला की अधिक दाबाच्या पट्ट्याकडून कमी दाबाच्या पट्ट्याकडे वाहत असताना स्वतः बरोबर वातावरणातील बाष्प वाहून आणते आणि त्याचा परिणाम कमी दाबाच्या पट्ट्यामध्ये अवकाळी पाऊस किंवा अतिवृष्टी होऊन शेतीचे मोठ्या प्रमाणावर नुकसान होते साधारणपणे फ्रेब्रुवारी मार्च महिन्यामध्ये आणि ऑक्टोबर नोव्हेंबर महिन्यामध्ये असे कमी दाबाचे पट्टे महाराष्ट्रामध्ये निर्माण होऊन कधी अतिवृष्टी तर कधी अवकाळी पाऊस पडून खरीप आणि रब्बी पिकांचे त्यामुळे नुकसान होते हे अलिकडे नित्याचेच झाले आहे. उदाहरण घावयाचे झाले तर कोल्हापूर, सांगली, सातारा या भागात या वर्षी अतिवृष्टी झाली आणि विदर्भामध्ये अवकाळी पावसाने शेतीचे नुकसान केले.

४) अवर्षण प्रवण आणि दुष्काळी क्षेत्रात वाढ :

१९७२ मध्ये महाराष्ट्रात मोठा दुष्काळ पडला. मराठवाड्यातील अनेक भूमीहीन कुटुंबे पूर्ण, मुंबईला स्थलांतरीत झाली. त्यानंतर पुढे कमी अधिक प्रमाणात १९८६, २००३, २०१२ आणि २०१५ मध्ये महाराष्ट्राच्या विविध भागांमध्ये दुष्काळी परिस्थिती निर्माण झाली. १९८६ ते २०१५ या कालावधीमध्ये महाराष्ट्राच्या अनेक जिल्ह्यांमध्ये अवर्षण प्रवण स्थिती निर्माण झाली या अवर्षण प्रवण स्थितीचा अभ्यास केला असता असे निदर्शनास येते की १९८६ ते २०१३ या कालावधी मध्ये महाराष्ट्रातील १४ जिल्ह्यांतील ११४ ते ११८ तालूके हे अवर्षण प्रवण तालूके म्हणून सरकारने जाहीर केले. हा अवर्षण प्रवण जिल्ह्याचा आकडा २०१२ आणि २०१५ मध्ये २८ इतका झाला असून एकूण तालूके १२३ आणि १३६ इतके झालेले आहेत. यामध्ये मराठवाड्यातील अधिक तालूक्यांचा त्यामध्ये समावेश होतो. ही अवर्षण प्रवण आणि दुष्काळी परिस्थिती वातावरणातील बदल आणि जगातील तापमानातील वाढीचा परिणाम आहे असे म्हटले तर ते वावगे होत नाही.

५) मानवी आरोग्य आणि हवामान बदल :



वातावरणातील बदल आणि पृथ्वीचे वाढते तापमान वितळणारे हिमपर्वत याचा परिणाम म्हणून वर्षानुवर्षे त्या त्या भागामध्ये जिवानू आणि विषाणूनी आपले स्थान किंवा जागा सोडलेली आहे. हिमपर्वतावरील आणि हिमनद्यामधील अनेक जिवानी, विषाणू आणि सूक्ष्म अतिसूक्ष्म जिवानू हे वाहत्या नद्याबरोबर दुसऱ्या भागामध्ये स्थलांतरीत झाल्यामुळे त्याचे परिणाम मानवी आरोग्यावर विपरीत होतील अशी भिती व्यक्त केली जात आहे. आशिया आणि आफ्रिका आणि लॅटीन अमेरिकेतील हतारो हेक्टरवरची जंगल तोड झाल्यामुळे ही जंगल क्षेत्रातील अनेक सूक्ष्म आणि अतिसूक्ष्म, जीवजंतू, विषाणू यांनी जंगलाची धूप झाल्यानंतर नदी नाल्यावाटे मानवी वस्तीमध्ये प्रवेश झालेला आहे. त्याचा परिणाम म्हणून हिचताप डेंगू पसरवणाऱ्या किटकांनी मानवी वस्तीवर हल्ला केल्यामुळे या रोगाचे प्रमाण वाढले आहे.

एकंदरीतच पर्यावरणीय परिस्थितींमध्येच वातावरणातील बदलाचा परिणाम म्हणून एव्हियन फ्लू कॉलरा, एबोला, प्लेग, क्षय, यलो फिवर आणि आज जगामध्ये ज्या कोरोना विषाणू ने धूकाकूळ घातला आहे. हा ही पर्यावरणातील बदलाचा परिणाम हा असू शकतो. यावर पुरेशे संशोधन झाल्यानंतर ते जगाच्या लक्षात येईल.

हवामानातील बदल आणि त्याचे मानवी आरोग्यावर होणारे परिणाम याचा अभ्यास जागतिक आरोग्य संघटना आणि विकसित राष्ट्रातील काळ संस्था काम करत आहेत. जसे इंग्लंडमधील रॉयल कॉलेज ऑफ फिजिशियन्स आणि नॅशनल इन्स्टिट्यूट फॉर हेल्थ रिसर्च या इंग्लंड स्थित संस्था काम करत आहेत. तसेच इंग्लंडमधील लॉरेन्स हे नियम कालीक आरोग्यावरील संशोधन प्रसिध्द करण्याचे कार्य करत आहेत.

संदर्भ सूची :

1. <https://mr.m.wikipedia.org>
2. <ps://hi.m.wikipedia.org>
3. <bbc.com.mat makgrath>



Current Global Reviewer

ISSN 2319-8648

Peer Reviewed

Impact Factor - 7.139

UGC Approved Journal
Sr. No. 64310



ISSN 2319-8648



Edited By
Arun B. Godam
Latur, Dist. Latur-413512
(Maharashtra, India)
Mob. 8149668999



Publisher
Shaurya Publication

www.rjournals.co.in



Peer Reviewed

ISSN 2319-8648

Indexed (SJIF)

Impact Factor - 7.139

Current Global Reviewer

UGC Approved International Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages



Editor in Chief
Mr. Arun B. Godam



CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly

Issue X Vol. VI, April, 2017

UGC Approved

Sr. No. 64310

ISSN : 2319 - 8648

Impact Factor : 7.139

Current Global Reviewer

UGC Approved International Research
Refereed Multidisciplinary Journal

Editor In Chief
Mr. Arun B. Godam

(Half Yearly)

ISSUE X , Volume VI, April, 2017

Editorial Office Address :

Khadgaon Road, Kapil Nagar, Latur,
Dist. Latur 413512 (M.S.) India

Contact- 8149668999

Email-

hitechresearch11@gmail.com



Publisher

**Shaury
Publication**

Kapil Nagar, Latur
Contact- 8149668999

Rs. 400/-

EXECUTIVE EDITORS

Dr. Chittaranjan Panda

P.G. Deptt. Of Odia
Shailabala Women's Autonomous
College, Cuttack - (Orissa)

Dr. U.T. Gaikwad

Dept. of Geography,
Smt. S. D. M. College
Latur, Dist. Latur (M.S.)

MaimanajahanAra

Head, Dept of Political Science,
Sir Sayyed College,
Aurangabad, Dist. Aurangabad

Dr M.U. Yusuf

Dept of Commerce,
Sir Sayyed College,
Aurangabad, Dist. Aurangabad

Dr. Hanumant Mane

R.Guide & Head,
Dept. of Marathi,
Shivchatrapati College,
Kalam, Dist. Osmanabad (M.S.)

B.J. Hirve

Dept. of botany
VasantMahavidyalaya,
Kaij, Dist. Beed. (M.S.)

Dr. PravinDiddeshwarShefe
Dept. of Zoology, Maharashtra
UdaygiriMahavidyalaya, Udgir,
Dist. Latur

DrU.V.Panchal

H.O.D, Dept of Commerce,
Deogiri College,
Aurangabad, Dist. Aurangabad

Pro. S.B. Karande

Dept. of Economics,
ShriBhauSahebVartak College,
Borivali (W), Dist. Mumbai.

Dr. SachinKadam

Dept. of Hindi
Nagarpalika Art D.J. Malpani Comm.
& B.N. Sarda Sci. College,
Sangmner, Dist. Ahmadnagar (M.S.)

www.rjournals.co.in

© Shaurya Publication, Latur | www.rjournals.co.in | Email-hitechresearch11@gmail.com



CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly

Issue X Vol. VI, April, 2017

UGC Approved

Sr. No. 64310

ISSN : 2319 - 8648

Impact Factor : 7.139

Editorial Board Member

Dr. N.J. Waghmare
Research Guide & Head,
Dept. of Pali,
Govt. Sanatketar College,
Shivani, (M.P.)

Dr. Bharat Handibag
Dean, Faculty of Arts,
Dr.B.A.M.UniversityAurangabd.(M.S.)

Dr. U.T. Gaikwad
Dept. of Geography,
Smt. S. D. M. College
Latur, Dist. Latur (M.S.)

Pro. S.B. Karande
Dept. of Economics,
ShriBhauasahebVartak College,
Borivali (W), Dist. Mumbai.

B.J. Hirve
Dept. of botany
VasantMahavidyalaya,
Kaij, Dist. Beed. (M.S.)

Dr. Gopal S. Bhosale
Head, Dept. of Hindi,
Janvikas College,
Bansarola, Dist. Beed (M.S.)

Dr. B.T. Lahane
Principal, Head, Dept. of English,
SambhajiraoKendre College,
Jalkot, Dist. Latur (M.S.)

DrU.V.Panchal
H.O.D ,Dept of Commerce,
Deogiri College,
Aurangabad, Dist. Aurangabad

Dr M.U. Yusuf
Assistant Professor,
Dept of Commerce,
Sir Sayyed College,
Auranbadad, Dist. Aurangabad

S. R. Uchale
Librarian,
ShriBhauasahebVartak College,
Borivali (W), Mumbai

S.R. Kadam
Head, Dept. of History,
Janvikas College,
Bansorala, Dist. Beed (M.S.)

Dr. Gopal S. Bhosale
Head, Dept. of Hindi,
Janvikas College,
Bansarola, Dist. Beed (M.S.)

Dr. Hanumant Mane
Research Guide & Head, Dept. of Marathi,
Shivchatrapati College,
Kalam, Dist. Osmanabad(M.S.)

Prof. Mohan S. Kamble
Dept. of Marathi,
JanvikasMahavidyalay,
Bansarola, Dist. Beed (M.S.)

Prof.ChitadeNandkishor
Dept. of Economics,
JanvikasMahavidyalay,
Bansarola, Dist. Beed (M.S.)

Dr.KoshidgewarBhasker
H.O.D (Computer Science)
Vai. D.M.Deglurkar College,
Degloor, Dt. Nanded (M.S)



Index

Sr. No.	Article Title	Author	Page No.
1	The Relation Between The Level Of Job Satisfaction And TypesOf Personality In Higher Secondary School Teachers	Smt. Geeta H. Ingishetty	1
2	Anxiety And Mental Health Of Chronic Patients	Dr. AnilkumarTengli	5
3	Globalization And Social, Economical Development In India	Mr. Pawar S.S	10
4	Biodiversity Of Zooplanktons And Applications For Development Of Fishery At Mahasangvi Reservoir Tq. PatodaDistBeed (Ms)	rashant V. Patil	13
5	"Comparative Study Of Anxiety Level Of Tribal And Non-Tribal Athletes"	Dr. Sunilkumar	16
6	"Effect of minor games on physical fitness of school going children"	Prof. Sughand Band	19
7	Indian Agriculture Sector Before and After Globalisation - An Analysis	Dr. MarotiTegampure, Dr. Amrita Sahu	24
8	हरभरा पिकाची उत्पादकता : एक भौगोलिक अभ्यास	प्रा.डॉ.आर.एस. धनुश्वर	31
9	मोहन राकेश के नाटकों में तात्विक विवेचन	डॉ. सचिन रमेशराव चोल	35
10	साहित्य आणि समाज सहसंबंध	डॉ. प्रा. गणेश लहाने	41
11	मराठवाड्याच्या विकासासाठी एकात्मिक जलसंधारणाची गरज	प्रा. डॉ. डी.बी. तांदुळजेकर	46
12	आदिवासी जीवन	स.प्रा.डॉ. राजेश प्रल्हादराव आरदवाड	56
13	भारतातील इंटरनेटवरील व्यापाराचे वाढते महत्त्व	प्रा. सुभाष विनायकराव मोरे	59



मराठवाड्याच्या विकासासाठी एकात्मिक जलसंधारणाची गरज

प्रा. डॉ. डी.बी. तांदुळजेकर

अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख, श्री शिवाजी महाविद्यालय परभणी

(११)

सजीवाच्या अदि आणि अंत पाण्याशी निगडीत आहे. पाणी म्हणजे जिवन म्हणा किंवा जिवन म्हणजे पाणी म्हणा दोन्हीचा अर्थ एकच. मराठवाड्याच्या आठ जिल्ह्यांचा विचार केला असता नांदेड, परभणी आणि हिंगोली जिल्ह्यांमध्ये तुलनात्मक दृष्ट्या पाऊस चांगलो असतो. जमीनीची प्रत चांगली गोदावरी नदी खोरे त्यामुळे दुष्काळाची कमी झाल तर उस्मानाबाद, लातूर, बीड, औरंगाबाद आणि जालना एक तर पाऊस कमी जालना औरंगाबादचा काही भाग गोदावरी नदी खोऱ्यात येत असल्याने जायकवाडी धरणाचे पाणी या दोन जिल्ह्यांना मिळत असल्याने दुष्काळाची दाहकता कमी पण बीड, लातूर आणि उस्मानाबाद जिल्हे मात्र पाण्यासाठी कायम तुटीचे पिण्याच्या पाण्याचीच मारामार, मांजरा, शिंदफणा वगळता एकही मोठी नदी नाही. मांजरा, शिंदफणा आणि तेरणा या नद्या आहेत परंतु त्याचे नदी खोरे मर्यादित आणि कमी पाऊसमान, सतत अवर्षण ग्रस्त असल्याकारणाने सतत पाण्याची वणवण.

मराठवाड्यातील जिल्ह्यांचे खोरेनिहाय भौगोलिक क्षेत्र आणि पाण्याची उपलब्धता अशी आहे.

जिल्हा	गोदावरी खोरे		कृष्णा खोरे		तापी खोरे		एकूण	
	क्षेत्र	उपलब्ध पाणी	क्षेत्र	उपलब्ध पाणी	क्षेत्र	उपलब्ध पाणी	क्षेत्र	उपलब्ध पाणी
औरंगाबाद	९.०४	५७.२२	--		१.०६	४.२०	११.१०	६१.४२
जालना	७.७०	३५.००	--		०.०१	०.०३	७.७१	३५.०३
परभणी	११.०४	५७.४३	--				११.०४	५७.४३
हिंगोली								
लातूर	७.१६	२५.५०					७.१६	२५.५०
नांदेड	१०.५२	६०.७५					१०.५२	६०.७५
बीड	९.०८	४५.३३	१.९१	२.१५			१०.९९	४७.७८
उस्मानाबाद	३.०८	१०.९१	४.४५	७.१०			७.५८	१८.०१
मराठवाडा	५७.६२	२९२.४४	६.११	९.२५	१.०७	४.२३	६४.८०	३०५.९२
टक्केवारी	८८.९२	९५.६०	९.४३	३.००	१.६५	१.४०	१००	१००

मराठवाड्यामध्ये एकूण ३०६ अब्ज घण फुट पाणी उपलब्ध आहे. यापैकी अंदाजे ९५.५० टक्के पाणी गोदावरी खोऱ्यात ३ टक्के कृष्णा खोऱ्यात आणि १.५० टक्के पाणी तापी खोऱ्यात आहे. मराठवाड्यातील एकूण ६४.८० लक्ष हेक्टर क्षेत्रापैकी ५७.६२ लक्ष हेक्टर म्हणजे ८८.९ टक्के क्षेत्र गोदावरी खोऱ्याने व १.७ टक्के तापी खोऱ्याने व्यापलेले आहे. २/३ क्षेत्रापेक्षा अधिक क्षेत्र हे नांदेड, परभणी, बीड व औरंगाबाद जिल्ह्याने व्यापलेले आहे. ही आकडेवारी लातूर आणि उस्मानाबाद जिल्ह्यासाठी उपलब्ध असलेले पाणी आणि त्याची तूट आणि दाहकता समजण्यास पुरेशी आहे.

गोदावरी नदीतीरावर वरच्या बाजूला धरणे झाल्यामुळे दरवर्षी पेटण येथे असलेले आणि मराठवाड्याची तहाण भागविणारे धरण पूर्ण क्षमतेने दरवर्षी भरत नाही तर दुसऱ्या बाजूला मांजरा, तेरणा, धूधना, सिंदफणा इत्यादी नद्यांची जी मध्यम प्रकल्प आहेत त्या नदीखोऱ्यामध्ये पावसाचे प्रमाण कमी असल्याने ते ही पूर्ण क्षमतेने



भरत नाहीत. मराठवाड्याच्या पाणी प्रश्नाच्या आड येणारी या भागातली साखर कारखानदारी ऊस उत्पादक शेतकरी आणि पाणी प्रश्नाबाबत त्याची असलेली उदासीनता. मराठवाड्यामध्ये उस्मानाबाद आणि लातूर हे दोन जिल्हे एक तर अवर्षण प्रवण आहेत, पाण्याची मोठ्या प्रमाणावर तूट आहे. आणि नेमके याच जिल्ह्यामध्ये साखर कारखान्याची संख्या अधिक आहे. या जिल्ह्यातील साखर कारखानदारी आणि साखर उद्योगामोवती फिरणारे राजकारण पाण्याच्या तूटीला जबाबदार आहे असे म्हटले तर ते निश्चितच वायगे होणार नाही. भारताच्या इतिहासामध्ये पहिल्यांदा लातूर जिल्ह्याला रेल्वेने पाणी आणावे लागले परंतु याचा धडा लातूरकरांनी घेतला असे दिसत नाही.

मराठवाड्याची लोकसंख्या वाढत आहे. पाणी उपलब्ध झाले की लगेच ऊसाची लागवड केली जाते. साखर कारखाने सुरु होतात पुन्हा कोरडा दुष्काळ उसाचे क्षेत्र कमी होते, शेतकऱ्यांना ऊस मोडावा लागतो. पुन्हा वर्ष दोन वर्षांमध्ये चांगला पाऊस होते, शेतकरी पुन्हा उसाची लागवड करतात.

मांजरा नदी खोऱ्यामध्ये सतत तीन वर्षे शेतकऱ्यांनी उसाचे पीक घेतले असे मागील २५ वर्षांमध्ये एकदाही घडले नाही. उस पीकाच्या चक्रविहामधून या भागातील शेतकऱ्यांची मानसिकता बाहेर आली तर पाण्याची बचत होऊन पाण्यावर पडणारा ताण कमी होऊ शकतो.

मराठवाड्यामध्ये सर्व नद्यावर मोठे, मध्यम लघू प्रकल्प जवळजवळ पूर्ण झाले आहेत. एकतर गोदावरी नदी वगळता दुसरे कोणते नदी खोरे मराठवाड्यात नाही. केवळ मोठे आणि मध्यम स्वरूपाची धरणे बांधून पाण्याचा प्रश्न सुटणार नाही आणि ती क्षमता ही मराठवाड्यामध्ये नाही. मराठवाड्याचा पाणी प्रश्न आणि त्या अनुषंगाने शेती, उद्योगाचे प्रश्न सोडविण्यासाठी दरवर्षी पावसापासून जे पाणी उपलब्ध होते ते जास्तीत जास्त पाणी मुल ठिकाणी संचित करणे आणि त्यासाठी एकाल्मीक स्वरूपाची योजना तयार करणे ही काळाची गरज आहे. मराठवाड्यामध्ये बीड, जालना आणि औरंगाबाद जिल्ह्यांमधून ज्या महादेव डोंगर रांगा आहेत त्या डोंगर रांगांमध्ये तिथल्या भौगोलिक परिस्थितीनुसार पाणलोट क्षेत्र विकासाच्या विविध योजना राबविण्यासाठी खूप मोठी क्षमता आहे. त्या क्षमतांचा अभ्यास करून एक रोड मॅप तयार करून त्यावर काम करणे आवश्यक आहे. मराठवाड्यातील सर्व जिल्ह्यांची भौगोलिक परिस्थिती भिन्न भिन्न आहे. त्या त्या जिल्ह्याच्या भौगोलिक परिस्थितीनुसार पाणलोट क्षेत्र विकासाच्या विविध योजना राबविणे आवश्यक आहे.

मराठवाड्याचा पाणी प्रश्न आणि त्या अनुषंगाने निर्माण होणारे आर्थिक आणि सामाजिक प्रश्न सोडविण्यासाठी जिल्ह्याच्या भौगोलिक रचनेनुसार पाणलोट क्षेत्र विकासाच्या कोणत्या योजना कोणत्या जिल्ह्यामध्ये राबविणे आवश्यक आहे. तो आढावा असा.

मराठवाडा जिल्हा आणि पाणलोट क्षेत्र निहाय योजना :

१. गावतळी :

पावसाळ्यानंतरही गावाची पाण्याची गरज लक्षात घेऊन गावातळी बांधण्याची भारताची आणि महाराष्ट्राची परंपरा प्राचीन आहे. १९७२ च्या दुष्काळानंतर रोजगार हमी योजनेअंतर्गत महाराष्ट्रात अनेक गावतलाव बांधले गेले. महाराष्ट्रामध्ये अमरावती जिल्हा गावतलाव बांधणीमध्ये क्रमांक एक वर आहे. १९९५ साली धुळे जिल्ह्यामध्ये ७६१ गाव तलाव असल्याची नोंद आहे. मराठवाड्याच्या आठ जिल्ह्यांचा विचार केला असता १९९५ पर्यंत नोंद केलेल्या गावतलावमध्ये बीड जिल्ह्याचा क्रमांक एक आहे. बीड जिल्ह्यामध्ये गाव तलावाची संख्या ही ३६३ इतकी आहे. यानंतर औरंगाबाद जिल्ह्याचा क्रमांक लागतो. औरंगाबाद जिल्ह्यामध्ये गावतलावाची संख्या ही १४० इतकी आहे. सर्वात कमी लातूर जिल्ह्यामध्ये केवळ ३३ इतकी आहे. तर उस्मानाबाद जिल्ह्यामध्ये ३८ ही गावतलावाची संख्या आहे. गाव तलावाची संख्या वाढविण्यासाठी मराठवाड्यामध्ये चांगला स्कोप आहे. बीड, औरंगाबाद आणि जालना तसेच लातूर, उस्मानाबाद जिल्ह्यांमध्ये गावतलावासाठी भौगोलिक परिस्थिती उत्तम आहे. बीड जिल्हा जो उस कामगारांचा जिल्हा म्हणून ओळखला जातो त्या जिल्ह्यामध्ये महादेव डोंगर रांगांमध्ये अनेक

लहान लहान गाव खेडी आहेत त्या गाव खेडीमध्ये गावतलाव बांधले तर पिण्याच्या पाण्याचा प्रश्न मार्गी लागू शकतो.

२) पाझर तलाव :

पहिल्या जलसिंचन आयोगाने अशी शिफारस केली होती की, ज्या भागामध्ये सिंचन तलाव बांधणे शक्य नाही अशा ठिकाणी पाझर तलाव बांधावेत. १९७२ मध्ये महाराष्ट्रात सर्वदूर दुष्काळ पडला तेव्हा लोकांना रोजगार उपलब्ध करून देण्याच्या उद्देशाने पाझर तलाव बांधण्याचे काम सुरु करण्यात आले. महाराष्ट्रामध्ये १९९५ पर्यंत १३००५ पाझर तलाव हे धूळे, सोलापूर आणि अहमदपूर जिल्ह्यामध्ये अनुक्रमे १९५३, १९०३ आणि १८८६ इतके आहेत. तर मराठवाड्यामध्ये बीड आणि औरंगाबाद जिल्ह्यामध्ये १५२० आणि १४५० इतकी पाझर तलावांची संख्या आहे. तर सर्वात कमी परभणी जिल्ह्यामध्ये २४८ इतकी संख्या ही पाझर तलावांची आहे. मराठवाड्यामध्ये जी पाझर तलावांची संख्या आहे. त्याची दुरुस्ती आणि त्यामध्ये असलेला गाळ काढून त्याची साठवण क्षमता वाढवली जाऊ शकते. नांदेड, परभणी सोडून मराठवाड्यातील सर्व सहा जिल्ह्यामध्ये पाझर तलावाची संख्या वाढविण्यास आणखी खूप वाव आहे. लहान मोठे पावसाळ्यात वाहणारे नदी नाले जे वाहतात त्या ठिकाणी पाझर तलाव बांधून पावसाचे वाहून जाणारे पाणी आपण थांबवू शकतो.

३) वसंत बंधारे :

नदी पात्रात मान्सूनोत्तर नदीप्रवाह अडवून वळविण्यासाठी परंपरेने बांधल्या जाणाऱ्या कच्चा बंधान्यांना स्थायी स्वरूप देण्याच्या प्रयत्नाचा एक टप्पा म्हणजे वसंत बंधारे होय. नदी पात्रात कमी उंचीचे पक्के सिमेंट बांध घालून त्यात पूराचे पाणी वाहून जाण्यासाठी लहान दरवाजे ठेवले जातात. पावसाळ्यानंतर हे दरवाजे लाकडी फळ्या किंवा माती कचरा घालून दरवाजे बंद केले जातात. वसंत बंधान्याचा इतिहास सहाव्या शतकापासून सुरु होतो. प्राप्त माहितीनुसार महाराष्ट्रामध्ये यवतमाळ, रायगड आणि बुलढाणा जिल्ह्यामध्ये अनुक्रमे २२३, १६८ आणि १३५ अशी वसंत बंधान्याची संख्याही केवळ ४७ इतकी आहे. लातूर आणि परभणी जिल्ह्यामध्ये प्राप्त माहितीनुसार एकही वसंत बंधारा नाही. मराठवाड्यामध्ये सर्वच जिल्ह्यामध्ये वसंत बंधारे बांधले जाऊ शकतात. एकात्म पाणलोट क्षेत्र विकास आराखड्याच्या माध्यमातून एक रोड मॅप तयार करून अशा बंधान्यांची संख्या जर वाढवली आली तर सिंचन क्षमतेमध्ये वाढ ही होऊ शकते.

४) कोल्हापूरी पध्दतीचे बंधारे :

कोल्हापूरी पध्दतीचा बंधारा कलौघात विकसीत झाला. कोल्हापूरी पध्दतीचा बंधारा हा प्रकार बारमाही नद्या प्रवाही असणाऱ्या कोल्हापूर भागात विकसित झाला. परंतु आता ती संकल्पना अवर्षण प्रवण व कमी पावसाच्या प्रदेशामध्येही मोठ्या प्रमाणावर राबवली आहे. नदी पात्रात पाणी साठवून राहवे आणि त्या साठविलेल्या पाण्याचा शाश्वत उपयोग व्हावा म्हणून छत्रपती शाहु महाराजांनी राधानगरी येथे १९०७ ते १९१८ या दरम्यान १२ मीटर उंचीचे दगडी धरण बांधले. या जलाशयातून पाणी सोडून खालच्या बाजूला शेतकऱ्यांनी बांधलेल्या कच्च्या बंधान्यांना पाणी पूरवण्याची व्यवस्था झाली.

मुख्य अभियंता, लघू पाठबंधारे (स्थानिक स्तर) पूणे यांच्याकडून मिळालेल्या माहितीचा आधार घेतला असता १०० हेक्टर शेतजमीन हंगामी सिंचनाखाली येऊ शकेल अशा क्षमतेची कोल्हापूरी पध्दतीचे बंधारे १९९५ पर्यंत महाराष्ट्राच्या विविध जिल्ह्यामध्ये ३४६५ इतके पूर्ण झाले आहेत. त्याची एकूण सिंचन क्षमता ही ८६३२५ हेक्टर इतकी आहे.

महाराष्ट्रामध्ये धूळे, पूणे, सातारा, सोलापूर जिल्ह्यामध्ये या पध्दतीच्या बंधान्याची संख्या चांगली आहे. मराठवाड्याचा विचार केला असता उस्मानाबाद जिल्ह्यामध्ये या बंधान्यांची संख्या चांगली आहे. मराठवाड्यामध्ये बारमाही नद्यांचे वाहणे बंद झालेले आहे. गोदावरी सारखी नदी ही बारमाही वाहत नाही. त्यामुळे या प्रकारच्या बंधान्यांना मराठवाड्यामध्ये मर्यादा येतात. पावसाळ्यामध्ये मराठवाड्यातील काही नद्यांना पूर येतात. पूराचे पाणी वाहून जाते हे पाणी अडविणे आवश्यक आहे.



५) साठवण तलाव :

प्रवाही सिंचनाची (कालवे) व्यवस्था नसलेला साठवण तलाव. साठवणुकीला जागा उपलब्ध आहे पण तलावाच्या खालच्या भागात लाभक्षेत्र उपलब्ध नाही. अत्यांतिक चढउतार व डोंगराळ जमीन राज्याच्या सरहद्दीच्या आत लाभक्षेत्र उपलब्ध होत नाही अशा ठिकाणी साठवण तलाव प्रस्तावित केले जातात. घसगुती वापरासाठी पाण्याचा पूरवठा करण्यासाठी साठवण तलाव निर्माण करण्याची गरज भासते. प्राचीन काळी ११ व्या व १२ व्या शतकामध्ये यादवांच्या काळात महाराष्ट्रात प्रजेच्या सोयीसाठी अनेक लहान लहान साठवण तलाव बांधले गेले होते. महाराष्ट्रमध्ये साठवण तलाव हे महाराष्ट्राच्या धूळे, अहमदनगर आणि सातारा जिल्ह्यामध्ये अनुक्रमे १३२, ३२० आणि ३२ असे एकूण ५०२ आहेत. मराठवाड्यामध्ये बीड जिल्ह्यामध्ये केवळ एक असल्याची नोंद आहे. लोकांच्या पशु पक्षाच्या आणि जनावरांच्या पिण्याच्या पाण्याची सोय निर्माण करण्याच्या उद्देशाने साठवण तलाव निर्माण करण्यासाठी मराठवाड्यातील डोंगरी भाग म्हणून महादेवाचे डोंगर जे की बीड, औरंगाबाद जिल्ह्यातून जातात त्या डोंगर रांगामध्ये साठवण तलाव निर्माण करण्याचा चांगला स्कोप आहे.

मराठवाड्यामध्ये एकात्मिक दृष्टीकोनातून पाणलोट क्षेत्र विकास कार्यक्रमांतर्गत ज्या विविध उपाययोजना केल्या जातात त्या सर्व योजना भौगोलिक दृष्टीकोनाचा विचार करून राबविल्या तर निश्चितच तहाणलेल्या मराठवाड्याचा पाणी प्रश्न मार्गी लागू शकतो आणि जर का मराठवाड्याचा पाणी प्रश्न सुटला तर मराठवाड्याचा विकासाचा वेग वाढण्यास निश्चितच मदत होईल. यात शंका असण्याचे कारण नाही.

संदर्भ :

१. मराठवाडा पाणी प्रश्न आणि विकास समस्या, मराठवाडा विकास आणि संशोधन संस्था, औरंगाबाद, जुलै २०००, पृ.क्र. ४९
२. लोकराज्य, सरी वर सरी, अभिजीत घोरपडे, जुलै २००७, पृ. २७
३. मुख्य अभियंता, लघू पाठबंधारे (स्थानिक स्तर) पूणे यांची टीपणी.
४. महाराष्ट्र जल व सिंचन आयोग अहवाल १९९९ पृ.क्र.८८२-८८५.

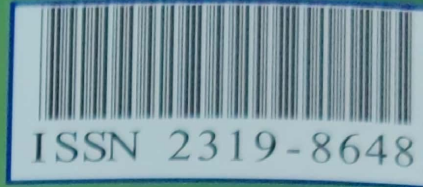
Current Global Reviewer

ISSN 2319-8648


Peer Reviewed

Impact Factor - 7.139

UGC Approved Journal
Sr. No. 64310



Edited By
Arun B. Godam
Latur, Dist. Latur-413512
(Maharashtra, India)
Mob. 8149668999

SHAURYA PUBLICATION

Latur
Publisher
Shaurya Publication

www.rjournals.co.in



Peer Reviewed

ISSN 2319-8648

Indexed (SJIF)

Impact Factor - 7.139

Current Global Reviewer

**UGC Approved International Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages**



**Editor in Chief
Mr. Arun B. Godam**





Current Global Reviewer

UGC Approved International Research
Refereed Multidiciplanary Journal

Editor In Chief
Mr. Arun B. Godam

ISSUE X Volume III (Half Yearly)

Published on Feb. 2017

Editorial Office Address :

Khadgaon Road, Kapil Nagar, Latur,
Dist. Latur 413512 (M.S.) India

Contact- 8149668999

Email-

hitechresearch11@gmail.com



Publisher

Shaury Publication

Kapil Nagar, Latur
Contact- 8149668999

Rs. 400/-

EXECUTIVE EDITORS

Dr. ChittaRanjan Panda

P.G. Deptt. Of Odia
Shailabala Women's Autonomous
College, Cuttack - (Orissa)

Dr. U.T. Gaikwad

Dept. of Geography,
Smt. S. D. M. College
Latur, Dist. Latur (M.S.)

MaimanatJahanAra

Head, Dept of Political Science,
Sir Sayyed College,
Aurangabad, Dist. Aurangabad

Dr M.U. Yusuf

Dept of Commerce,
Sir Sayyed College,
Auranbadad, Dist. Aurangabad

Dr. Hanumant Mane

R.Guide & Head,
Dept. of Marathi,
Shivchatrapati College,
Kalam, Dist. Osmanabad(M.S.)

B.J. Hirve

Dept. of botany
VasantMahavidyalaya,
Kaij, Dist. Beed. (M.S.)

Dr. PravinDiddeshwarShete
Dept. of Zoology, Maharashtra
UdaygiriMahavidyalaya, Udgir,
Dist. Latur

DrU.V.Panchal

H.O.D, Dept of Commerce,
Deogiri College,
Aurangabad, Dist. Aurangabad

Pro. S.B. Karande

Dept. of Economics,
ShriBhausahabVartak College,
Borivali (W), Dist. Mumbai.

Dr. SachinKadam

Dept. of Hindi
Nagarpalika Art D.J. Malpani Comm. &
B.N. Sarda Sci. College, Sangmner,
Dist. Ahmadnagar (M.S.)

www.rjournals.co.in



Editorial Board Member

Dr. N.J. Waghmare
Research Guide & Head,
Dept. of Pali,
Govt. Sanatketar College,
Shivani, (M.P.)

Dr. Bharat Handibag
Dean, Faculty of Arts,
Dr. B.A.M. University Aurangabad (M.S.)

Dr. U.T. Gaikwad
Dept. of Geography,
Smt. S. D. M. College
Latur, Dist. Latur (M.S.)

Pro. S.B. Karande
Dept. of Economics,
ShriBhauasahebVartak College,
Borivali (W), Dist. Mumbai.

B.J. Hirve
Dept. of botany
VasantMahavidyalaya,
Kaij, Dist. Beed. (M.S.)

Dr. Gopal S. Bhosale
Head, Dept. of Hindi,
Janvikas College,
Bansarola, Dist. Beed (M.S.)

Dr. B.T. Lahane
Principal, Head, Dept. of English,
SambhajiraoKendre College,
Jalkot, Dist. Latur (M.S.)

Dr.U.V.Panchal
H.O.D., Dept of Commerce,
Deogiri College,
Aurangabad, Dist. Aurangabad

Dr M.U. Yusuf
Assistant Professor,
Dept of Commerce,
Sir Sayyed College,
Aurangabad, Dist. Aurangabad

S. R. Uchale
Librarian,
ShriBhauasahebVartak College,
Borivali (W), Mumbai

S.R. Kadam
Head, Dept. of History,
Janvikas College,
Bansarola, Dist. Beed (M.S.)

Dr. Gopal S. Bhosale
Head, Dept. of Hindi,
Janvikas College,
Bansarola, Dist. Beed (M.S.)

Dr. Hanumant Mane
Research Guide & Head, Dept. of Marathi,
Shivchatrapati College,
Kalam, Dist. Osmanabad(M.S.)

Prof. Mohan S. Kamble
Dept. of Marathi,
JanvikasMahavidyalay,
Bansarola, Dist. Beed (M.S.)

Prof. Chitade Nandkishor
Dept. of Economics,
JanvikasMahavidyalay,
Bansarola, Dist. Beed (M.S.)

Dr. Koshidgewar Bhasker
H.O.D (Computer Science)
Vai. D.M. Deglurkar College,
Degloor, Dt. Nanded (M.S.)

Index

Sr. No.	Article Title	Author	Page No.
1	Innovative Teaching Methods And Their Significance	Dr. BalidUjwala Shimon	1
2	PLANT GROWTH PROMOTING ACTIVITY OF PYOVERDIN PRODUCEDBY PSEUDOMONAS RSML-37 INCHICKPEA	Vedpathak DV and KG Maske	5
3	Comparative Politics	MrsMaimanatJahanAra	10
4	Demonetization and Electronic Payment System	Prof .DurdanaSiddiqui	16
5	Digital payment system: Financial Literacy	MemonSohelMohd Yusuf	23
6	Impact of Digital Payment System and Social Life	SiddharthNisargandha	29
7	Women Empowerment	DrPadmapaniBhagwanSawai	37
8	Issues In Rural Community DevelopmentShambhuDutt	SharadSuryakantPawar	42
9	<i>In Vitro</i> Antagonistic Activity of <i>Trichoderma</i> species against <i>Macrophomina phaseolina</i> (Tassi) Goid	Dr. AithalSadanand V.	45
10	६ महाराणा प्रताप : एक मातृभक्त स्वाभिमानी योद्धा	देशमुख गंगाधर बालाजीराव	50
11	भाषांतर-अनुवाद प्रक्रियेचे स्वरूप	प्रा.डॉ. संतोष चंपतीहंकारे	55
12	छत्रपती शाहू महाराजांचे शैक्षणिक योगदान	डॉ. श्रीहरी दासु चव्हाण	59
13	संस्कृत बसवपुराण हस्तलिखितामध्ये वर्णिलेली महात्मा बसवेश्वराची आर्थिकसुधारणा	प्रा. शंकर धारबा घाडगे	62
14	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या विचारातील आदर्श समाज आणि वास्तवता	दिपाली चंद्रकांत पांडे	66
15	" बुद्धतत्त्वज्ञानाची मुख्य आधारतत्त्वे व नैतिक शिकवण "	डॉ. बालाजी मा. गव्हाळे	69
16	"महाराष्ट्रातील संत गाडगेबाबा ग्रामस्वच्छता अभियान : एक	प्रा. डॉ. श्यामसुंदर वाघमारे	75

	प्रशासकीय अभ्यास		
17	भारतीय दर्शनातील 'आत्म' विषयक संल्पना	प्रा. शितल रुद्रमनी येरुले	80
18	तत्त्वज्ञानाच्या अध्यापनातील अडचणी व उपाय	प्रा.माधवीबादाडे	84
19	जागतिकीकरणाची फलनिष्पत्ती	प्रा. डॉ. डी.बी. तांदुळजेकर	87
20	सूर काव्य में गीति तत्व	स.प्रा.डॉ. राजेशप्रल्हादरावआरदवाड	92
	औरंगजेबाची धर्मनिती	प्रा.डॉ. बी.एस. लासुरे	95



जागतिकीकरणाची फलनिष्पत्ती

प्रा. डॉ. डी.बी. तांदुळजेकर
अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख, श्री शिवाजी महाविद्यालय, परमणी
(१९)

प्रस्तावना :

१९३९ ते १९४८ पर्यंत दुसरे महायुद्ध चालले. दुसऱ्या महायुद्धानंतर जगाचा आर्थिक विकास ठप्प झाला होता. दुसऱ्या महायुद्धानंतर जगातले बहुतेक राष्ट्र स्वतंत्र झाली. भारतालाही दुसऱ्या महायुद्धानंतर १५ ऑगस्ट १९४७ ला स्वातंत्र्य मिळाले आणि स्वातंत्र्याबरोबरच देशाची फाळणी होऊन भारत पाकिस्तान असे दोन देश जगाच्या नकाशावर अस्तित्वात आले. १९५१ च्या जनगणनेनुसार फाळणीनंतर पाकिस्तानमधून भारतामध्ये स्थलांतरीत झालेल्या लोकांची संख्या ही ७३ लक्ष इतकी होती, तर फाळणीनंतर भारत पाकिस्तान मध्ये हिंदू मुस्लिम ज्या दंगली झाल्या त्यामध्ये जवळ जवळ २५ लक्ष लोक मारले गेले. १ भारत पाकिस्तान फाळणीचा परिणाम म्हणून १९४७ - ४८ मध्ये भारत पाकिस्तान यांच्यामध्ये पहिले युद्ध झाले ते वेगळेच. पुढे १९६५ मध्ये चीन बरोबर आणि १९७१ मध्ये पुन्हा पाकिस्तान बरोबर भारताला युद्ध करावे लागले. याचा परिणाम भारताच्या अर्थव्यवस्थेवर खूप मोठ्या प्रमाणावर झाला. दुसऱ्या महायुद्धानंतर स्वतंत्र झालेल्या राष्ट्रांची सैद्धांतिक आणि आर्थिक विचारावर आधारित दोन भागामध्ये विभागणी झाली. एक म्हणजे अमेरिका आणि त्यांचा भांडवलशाही पुरस्कृत एक गट आणि दुसऱ्या बाजूला समाजवादाचा पुरस्कार करणारा सोव्हियत रशिया आणि समाजवादाचा पुरस्कार करणारा समाजवादी विचारसरणीवर आधारित गट. कार्ल मार्क्सच्या विचारसरणी असलेल्या राष्ट्रातील सर्व तज्ञ आणि गटांना असे वाटत होते की, लोकांच्या दुःख आणि दारिद्र्याला भांडवलदार वर्ग जबाबदार आहे. त्यामुळे क्रांती करून भांडवलदार वर्ग आणि भांडवलशाही जगातून नष्ट केली पाहिजे. भांडवलशाहीचा कितीही विकास झाला तरी भांडवलशाहीच्या विकासामध्येच भांडवलशाहीच्या विनाशाची बीजे पेरली जातात, त्यामुळे एक ना एक दिवस भांडवलशाहीचा विनाश हा निश्चित आहे. २ त्यामुळे जगाचे आणि गरीब माणसाचे कल्याण करण्यासाठी समाजवादाला, मार्क्सवादाला पर्याय नाही.

दुसऱ्या बाजूला भांडवलशाहीचा पुरस्कार करणारा गट आणि अमेरिका व्यक्ती, राष्ट्र आणि विश्वाच्या कल्याणासाठी भांडवलशाही अर्थव्यवस्था कशी उपयुक्त आहे हे आपल्या धोरणाच्या आणि लॉर्ड केन्सच्या अर्थशास्त्राचा हवाला देऊन सांगत होते. ३ तर भारतासारखा देश अलिप्तवादी चळवळीच्या माध्यमातून मिश्र स्वरूपाची अर्थव्यवस्था हा नवा प्रयोग जगासमोर (विकसनशील राष्ट्र) ठेवण्याचा प्रयत्न करत होते.

जगाच्या पाठीवर समाजवाद, भांडवलशाही, अलिप्तवाद ही खलबते सुरु असताना जगातील २३ राष्ट्रांचा एक गट जागतिक पातळीवर एकत्र आला आणि त्यांनी एक करार केला तो म्हणजे जनरल अॅग्रीमेंट ऑन टॅरीफ अॅन्ड ट्रेड. १९४८ ला एकत्र येऊन (GATT) ची स्थापना करण्यात आली. सभासद राष्ट्रांच्या मध्ये औद्योगिक क्षेत्रातील ज्या वस्तूचा आंतरराष्ट्रीय व्यापार होतो त्या व्यापाराच्या अटी आणि शर्ती ठरविण्याचा अधिकार सभासद राष्ट्रांनी गॅटला दिला आणि याच ठिकाणी खऱ्या अर्थाने जागतिकीकरणाचा, उदारीकरणाचा पाया रचला गेला. ४ भारत हा गॅटचा संस्थापक सदस्य आहे. याचा अर्थ भारतानेही उदारीकरणाची सुरुवात ही १९४८ मध्येच GATT च्या माध्यमातून केलेली आहे हे विसरता येत नाही.

१९५०-५१ मध्ये भारतात नियोजनाला सुरुवात करण्यात आली. नियोजन आयोग, वित्त आयोग, देशाची मध्यवर्ती बँक यांच्या माध्यमातून देशामध्ये राज्यस्व आणि मौद्रिक नितीला सुरुवात करून पंचवार्षिक योजनांच्या माध्यमातून योजनांची आखणी आणि अंमलबजावणी देशामध्ये सुरु झाली.

पंडीत जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी यांनी सुरुवातीला समाजवादाला झुकते माप देत असताना देशामध्ये सार्वजनिक क्षेत्रामध्ये नवरत्न उद्योग, रेल्वे, टपाल, विमान, जहाज, बँकांचे राष्ट्रीयकरण, विमा उद्योग, बिगर वित्तीय संस्थांची

स्थापना करून भारतीय अर्थव्यवस्था ही समाजवादी समाजरचनेकडे वाटचाल करणारी असेल असे आपल्या नियोजनातून दाखवून दिले.

जगामध्ये १९५०-५१ पासून ज्या ज्या राष्ट्रांमध्ये समाजवादी आर्थिक धोरण स्विकारले त्या राष्ट्रांचा आर्थिक विकास आणि ज्या राष्ट्रांनी भांडवलशाही पुरस्कृत धोरण स्विकारले त्या राष्ट्रांच्या पुढील ३० ते ३५ वर्षांच्या कालखंडात इतकेच आर्थिक विकास यामध्ये खूप मोठे अंतर दिसू लागले. भांडवलशाही अर्थव्यवस्था स्विकारलेल्या राष्ट्रांचा विकासदर चांगला झाला. त्यांचे राष्ट्रीय उत्पन्न आणि दरडोई उत्पन्नामध्ये वाढ झाली तर दुसऱ्या बाजूला सोव्हियत रशियाचे तुकडे इतकेच झाले. चीनसारख्या राष्ट्राने समाजवादी धोरणाचा त्याग केला तर भारतीय अर्थव्यवस्था आणि भारतीय नियोजनकार देशाला अन्नधान्याच्या बाबतीत देशाला स्वयंपूर्ण करू शकली नाहीत. १९५०-५१ ते १९७९-८० या कालखंडात राष्ट्रीय उत्पन्न वाढीचा दर हा अत्यंत निराशाजनक झाला होता. पहिल्या पंचवार्षिक योजना कालखंडामध्ये २.६ टक्के, दुसऱ्या पंचवार्षिक कालखंडामध्ये १.७ टक्के, तिसऱ्या पंचवार्षिक कालखंडामध्ये ०.४ टक्के, चौथ्या पंचवार्षिक कालखंडामध्ये ०.८ टक्के, पाचव्या आणि सहाव्या पंचवार्षिक योजना कालखंडामध्ये २.६ टक्के आणि ३.१ टक्के झाला होता. ५ या गतीने राष्ट्रांचा विकास होणार असेल तर देशातील गरीबी, उपासमारी, दारिद्र्य, निरक्षरता, विषमता, रोजगार या पातळीवर निराशाजनक परिस्थिती निर्माण झाली. तर दुसऱ्या बाजूला अंदाजपत्रकीय तूट, विदेशी कर्जाचा बोजा, प्रतिकूल व्यापारतोल, रुपयाचे मूल्य इ. प्रश्न भारतीय अर्थव्यवस्थेसमोर आणून उभे होते. आणि अशा परिस्थितीमध्ये जागतिक पातळीवर गॅटचे सरसंचालक डॅकेल यांनी एक प्रस्ताव मांडला जो की डॅकेल प्रस्ताव म्हणून आपणास माहित आहे.

सप्टेंबर १९८६ ला उरुगे ला गॅट ची आठवी फेरी सुरु झाली आणि आर्थर डॅकेल यांनी या फेरीमध्ये एक प्रस्ताव ठेवला. आंतरराष्ट्रीय व्यापाराच्या अटी आणि जकाती पारंपारिक औद्योगिक क्षेत्रामध्ये निर्माण होणाऱ्या वस्तूंबरोबरच शेती क्षेत्रामध्ये निर्माण होणाऱ्या वस्तू, शेतीसाठी लागणाऱ्या फर्टीलायझर, केमिकल्स, बी-बियाणे, शेतीसाठी दिली जाणारी अनुदाने, सेवा क्षेत्रामध्ये दिल्या जाणाऱ्या सेवा, गुंतवणूक, बौद्धिक संपदा कायदा, आंतरराष्ट्रीय वाद विवाद, तंटे, गॅटची कार्यप्रणाली इ. सर्व विषय GATT च्या उरुगे फेरीमध्ये डॅकेल प्रस्तावाच्या माध्यमातून सभासद राष्ट्रांच्या समोर ठेवण्यात आले. १९८६ ते १९९० पर्यंत त्यावर सभासद राष्ट्रांनी प्रदिर्घ चर्चा केली आणि शेवटी सर्व सभासद राष्ट्रांनी तो प्रस्ताव मान्य केला आणि शेवटी सर्व सभासद राष्ट्रांनी तो प्रस्ताव मान्य केला आणि खऱ्या अर्थाने सभासद राष्ट्रांनी आपली अर्थव्यवस्था खुली केली ज्याला आपण जागतिकीकरण, खुले धोरण, मुक्त अर्थव्यवस्था असे म्हणतो. ६

जागतिकीकरणाची फलनिष्पत्ती :

१) औद्योगिक क्षेत्रातील वस्तूची निर्यात वृद्धी :

जागतिकीकरणाचा मुळात उद्देशच असा आहे की, सभासद राष्ट्रांच्या आंतरराष्ट्रीय व्यापारामध्ये वृद्धी झाली पाहिजे. १९९५ ते २०१४ या १९ वर्षांच्या कालखंडामध्ये भारताच्या औद्योगिक क्षेत्रातील वस्तूची निर्यात ही ३३.१ टक्क्यांनी वाढलेली आहे. ही निर्यात ३०.६३ बिलियन डॉलर वरून ३१७.४ बिलियन अमेरिकन डॉलर इतकी झालेली आहे. जागतिक बाजारपेठेमध्ये औद्योगिक क्षेत्रातील एकूण वाटा हा १९९५ मध्ये ०.५९ टक्के इतका होता तो वाढून २०१४ मध्ये १.६ टक्के इतकेच झालेला आहे. आणखी या क्षेत्रामध्ये वृद्धी करण्यास भारतीय उद्योग क्षेत्राला खूप मोठा वाव आहे. ७

२) सेवा क्षेत्राची निर्यात वृद्धी :

सॉफ्टवेअर क्षेत्रामध्ये झालेल्या क्रांतीचा फायदा विविध स्वाफ्टवेअर सेवा देऊन भारताने करून घेतलेला आहे. जगामध्ये सॉफ्टवेअर सेवा देणारा भारत हा एक प्रमुख देश आहे. विविध सेवांची निर्यात करून भारताने सन १९९५ मध्ये १०.० बिलियन अमेरिकन डॉलरची निर्यात केली होती. त्यामध्ये सन २०१४ मध्ये वाढ होऊन ती १५६.२ बिलियन अमेरिकन डॉलर इतकी झाली. याचा अर्थ या क्षेत्रामध्ये १९९५ ते २०१४ या कालखंडामध्ये १५.५ टक्क्यांची वाढ झालेली आहे. हा जागतिकीकरणाचा भारतीय अर्थव्यवस्थेला झालेला फायदा आहे. ८

३) परकीय गुंतवणूक :

कोणत्याही विकसनशील राष्ट्राला आपल्या अर्थव्यवस्थेला गती देण्यासाठी परकीय गुंतवणूकीची आवश्यकता असते. विकसनशील राष्ट्राकडे बचत ही कमी असल्या कारणाने गुंतवणूकीला मर्यादा येतात. गुंतवणूकीच्या माध्यमातून



गुंतवणूक गुणकामध्ये वाढ करून उत्पादन, उत्पन्न, बचत, गुंतवणूकीच्या माध्यमातून रोजगार निर्मिती करून राष्ट्रीय, उत्पन्न वाढीला प्रतिपुष्टी देणे शक्य होत असते. १९९१ -९२ मध्ये खुल्या आर्थिक धोरणाचा पुरस्कार केल्यानंतर परकीय गुंतवणूकीचा ओढ भारतामध्ये वाढल्याचे दिसून येते. परकीय गुंतवणूक आणि दोन म्हणजे परकीय अप्रत्यक्ष गुंतवणूक अर्थव्यवस्थेच्या विकासासाठी या दोन्ही प्रकारच्या परकीय गुंतवणूकीची विकसनशील राष्ट्राला आवश्यकता ही अमतेच यामध्ये जी प्रत्यक्ष परकीय गुंतवणूक असते ती विकसनशील राष्ट्राची उत्पादनक्षमता वाढविण्यास मदत करत असते तर अप्रत्यक्ष गुंतवणूक ही विकासाला चालना ही देत असते.

भारतामध्ये १९९०-९१ ते १९९४-९६ या कालखंडामध्ये परकीय प्रत्यक्ष आणि अप्रत्यक्ष गुंतवणूक ही अनुक्रमे २४४१ (२४.२) आणि ७६४५ (७५.८) तर १९९५-९६ ते १९९९-२००० या कालखंडामध्ये १३१३९ मिलियन अमेरिकन डॉलर (१३.१३) आणि ७६४५ (७५.८) तर अप्रत्यक्ष गुंतवणूक ही १०८५३ मिलियन अमेरिकन डॉलर (४५.२) इतकी झाली आणि २०००-२००१ ते २०१४-१५ या कालखंडात परकीय प्रत्यक्ष आणि अप्रत्यक्ष परकीय गुंतवणूक ही ३१७२४२ मिलियन अमेरिकन डॉलर (६०.०) आणि २११८४८ मि. डॉलर (४३.०) इतकी झाली याचा अर्थ १९९०-९१ ते २०१४-१५ या कालखंडामध्ये भारतातील परकीय गुंतवणूक मग ती प्रत्यक्ष असो वा अप्रत्यक्ष असो वाढत गेलेली आहे. परकीय गुंतवणूक हे खरे तर विकासाचे इंजिनच असते. त्यामुळे या कालखंडात भारतीय अर्थव्यवस्थेचा विकासच झाला. हे एक जागतिकीकरणाचे फलित म्हणून मांगता येते.

४) रोजगार निर्मिती :

विकसनशील राष्ट्रांच्या समोर बेरोजगारी हा नेहमीच चिंतेचा आणि चिंतनाचा विषय राहिलेला आहे. लॉर्ड केन्स यांनी आपल्या द जनरल थेरी ऑफ इंपायमेंट इंटररेस्ट अँड मनी नावाच्या ग्रंथामध्ये रोजगारासाठी गुंतवणूक हेच इंजिन असू शकते असे स्पष्ट केलेले आहे. बचत गुंतवणूकीच्या मार्गाने रोजगाराकडे जाता येत असते. जागतिकीकरणाचे धोरण स्वीकारल्यानंतर अपेक्षित रोजगार वृद्धी ही झाली नाही. भारतामध्ये शेती क्षेत्रामध्ये जवळजवळ ६५ टक्के लोक काम करतात. जागतिकीकरणानंतर शेती क्षेत्रातील रोजगार कमी झालेला आहे. बांधकाम क्षेत्र, व्यापार क्षेत्र, वाहतूक, सातवणूक आणि दुरसंचार क्षेत्रामध्ये मात्र १९९३-९४ नंतर वाढ झालेली आहे. १९८३-९४ या कालखंडाची तुलना १९९४-२००० शी केली असता भारतातील रोजगार हा ०.९५ टक्के रोजगारात घट झालेली आहे. १०

५) विषमता आणि गरीबी :

लोकांच्या दुःख आणि दारिद्र्याला राज्यसंस्था ही जबाबदार असते असे म्हटले गेले. गरीबी, दारिद्र्य आणि आर्थिक विषमतेला जबाबदार कोण? गरीबी, दारिद्र्य आणि विषमता कमी कशी करता येईल? परमेश्वराने तर प्रत्येक व्यक्तीला जन्मतः सारखाच न्याय दिलेला आहे मग वेगवेगळ्या लोकांच्यामध्ये एवढी विषमता, गरीबी कशामुळे, कोणामुळे निर्माण झाली यावर आजपर्यंत अनेक संशोधने झालेली ओत. शासन व्यवस्था, समाज व्यवस्थाच गरीबी, विषमता आणि दारिद्र्याचे मुळ उगमस्थान असते. कधी धर्माच्या नावाने कधी जातीच्या, कधी लिंगभेद तर कधी भाषा, प्रांत, पुढे करून शिक्षण, संपत्ती अधिकारापासून लोकांना दुर ठेवले जाते त्यातून गरीब आणि गरीबी ही जन्माला आलेली आहे. रोजगार, रोजगाराच्या संधी, गरीबी, दारिद्र्य आणि विषमता हे एकमेकाशी अत्यंत गुंतागुंतीचे विषय राहिलेले आहेत. सरकार, सरकारचे आर्थिक धोरण त्या धोरणातील बदल याचा गरीबी, दारिद्र्य, विषमता आणि रोजगार यावर काय आणि कसा परिणाम होईल हे सांगणे तीतकेशे सहज आणि सोपे नाही.

संसाधनाची उपलब्धता, संधी आणि निवडीचे स्वातंत्र्य, शिक्षण आणि शिक्षणाचा दर्जा, उत्पन्न आणि उत्पन्नाची वाटणी या आणि अशा अनेक घटकाशी बेकारी, दारिद्र्याचा संबंध असतो. जागतिकीकरणामुळे गरीबी, दारिद्र्य, विषमता वाढली की कमी झाली याचे ठामपणे स्पष्टीकरण देऊ शकत नाहीत, एवढे मात्र नक्की सांगू शकतो की जागतिकीकरणानंतर देशातील दारिद्र्य रेषेखाली जगणाऱ्या लोकांचे प्रमाण पुर्वीच्या मानाने कमी झाले की जास्त झाले. प्रत्यक्ष आकडेवारीचा आधार घेतला असता १९९३-९४ नंतर दारिद्र्य रेषेखालील लोकांचे प्रमाण हे कमी झालेले आहे.

भारतातील दारिद्र्य रेषेचा घटता दर

वर्ष	ग्रामीण	शहरी	एकूण
१९९३-९४	५०.१	३१.८	३६.०० %
१९९९-००	--	--	२६.०० %
२०११-१२	२५.७	१३.७	२१.९ %

जेव्हा भारतामध्ये उदारीकरणाला सुरुवात करण्यात आली तेव्हा देशामध्ये जवळ जवळ ३६ टक्के लोक हे आपले जीवन दारिद्र्यरेषेखाली व्यथित करत होते. १९९९-२००० पर्यंत जवळ जवळ १० टक्के लोक दारिद्र्यरेषेच्या वर येऊन हेच प्रमाण २६ टक्के इतके झाले. २०११-१२ पर्यंत दारिद्र्य रेषेखाली जिवन व्यथित करणाऱ्या लोकांचे प्रमाण कमी झालेले आहे. हे एकंदरीत भारतीय नियोजनाचे फलित आहे त्याला उदारीकरणाचा थोडासा हातभार लागला एवढे मात्र नक्की.११

६) आर्थिक वृद्धी दर :

समाजवादी समाजरचनेकडे वाटचाल करणाऱ्या भारतीय आर्थिक नियोजनाचे फलित हे १९५०-५१ ते १९८०-८१ पर्यंत भारतीय अर्थव्यवस्थेचा विकास दर हा जेमतेम सरासरी १.४९ टक्के इतकाच राहिला. हा विकासदरच भारतीय आर्थिक नियोजनाचे अपयश सांगण्यासाठी पुरेसा आहे. एकतर देशावरील परकीय कर्जाचा बोजा मोठ्याप्रमाणावर वाढला होता. दुसऱ्या बाजूला सार्वजनिक क्षेत्रामध्ये काम करणाऱ्या उद्योग आणि सेवा क्षेत्राचा होणारा नुकसानीचा दर ही वाढला होता. शेजारी राष्ट्रांबरोबर संबंध हे चांगले नसल्याकारणाने उद्ध्वाराचा खर्च वाढला होता, हा सर्व खर्च भरून काढण्यासाठी अंदाजपत्रकामध्ये मोठ्या प्रमाणावर खर्च करावा लागत होता. या खर्चापोती ८० टक्के ते ९० टक्क्यांपर्यंत भारत सरकारचा खर्च गेला होता आणि विकासकामासाठी सरकारकडे जेमतेम १० टक्के उत्पन्न शिल्लक राहत होते आणि अशा परिस्थितीमध्ये जागतिक वित्तीय संस्थांनी मदत देण्याचे थांबविले होते. उदारीकरणानंतर भारतीय अर्थव्यवस्थेच्या विकास दरामध्ये जागतिक वित्तीय संस्थांनी मदत देण्याचे थांबविले होते. उदारीकरणानंतर भारतीय अर्थव्यवस्थेच्या विकास दरामध्ये वाढ ही झालेली आहे. २४ जूलै १९९१ ला देशामध्ये उदारीकरणाला सुरुवात झाली आणि त्यानंतरच्या दोन दशकामध्ये विकासदर हा समाधानकारक राहिलेला आहे. २००३, २००५, २००६, २००७ आणि २०१६ या सालामध्ये भारताचा विकास दर हा अनुक्रमे ८.३, ८.४, ९.२, ९.१ आणि ८.० टक्के इतका राहिलेला आहे. १२ उदारीकरणाच्या पूर्वी असा समाधानकारक विकासदर भारतीय अर्थव्यवस्थेचा राहिलेला नाही. खरे तर हे उदारीकरण धोरणाचे फलितच म्हणावे लागेल.

६) अन्नधान्याच्या बाबतीत स्वयंपूर्णता :

१९९०-९१ पर्यंत देशाला मिळून चार दशक पूर्ण झालेली असतानाही आपण अन्नधान्याच्या बाबतीत स्वयंपूर्ण झालो नव्हतो. १९६७-६८ मध्ये देशात झालेल्या हरीत क्रांतीने अन्नधान्याचे उत्पादन वाढले असले तरी ते वाढत्या लोकसंख्येला पुरेशे होत नव्हते. गव्हाचे, कापसाचे, उसाचे उत्पादन वाढत असताना तेलबियांच्या संदर्भात नेहमीच तूट जाणवत होती. १९९०-९१ नंतर भारतीय अर्थव्यवस्थेच्या कृषि क्षेत्रामध्ये खाजगी आणि सार्वजनिक गुंतवणूक ही वाढत गेली आणि त्यानंतरच्या कालखंडात भारत देश अन्नधान्याच्या बाबतीत स्वयंपूर्ण होऊन अधिकचे अन्नधान्य निर्यात होऊ लागले. तर दुसऱ्या बाजूला भारत सरकार अन्न सुरक्षा कायदा करून कोणीही उपाशी झोपणार नाही याची व्यवस्था सरकार करू शकले. १९९०-९१ नंतर कृषिक्षेत्रामध्ये शेती क्षेत्रात झालेली गुंतवणूक आणि त्याचा परिणाम म्हणून विविध शेतमालाचे उत्पादन कसे वाढत गेले याचा आढावा हा पुढीलप्रमाणे आपणास देता येतो. १९८०-८१ मध्ये खाजगी आणि सार्वजनिक क्षेत्राची मिळून ४६४० कोटी रूपयाची गुंतवणूक होती. १९९०-९१ मध्ये त्यात वाढ होऊन १४८४० कोटी रु. झाली. पुढे २००४-०५ मध्ये तर ती ११०००६ कोटी इतकी गुंतवणूक झाली. पुढील काळात ही गुंतवणूक वाढीव दराने झाली त्याचा परिणाम म्हणून खाजगी तसेच सार्वजनिक गुंतवणूक शेती क्षेत्रामध्ये झाल्यामुळे अन्नधान्य, तेलबिया, उस, कापूस आणि ज्युटच्या उत्पादनामध्ये १९९० च्या मानाने पुढील काळात झालेली वाढ अत्यंत समाधानकारक असल्यामुळेच आज आपण अन्नधान्याच्या बाबतीत स्वयंपूर्ण झालो आहोत हे मात्र खरे.



संदर्भ :

1. Loksatta.com
2. अर्थिक विचारांचा इतिहास, के.एच. ठक्कर
3. अर्थात, अच्युत गोडबोले
4. Indian Economy, Datta Sundharam, p.no. 843
5. CSO, National Accounts Statistics and Economic survey (2012-13)
6. Indian Economy, Datta Sundharam, p.no. 844
7. कित्ता, पृ. २७८
8. कित्ता, पृ. २७८
9. कित्ता, पृ. २७८
10. Govt. of India Planning Commission (2001), Report of the Taskforce on Empowerment opportunities, Table 3.2
11. Indian Economy, Datta Sundharam, p.no. 34-35
12. कित्ता, पृ. ३४-३५
13. Indian Economy Table 12, p.No. 544.

Current Global Reviewer

ISSN 2319-8648

Peer Reviewed

Impact Factor - 7.139

UGC Approved Journal
Sr. No. 64310



Edited By
Arun B. Godam
Latur, Dist. Latur-413512
(Maharashtra, India)
Mob. 8149668999



Publisher
Shaurya Publication

www.rjournals.co.in



Impact Factor-7.675 (SJIF)

ISSN-2278-9308

B.Aadhar

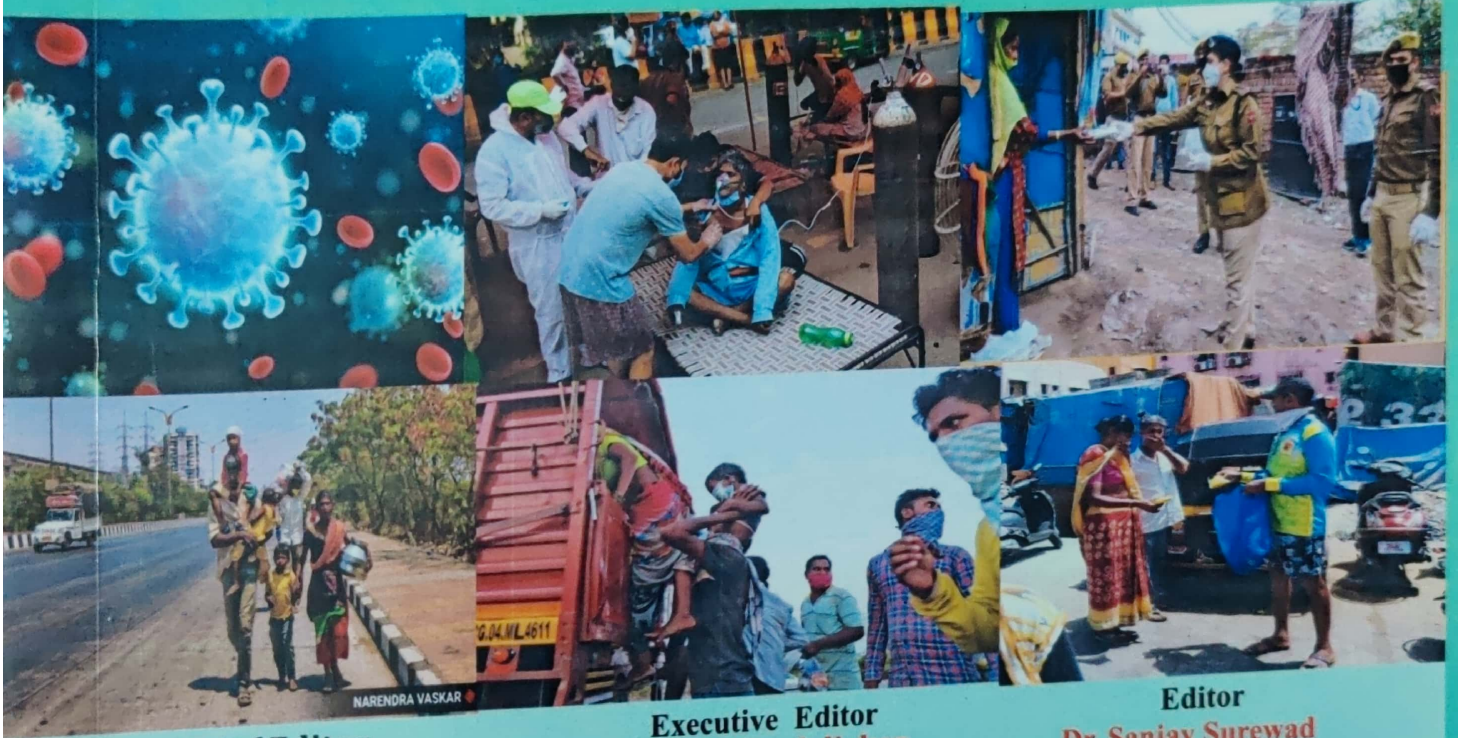
Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

October-2021

ISSUE No- (CCCXXII) 322

२१व्या सतकातील कोरोना महामारीच्या काळात सध्यास्थितीत
निर्माण झालेल्या समकालीन सामाजिक समस्या



Chief Editor

Prof. Virag S. Gawande

Director

Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Executive Editor

Dr. D. B. Tanduljekar

I/C Principal

Yeshwantrao Chavan College,
Ambejogai, Dist.- Beed

Editor

Dr. Sanjay Surewad

Head, Department of Sociology,
Yeshwantrao Chavan College,
Ambejogai, Dist.- Beed



This Journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar PUBLICATIONS



Scanned with OKEN Scanner

B.Aadhhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

October -2021

ISSUE No- (CCCXXII) 322

२१ व्या शतकातील कोरोना महामारीच्या काळात सद्यस्थितीत निर्माण

झालेल्या 'समकालीन सामाजिक समस्या'

Prof. Virag.S.Gawande

Chief Editor

Director

Aadhhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Dr. D. B. Tanduljekar

Executive Editors

I/C Principal

Yeshwantrao Chavan College, Ambejogai, Dist.- Beed

Dr. Sanjay Surewad

Editor

Head, Dept. of Soc.

Yeshwantrao Chavan College, Ambejogai, Dist.- Beed

Aadhhar International Publication

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

© All rights reserved with the authors & publisher

INDEX

No.	Title of the Paper	Authors' Name	Page No.
1	A Sociological Analysis of Criminalization of Politics: Patriarchal Nature of Contemporary Political Parties in India	Dr. Bharat Masaji Kamble	1
2	Necessity of Teaching and Learning Poetry in School, College and University Level With Deep Concentration	Dr Mukund S. Rajpankhe	5
3	Cultural Disparity in Jhumpa Lahiri's Namesake.	Dr. Ahilya B. Barure	11
4	The National Monetization Pipeline Policy and its impacts on Democratic Socialism in Contemporary India: A Sociological Analysis	Jondhale Sudarshan Sureshrao	14
5	Public Health : Responsibility of an Individual and Society	Dr. Narhari G. Patil	19
6	Importance Of Women S` Leadership In Sports	Dr.Arak Vandana Damodhar	22
7	Climate Change: Impact on Agriculture in India	Amar Youraj Bhumbe	24
8	Contribution of social infrastructure in development of rural India	Prof. More Pravin	27
9	“Status of Women In Free India”	Dr. Vaishali E. Aher	30
10	Public Health Nutrition In India	Dr. Ragini Rajendra Padhye	32
11	Significance of Human Right	Dr. Manoj Uttamrao Patil	36
12	A Study of Aggression Level among School Going Students and Military school Students.	Sangita Kacharu Wadode	40
13	Rural Sanitation Programs and Public health in India -A Sociological study	Dr. Pradeep D. Patil	44
14	“A Study Of Recent Major Challenging Issues In Higher Education In India”	Miss Vaishali R. Sarnikar	49
15	Contribution of Social infrastructure in Rural development - With referenceto primary education in India	Prof. More Pravin	54
16	Suffering of Elders and Children : Domestic Humiliation in the Families of the Whole World.	Swapnil Mukundrao Rajpankhe	58
17	भारत की सुरक्षा के समक्ष चुनौतियाँ	Dr. Alpana Vaidya	62
18	मैत्रेयी पुष्पा पुष्पा के 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास के प्रमुख पात्र अल्मा के संदर्भ में	प्रा. व्ही. बी. खाडे /डॉ. अलका श्री डंगे	65



19	काया-स्पर्श : मनोविश्लेषण का साहित्यिक दस्तावेज	डॉ. रमेश माणिकराव शिंदे	67
20	पुरुष केंद्रित अर्थनीति और भारतीय नारी	डॉ. अरविंद अंबादास घोडके	70
21	उपन्यास में चित्रित प्रेम में असफल पुरुष पात्र (विशेष संदर्भ : आना इस देश- कृष्णा अग्निहोत्री)	शेख अली जाफर	72
22	कोरोणा महामारी आणि भारतीय अर्थव्यवस्था	प्रो. डॉ. डी. बी. तांदुळजेकर	74
23	साहित्यातील वृद्धांची समस्या(उपरे : एकांकिका)	डॉ. विठ्ठल केदारी	76
24	कोरोना काळाचा शिक्षणावर झालेला परिणाम	डी.एन.रिठे	78
25	सामाजिक स्तरीकरण	डॉ. साधना लांजेवार	81
26	भारतीय समाजातील वृद्धांच्या समस्या : कारणे व उपाय	प्रा. डॉ. टी. आर. फिसफिसे	84
27	आंध्र जमातीच्या शैक्षणिक समस्या	प्रा.डॉ. गितांजली सदाशिवराव मोटे	90
28	संगीत क्षेत्रातील समस्या व आन्हाने	प्रा. डॉ. शिवदास विठ्ठलराव शिंदे	95
29	कोरोना काळातील वाढते महिला अत्याचार : एक आढावा	डॉ. विलास चव्हाण	98
30	भारताची लोकसंख्या वाढ : एक सामाजिक समस्या	सुप्रिया गणपतराव गडलवाड	101
31	आरोग्य	प्रा. ततापुरे जे.जी.	104
32	आत्महत्येची समस्या	श्रीमती. धुमाळ सीमा काशिनाथराव	107
33	स्त्रीश्रुण हत्या : एक सामाजिक समस्या	प्रा. संजय सुरेवाड	109
34	सामाजिक स्तरीकरण	कुमिदिनी जोशी रामचंद्र याडाराम	112
35	हुंडा बळी एक सामाजिक समस्या	प्रा. डॉ. अनंत दादाराव मरकाळे	116
36	संत रविदासांच्या काळातील धार्मिक स्थिती	डॉ. मिलिंद बळीरामजी भगत /नितिीन आनंदराव अंडेलकर	119
37	भारतीय संविधानातील मूलभूत हक्क आणि सामाजिक न्याय	श्रीकांत दिनकर तांदळे /प्रो. डॉ.डी.आर.तांदळे	124
38	केंद्रीय कार्यशाळा ताडाळी येथील कर्मचा-यांच्या कार्यसमाधानकारकतेचे अध्ययन	प्रिया कृपाशंकर निमजे / प्रा. डॉ. फुलचंद वासुदेव निरंजने	128
39	ग्रामीण महाराष्ट्रातील पारंपरिक समाजसंरचनेत दलित व सवर्ण यांच्या संबंधातील सातत्य आणि बदल : एक समाजशास्त्रीय अभ्यास	डॉ. नागोराव आर.कांबळे	132
40	कोविड-१९, भारतीय पर्यटना समोरील आन्हाने : एक राजकीय अध्ययन	स्वामी विरभद्र गुरप्पा	136
41	स्त्रीश्रुणहत्या : एक सामाजिक समस्या	प्रल्हाद दत्तराव भोपे	141



कोरोणा महामारी आणि भारतीय अर्थव्यवस्था

प्रो. डॉ. डी. बी. तांदुळजेकर

प्रो. डॉ. डी. बी. तांदुळजेकर

प्रो. डॉ. डी. बी. तांदुळजेकर, यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, अंबाजोगाई, जि. बीड

प्रो. डॉ. डी. बी. तांदुळजेकर, यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, अंबाजोगाई, जि. बीड

प्रो. डॉ. डी. बी. तांदुळजेकर, यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, अंबाजोगाई, जि. बीड

प्रो. डॉ. डी. बी. तांदुळजेकर, यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, अंबाजोगाई, जि. बीड

प्रो. डॉ. डी. बी. तांदुळजेकर, यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, अंबाजोगाई, जि. बीड

शोधनिबंधाचे शिर्षक

'कोरोणा महामारी आणि भारतीय अर्थव्यवस्था'

प्रस्तुत शोधनिबंधासाठी पुढील उद्दिष्ट्ये

१. भारतातील कोरोना पूर्व अर्थव्यवस्थेचा अभ्यासणे.

२. भारतातील कोरोना नंतर चा अभ्यास करणे.

३. कोरोना महामारी मुळे भारतीय अर्थव्यवस्थेसमोर निर्माण झालेल्या संकटाचा आणि समस्यांचा अभ्यास करणे.

गृहितकृत्ये :-

१. कोरोनाची पार्श्वभूमी जाणून घेणे.

२. भारतातील कोरोना पूर्व अर्थव्यवस्थेचा व कोरोना नंतर अर्थव्यवस्थेचा

३. भारतातील कोरोना महामारीने अर्थव्यवस्थेत बऱ्याच बदल झाला आहे.

प्रस्तुत शोध लेखासाठी वर्णनात्मक व विश्लेषणात्मक संशोधन पध्दतीचा वापर करण्यात आला आहे.

तथ्य संकलन :-

तथ्य संकलनासाठी दुय्यम साधनांचा वापर म्हणजे शासकीय अहवाल, संदर्भ ग्रंथ, मासिके, वर्तमानपत्रे, संकेतस्थळ इत्यादी दुय्यम स्त्रोतांचा वापर करण्यात आला आहे. प्रस्तुत शोधलेखात 'कोरोना महामारी आणि भारतीय अर्थव्यवस्था' वास्तव परिस्थिती व अपेक्षित स्थिती यांचे विश्लेषण करण्यात आले आहे. एकविसाव्या शतकात तंत्रज्ञानाच्या झपाट्याने विकास व विस्तार होत असताना भारतासारख्या विकसनशील अर्थव्यवस्थेला जागतिक अर्थव्यवस्थेमध्ये टिकून राहणे आवश्यक आहे.

कोरोना मुळे बऱ्याच देशांवर नैसर्गिक आपत्ती कोसळली. त्यात तर कोरोना या महामारीने तर जागतिक रूप धारण केले. बहुतांश देशांत कोरोना या महामारीचा फैलाव झालेला आहे. त्याचबरोबर महापूर, भूकंप, इत्यादी मोठ्या आपत्तीमुळे उत्पादन कमी झाले. कोरोनामुळे भारतामध्ये चलनाची सातत्याने डॉलराच्या तुलनेत घसरण झाली आहे. आंतरराष्ट्रीय बाजारात भारताचा रूपयाचा विनिमय दर प्रति डॉलर ७५ रूपयापर्यंत घसरला आहे. त्यामुळे भारताला आयात वस्तूसाठी अधिक किंमत मोजावी लागते. त्याचा परिणाम भारतामध्ये बऱ्याच महत्वाच्या वस्तूच्या किंमती वाढल्या आहेत. कोरोना कारणामुळे सरकारचा अनावश्यक खर्च हा वाढला त्यामुळे शासनाच्या तिजोरीवर तान पडल्यामुळे इतर कल्याणकारी योजना च्या खर्चात कपात करावी लागली. आंतरराष्ट्रीय बाजारातील खनिजतेलाच्या वाढत्या किंमतीमुळे भारतात महागाई निर्माण झाली. पेट्रोलियम, तेल व वंगणाच्या आयात खर्चात वाढ झाली. परिणाम स्वरूप खनिजतेलाच्या वाढत्या किंमतीमुळे वाहतूक खर्चात वाढ झाली यांचे महत्वाचे कारण कोरोना महामारी हे पण होते. कोरोना मुळे भारतासारख्या विकसनशिल देशात वाढत्या लोकसंख्येची समस्या फार मोठ्या प्रमाणात दिसून येते. कोरोना तील लोकांकरून मुळे भारतामध्ये प्रचंड प्रमाणात लोकसंख्या वाढ होऊ शकते असा अंदाज लोकसंख्या अध्यासकाचा अंदाज आहे. कोरोना काळात मागणी व पुरवठा यांचे असंतुलन निर्माण झाल्यामुळे किंमती वाढल्या. त्याचा परिणाम महागाई वाढली.

भारतीय समाजामध्ये मध्यम वर्गाचे प्रमाण अधिक आहे. मध्यमवर्गीयांचे उत्पन्न सुद्धा मर्यादित असते. कोरोना काळात वस्तूच्या किंमती वाढल्याने मध्यम वर्गीयाला दैनंदिन उपभोगाच्या वस्तूत कपात करावी लागली. त्यांचे जीवनमान खालावलेले दिसून येते. भांडवलशाही अर्थव्यवस्थेमध्ये समाजातील सर्व उत्पादक साधनावर मुठभर लोकांची मालकी असते. तर बहुसंख्या लोक आपली बुद्धी व श्रम विकून उपजिविकेचे साधन मिळविण्यासाठी धडपड करीत असतात. समाजातील श्रीमंत व गरीब वर्गात विषमतेची दरी अस्तित्वात आली याचे कारण केवळ कोरोना महामारी आहे. कोरोना महामारीच्या काळात अधिक नफा कमविण्याच्या उद्देशाने उत्पादक विक्रेते व या वर्गाकडून कृत्रिम टंचाई व साठेबाजी करून ग्राहक वर्गाची पिळवणूक केली गेली. याचा परिणाम लोकांचे राहणीमान व उपभोग पातळी घसरली. कोरोना महामारीच्या काळात रोजगारावर परिणाम झाला. अनेक कामगार बेरोजगार झालेले दिसून येतात. भारतीय जागतिकीकरणाचा स्वीकार करून जागतिक अर्थव्यवस्थेला भारतीय अर्थव्यवस्थेची दारे खुली करून दिली. त्यामुळे विदेशी वस्तू व सेवांची देशात आक निर्माण होउन देशातील उद्योग मंद होण्याआधी सावध होणे गरजेचे आहे. याउलट जागतिकीकरणाला भांडवल समजून देशातील औद्योगिक व सेवा क्षेत्राची कार्यक्षमता वाढवून निर्यातिभिमुख होणे गरजेचे आहे. यामुळे रोजगाराच्या संधी व विदेशी भांडवल प्राप्त होउन जागतिक स्पर्धेत भारतीय अर्थव्यवस्था टिकून राहिल. डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन यांच्या मते, एकाविसाव्या शतकातील तरूणाला उद्योगीभिमुख बनवून रोजगार निर्मितीसह आर्थिक विकास साधणे गरजेचे आहे.

एकाविसाव्या शतकाला तंत्रज्ञानाचे युग म्हणून ओळखले जाते. भारतीय श्रमव्यवस्था ही अकुशल श्रेणीची असल्याकारणाने श्रमिकाची उत्पादन क्षमता कमी असल्याचे दिसून येते. त्यासाठी शिक्षण व्यवस्थेत सुधारणा करून तांत्रिक व व्यावसायिक शिक्षणावर भर देउन कौशल्याधारित श्रमामध्ये वाढ करणे गरजेचे आहे. केंद्र सरकारने मनरेगा सारख्या रोजगारभिमुख योजनाची सुरुवात करून त्याची प्रभावीपणे अंमलबजावणी करून एकाविसाव्या शतकातील जागतिक अर्थव्यवस्थेला तोंड देण्यात आढान स्वीकारले पाहिजे. तेव्हाच भारतातील कोरोना महामारी मुळे बेरोजगारी व दारिद्रयाची जी समस्या निर्माण झाली आहे. ती कमी होण्यास मदत होईल.

संदर्भ ग्रंथ :-

१. भारतीय अर्थव्यवस्था - पि. आर. कुलकर्णी, पिंपळापुणे अॅन्ड कं. पब्लिशर्स, नागपूर.
२. भारतीय अर्थव्यवस्थेचा विकास विषयक समस्या - डॉ. रावसाहेब जाधव परवेकर, मिना प्रकाशन, सिंधुदुर्ग.
३. भारतीय अर्थव्यवस्था विकास व पर्यावरणात्मक अर्थशास्त्र - डॉ. जी.एन. झामरे, पिंपळापुणे अॅन्ड, पब्लिकेशर्स नागपूर.
४. भारतीय अर्थव्यवस्था - मिश्रापुरी, हिमालय पब्लिकेशर्स, मुंबई.
५. इंटरनेट.

**We the Research Organization will do provide help
for the following works listed below.**

- Support for Arts, Commerce & Science all Disciplines*
Research Paper Publication
- Book Chapters for Publications
- ISBN Publications Supports
- M.Phil Dissertations Publish
- **Ph.D. Thesis in Book Format**
- **ISSN Journals with Impact Factor (7.675)**
- **Online Book Publication**
- **Seminar Special Issues**
- **Conference Proceedings**

Aadhar International Publication

For Details Visit To : www.aadhar-social.com

Mobile : 9595560278 /

Aadhar PUBLICATIONS

New Hanuman Nagar, In Front Of

Pathyapustak Mandal, Behind V.M.V. College, Amravati (M.S) India Pin- 444604

• **Mob-- 9595560278, Email: aadharpublication@gmail.com**

For Details www.aadhar-social.com

Price:Rs.500/

ISSN



2278-9308



Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

ISSN 2319-8648

Impact Factor - 7.139

Indexed (SJIF)



February 2020 Special Issue-22 Vol. 6

The Role of Women in Global Development

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Guest Editor
Principal, Dr. Aqueela Syed Gous



CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue 22, Vol. 6
February 2020

Peer Reviewed
SJIF

ISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 7.139

Impact Factor – 7.139

ISSN – 2348-7143

Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

February 2020 Special Issue- 22 Vol. 6

The Role of Women in Global Development

**Chief Editor
Mr. Arun B. Godam**

**Guest Editor
Principal, Dr. Aqueela Syed Gous**

Shaurya Publication, Latur



Guest Editor
Principal

Dr. Aqueela Syed Gous

Co-Editor

Dr. Arjun Mali

Editorial Board

Dr. Swati Ardhapurkar

Assit. Prof Amruta Misal

Dr. Yashwant Chavan

Mrs. Sangita Katala

Dr. Alka Walchale

Dr. Ashok Jadhav

Dr. Ambadas Phatangare

Dr. Sandhya Thakare

Assit. Prof Farooqui Mehjabeen

Prof Nathrao Garjale

Dr. Bhagwan Sangale

Assit. Prof. Rajkumar Chate

Dr. Rambhau Kashid

Dr. Manchak More

Dr. Dilip Maske

Index

1. राष्ट्रीय विकास एवं महिला सशक्तिकरण
डॉ. सय्यद अमर फकिर १
2. भारत देश के आजादी के लिए योगदान देनेवाली क्रांतीकारी महिला - दुर्गावती देवी (दुर्गाप्राम्सी)
प्रा. गडदे भारती बाबुराव ३
3. न्यायालयार्थी भूमिका आणि भारत
प्रा. दत्तात्रय जनार्धन चव्हाण ५
4. गोदाकाठावरील महानुभावीय साहित्यातून अभिव्यक्त होणारी एकात्मता
डॉ. बबन श्रीकृष्ण मस्के ९
5. कृषी क्षेत्र आणि आर्थिक विकास
डॉ. अशोक बापूराव देवकर 12
6. 'जागतिक मानव विकास अहवाल आणि भारताची सद्यस्थिती'
प्रा. डॉ. चव्हाण एम.एच., प्रा. डॉ. सावळे एकनाथ ग्यानोबा १६
7. कृषी विकास आणि भारतीय अर्थव्यवस्था
डॉ. देविदास नागरगोजे, डॉ. सावळे इ.जी. २०
8. भारतीय स्वातंत्र्यपूर्व आंदोलनात महिलांचा सहभाग
डॉ. किसन मनोहर पवार 24
9. स्त्रियांच्या सामाजिक समस्या आणि उपाय योजना
डॉ.सौ.मनिषा देशमुख २६
10. भारतीय शेती शोध आणि बोध
डॉ.एन.के.मुळे २८
11. महिलांच्या समस्या : "एक अभ्यास"
प्रा. डॉ. शामल भिवराव जाधव ३१
12. भारतीय क्रांतीकारी चळवळीत येशूबाई सावरकरांचे कार्य : एक अभ्यास
डॉ. गंगणे आर. व्ही. ३४
13. ग्रामीण महिलांच्या आरोग्य विषयक समस्या: कारणे व उपाय योजना
प्रा. डॉ. पंढरी गुट्टे 38
14. "भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीतील महिलांचे योगदान"
प्रा. केशव देविदासराव पावडे 41
15. परभणी जिल्ह्यातील लिंग-गुणोत्तर एक भौगोलिक अभ्यास
प्रा. डॉ. खंदारे सिंधु परसराम 45

47. ज्ञान सरस्वती सरोजनी नायडू यांचे स्वातंत्र्य संग्रामातील योगदान
प्रा. महेंद्र प. देशपांडे 146
48. आर्थिक विकासात औद्योगिकरणाची भूमिका
डॉ. सुरेश टी. सामाले 150
49. पारंपरिक ग्रंथालयांमध्ये ई-संसाधनांचा वापर : काळाची गरज
प्रा. अनिल जेवळीकर 152
50. भारताच्या स्थूल राष्ट्रीय उत्पादनात कृषी क्षेत्राचे योगदान
डॉ. संजय मोतीराम दांडे , डॉ. जगताप बी. एस. 154
51. 'योगशास्त्रीय दृष्टीकोनातून आहार विवेचन'
पल्लवी ज्ञानोबा सुरवसे 157
52. मुलभूत हक्काच्या संरक्षणात सर्वोच्च न्यायालयाची भूमिका 159
53. झोडगे रामेश्वर सिद्धेश्वर 161
54. मानव विकास (Human Development)
प्रा. डॉ. बी. बी. लोंखंडे 161
55. मराठवाडा मुक्ती संग्रामात वडवणी तालुक्याचा सहभाग विशेष संदर्भ - स्वातंत्र्य सैनिक - श्री. रामकृष्ण नारायण खाटवकर (चिंचाळा)
डॉ. भालचंद्र गोविंदराव कुलकर्णी 163
56. जागतिक विकासात महिलांचे प्रभासकीय आणि व्यवस्थापकीय क्षेत्रातील योगदान:विषय संदर्भ मेरी पार्कर फॉलेट.
प्रा. डॉ. सांगळे भगवान श्रीपती 166
57. आधुनिक ग्रंथालयातील डिजीटल मिडीयाची साधने
प्रा. बिडवे मारुती शिवाजीराव 171
58. नाट्यसंहितेतील रंगभाषेची भूमिका :एक अभ्यास
प्रा. डॉ. ज्ञानेश्वर लक्ष्मण सोनवणे 174
59. भारतीय शेती विकास स्थितांतराचा ऐतिहासिक आढावा
डॉ. डी. बी. तांदुळजेकर 175
60. पर्यावरण व्यवस्थापन काळाची गरज
प्रा. डॉ. उत्तम शंकर साळवे, प्रा. शिंदे नारायण भर्तीरीनाथ 178
61. नांदेड जिल्ह्यातील हवामानातील बदल : एक भौगोलिक अभ्यास
प्रा. डॉ. कानवटे यु. एस. 181

डॉ. डी.बी. तांदुळजेकर
अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख, यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, अंबाजोगाई

डार्विनच्या जिव जंतू उत्पत्ती सिद्धांतानुसार पृथ्वीतलावर मानवाचे अस्थित्व हे पाच लक्ष वर्षांपासूनचे आहे. पाच लक्ष वर्षांपासून मानवाचे अस्थित्व पृथ्वीतलावर असले तरी सुरवातीच्या कालखंडामध्ये मनुष्य हा आपला उदरनिर्वाह करण्यासाठी फळे, कंदमुळे आणि शिकार करून आपला उदरनिर्वाह करत असावा. पुढे कालांतराने पशुची शिकार करण्याऐवजी त्याचे पालन करून दूध, मांस करून आपला उदरनिर्वाह पूर्ण करण्याची कल्पना त्याला सूचली असावी आणि त्यातून तो पशु पालनाकडे वळला असावा. पशुपालन करता-करता निसर्गाचे परीक्षण आणि अवलोकन करता-करता नवनविण धनधान्य उदरनिर्वाहासाठी वारले जावू शकते हे त्याच्या लक्षात आले असावे आणि त्यातून शेती करून आपली भटकंती त्याने कमी केली असावी. मानवी जिवनाच्या विकासाच्या उत्क्रांतीच्या ऐतिहासिक आढावा घेत असताना प्राचीन कालखंडामध्ये ज्या विविध संस्कृती उदयास येवून विकसीत झाल्या त्या कालखंडात मानवाने आपले जीवन शेतीशी एकरूप केल्याचे संस्कृती अभ्यासावरून लक्षात येते. सिंधू संस्कृती किंवा हाडप्पा मोहेन जोदडो संस्कृती (इ.स. पूर्व 2700)¹, ग्रिक संस्कृती (इ.स. पूर्व 800)², रोमण संस्कृती (इ.स. पूर्व 553 ते 509)³, चिन संस्कृती (इ.स. पूर्व 476)⁴ इ. या उदय आणि विकास हात असताना शेतीचा ही विकास झालेला आहे.

इ.स. पूर्व कालखंडामध्ये या ज्या संस्कृतीचा उदय आणि विकास झाला त्याचे उत्खनन केले असता तत्कालीन नाणे, बैलगाडी, महिलांचे दागिने, मातीचे भांडी, सांड पाण्याची व्यवस्था, स्नानगृह इ. जे अवशेष सापडले त्यावरून या कालखंडात शेतीचा विकास झाला हे सिध्द होते.

याचा अर्थ शेतीची सुरुवात आणि शोध हा साधारणपणे दहा हजार वर्षापूर्वी झाला असावा हे सिध्द होते. शेतीची सुरुवात ही प्रथम: मध्यपूर्वतील आताचे इस्त्राईल, पॅलेस्टाइन, सिरीया, तुर्कस्थान, कुयेत लेबनॉन, जॉर्डन या देशामध्ये सर्वप्रथम झाला असावा. भारतामध्येही प्राचीन कालखंडामध्ये शेती विकसीत होते हे हडप्पा आणि मोहेन जोदडो संस्कृतीवरून आणि त्यातील उत्खननातील अवशेषावरून सिध्द होते.

देशाला स्वातंत्र्य मिळायच्यापूर्वी भारतावर आनेक आक्रमणे झाली. यामध्ये गजनीने 17 स्वाऱ्या केल्या पोर्तुगीज, डच, इंग्रज भारतामध्ये आले. सुरुवातीला व्यापारी म्हणून आले आणि राज्यकर्ते बनले. इंग्रज भारतामध्ये येण्यापूर्वी भारतीय खेडी ही स्वयंपूर्ण होती. इंग्लंडमध्ये 16 व्या शतकामध्ये औद्योगिककांती झाली आणि इंग्लंडमध्ये तयार होणारे कापड भारतामध्ये येवू लागले. इंग्रजी सत्ता भारतामध्ये स्थापित झाली आणि भारतातील स्वयंपूर्ण असलेली खेडी परावलंबी झाली.⁵ इंग्रजांच्या काळामध्ये भारतात जवळजवळ 11 दुष्काळ पडले आणि या दुष्काळामध्ये लाखो लोक मृत्युमुखी पडले. इंग्रजांनी शेतसारा ही पध्दती भारतामध्ये आणली आणि त्यामुळे भारतीय शेती आणि शेतकरी हे अडचणीत आले.

15 ऑगस्ट 1947 ला देश स्वतंत्र झाला. स्वातंत्र्याबरोबरच देशाची फाळनी झाली आणि कापूस, गहू पिकाणारे भूप्रदेश पाकिस्तानच्या वाट्याला गेले. परिणामी देशामध्ये अन्न टंचाई ही स्वातंत्र्याबरोबरच भारताच्या वाट्याला आली. देश स्वतंत्र झाला तेंव्हा नुकतेच दुसरे महायुध्द संपुष्टात आले होते. दुसऱ्या महायुध्दामुळे जगाची अर्थव्यवस्था डबघाईस आली होती. तर दुसऱ्या बाजूला दुसऱ्या महायुध्दानंतर जे-जे राष्ट्र स्वतंत्र झाले त्या राष्ट्रांची दोन भागांमध्ये विभागणी झाली. एकतर अमेरिका आणि त्यांचे मित्र राष्ट्र तर दुसऱ्या बाजूला सोव्हियत युनीयन आणि त्यांचा मित्र राष्ट्रांचा गट जो की मार्क्सच्या समाजवादी विचार सरनीतून उदयास आला होता. जगामध्ये भूक, गरिबी, बेकारी, उपासमारी, रोगरार्ड, दुष्काळ हे प्रश्न भेडसावत असताना हे दोन्ही गट आपआपसात वैरभाव ठेवून वागत होते. अशा परिस्थितीमध्ये भारतीय कृषी किंवा शेती पासून मिळणारे उत्पादन आणि लोकसंख्या यांना पुरेल इतके नव्हते.⁶

देशाला स्वातंत्र्य मिळाल्यानंतर 1950-51 पासून देशामध्ये पंचवार्षिक योजनांचे युग सुरू झाले. अन्धधान्याच्या बाबतीत स्वयंपूर्णतः मिळवीण्याचा नियोजनकारांनी पहिल्या पंचवार्षिक योजनेपासूनच प्रयत्न केले. शेती क्षेत्रामध्ये आणि त्यातल्या त्यात सिंचन, कृषी अवजारे, खते, किटक नाशके इ. च्या वाढीसाठी भारतीय सरकारने भरीव काम केले. त्याचा थोडक्यात आढावा तक्ता रूपाने पूढील प्रमाणे.

पंचवार्षिक योजनेमध्ये भारतीय कृषी क्षेत्रावर झालेली गुंतवणूक

पंचवार्षिक योजना	कालखंड	एकूण पंचवार्षिक योजना खर्च	पंचवार्षिक योजनेमध्ये शेतती क्षेत्रावर केलेला खर्च	एकूण खर्चाची शेतती क्षेत्रावर केलेला एकूण खर्च (टक्केवारी)
पहिली योजना	1951-56	1960	600	31
दुसरी योजना	1956-61	4670	950	20
तिसरी योजना	1961-66	8580	1750	21
चौथी योजना	1969-74	15800	3670	24
पाचवी योजना	1974-79	39430	8740	22
सहावी योजना	1980-85	109300	26100	24
सातवी योजना	1985-90	218730	47100	23
आठवी योजना	1992-97	475480	101590	21
नववी योजना	1997-02	859200	176217	20.5
दहावी योजना	2002-07	1525639	305055	20.0
एकरावी योजना	2007-12	3676936	723465	19.7
बारावी योजना	2012-17	7669807	1223119	17.3

संदर्भ : Planning Commission, various Five-Year Plan Document.

नियोजनाला सुरुवात झाल्यापासून पहिल्या पंचवार्षिक योजनेपासूनच भारत सरकारने कृषि क्षेत्रातील गुंतवणूकीला प्राधान्यकम दिल्याचे वरील तक्त्यावरून दिसून येते. प्रतिशत प्रमाण हे कमी होत गेल्याचे दिसत असले तरी एकूण खर्चाची रक्कम ही मात्र सतत वाढत गेलेली आहे. या वाढत्या गुंतवणूकीमुळे आज भारत देश अन्न-धान्याच्या संदर्भात केवळ स्वयंपूर्णच झाला असे नव्हे तर आज आपण अतिरिक्त अन्नाच्याची इतर राष्ट्रांना निर्यातही करू शकतो.

पंचवार्षिक योजना कालखंडामध्ये गुंतवणूक वाढत असताना अन्नाच्या उर, कापूस यांचे उत्पादन हे सतत वाढत गेलेले आहे. परंतु एवढी गुंतवणूक झाल्यानंतरही तेल बियाच्या उत्पादनामध्ये 1985 पर्यंत आपण इतर राष्ट्रावर अवलंबून होतो. पुढे यामध्ये 1985 पासून पुढे 2002 पर्यंत तेल बियाच्या उत्पादनामध्ये कधी तूट तर कधी अतिरिक्त वाढवा हा भारतीय शेततीमधून मिळालेला आहे. आजही यासंदर्भात चढ-उतार दिसून येतात. याचे कारण भारतीय शेतती आजही पावसाच्या पाण्यावर अवलंबून आहे त्यामुळे असा बदल हा दिसून येतो. याचे कारण वाढते सिंचन क्षेत्र :

शेतती क्षेत्रामध्ये तिच्या उत्पादकता वाढविण्यासाठी सिंचनाचे अनन्य साधारण महत्त्व असते. देशामध्ये नियोजनाला सुरुवात झाली तेव्हा 133 दस लक्ष हेक्टर शेतती ही लागवडीखाली होती. या एकूण लागवडीखालील क्षेत्रापैकी 21 ते 23 दस लक्ष हेक्टर शेतती ही सिंचनाखाली होती. हे सिंचनाचे प्रमाण एकूण लागवडीखालील क्षेत्राशी 17 टक्के इतके होते. हे क्षेत्र मागील 60 ते 70 वर्षामध्ये सतत वाढत गेलेले आहे. आज मी तिला 195 दसलक्ष हेक्टर क्षेत्र हे लागवडीखाली असून त्यापैकी जवळजवळ 91.5 दसलक्ष हेक्टर शेतती क्षेत्र हे सिंचनाखाली आहे. याचा अर्थ आज सिंचनाचे प्रमाण हे 46.9 टक्के इतके आहे. भारतीय शेततीची सिंचन क्षमता आणखीन 4-5 टक्यांनी वाढू शकते. ही वाढ मुलस्थानी जलसंधारन या संकल्पनेतून होवू शकते. पाणी आडवा पाणी जिरवा च्या माध्यमातून असलेली क्षमता वाढविणे ही भारतीय शेततीची आजची गरज आहे.⁷

भारतामध्ये नियोजनाच्या पहिल्या पंचवार्षिक योजनेपासून सिंचन क्षेत्रामध्ये झालेली वाढ दर्शकतक्ता. भारतीय सिंचन क्षेत्र दर्शावणारा तक्ता (क्षेत्र दसलक्ष हेक्टरमध्ये)

वर्ष	निचळ सिंचनाखालील क्षेत्र	स्थूल सिंचनाखालील क्षेत्र	एकूण लागवडी खालील क्षेत्र	लागवडी खालील क्षेत्राशी सिंचनाचे प्रमाणे
1950-51	21	23	133	17
1970-71	31	38	166	23
1990-91	48	62	186	34

1999-00	57	76	193	39
2000-01	55	76	186	40
2006-07	61	85	193	44
2007-08	62	87	195	44.6
2008-09	63	89	195	45.3
2009-10	63	85	197	45.3
2010-11	63.6	88.6	195	45.4
2011-12	65.3	91.5	195	46.9

संदर्भ : Agricultural Statistics at a Glance 2014.

कृषी पतपुरवठा :

शेती क्षेत्राला सिंचनाबरोबरच कर्जाची ही आवश्यकता असते. कृषि क्षेत्राला कर्ज पुरवठा करणारी यंत्रणा रिझर्व बँक ऑफ इंडियाच्या राष्ट्रीय करणानंतर कार्यरत होतीच, स्वातंत्र्याच्या सुरुवातीपासूनच देशामध्ये सहकारी शेजामध्ये काम करणारी श्री स्तरीय यंत्रणा शेतीसाठी कर्जपुरवठा करण्याचे काम करते आहे. बँकांच्या राष्ट्रीय करणानंतर (1955, 1969, 1975, 1980, 1982) अनुक्रमे इण्डिरा बँक ऑफ इंडिया, 14 मोठ्या व्यापारी बँकांचे राष्ट्रीयकरण आणि नाबार्डची स्थापना राष्ट्रीयकरण, क्षेत्रीय ग्रामीण बँकांची स्थापना, आठ मोठ्या व्यापारी बँकांचे राष्ट्रीयकरण आणि नाबार्डची स्थापना झाल्यामुळे कृषी क्षेत्राला पतपुरवठा वाढविणे शक्य झाले.

1984-85 ते 2013-14 या तीस वर्षातील कृषि पतपुरवठ्याचा अभ्यास केला असता असे निदर्शनास येते की 1984-85 मध्ये सर्व बँकांनी मिळून कृषी क्षेत्राला केलेला पुरवठा हा 6230 कोटी रुपये होता, तो पुढे सातत्याने वाढत असल्याचे दिसून येते.⁸

संदर्भ सूची :

1. <https://mr.m.wikipedia.org>
2. mr.vikaspedia.in
3. <https://en.m.wikipedia.org>.
4. आर्थिक विचारांचा इतिहास - के.एच. टक्कर.
5. भारतीय अर्थव्यवस्था - देसाई, जोशी, भालेराव - निराली प्रकाशन, पूर्णे.
6. Planning Commission, various Five-Year Plan Document.
7. Agricultural Statistics at a Glance 2014.
8. Economics Survey 2010-11 NABARD, Annual Report (Various Issues, Agricultural Statistics at a Glance 2014).

Current Global Reviewer


Indexed (S-JIF)

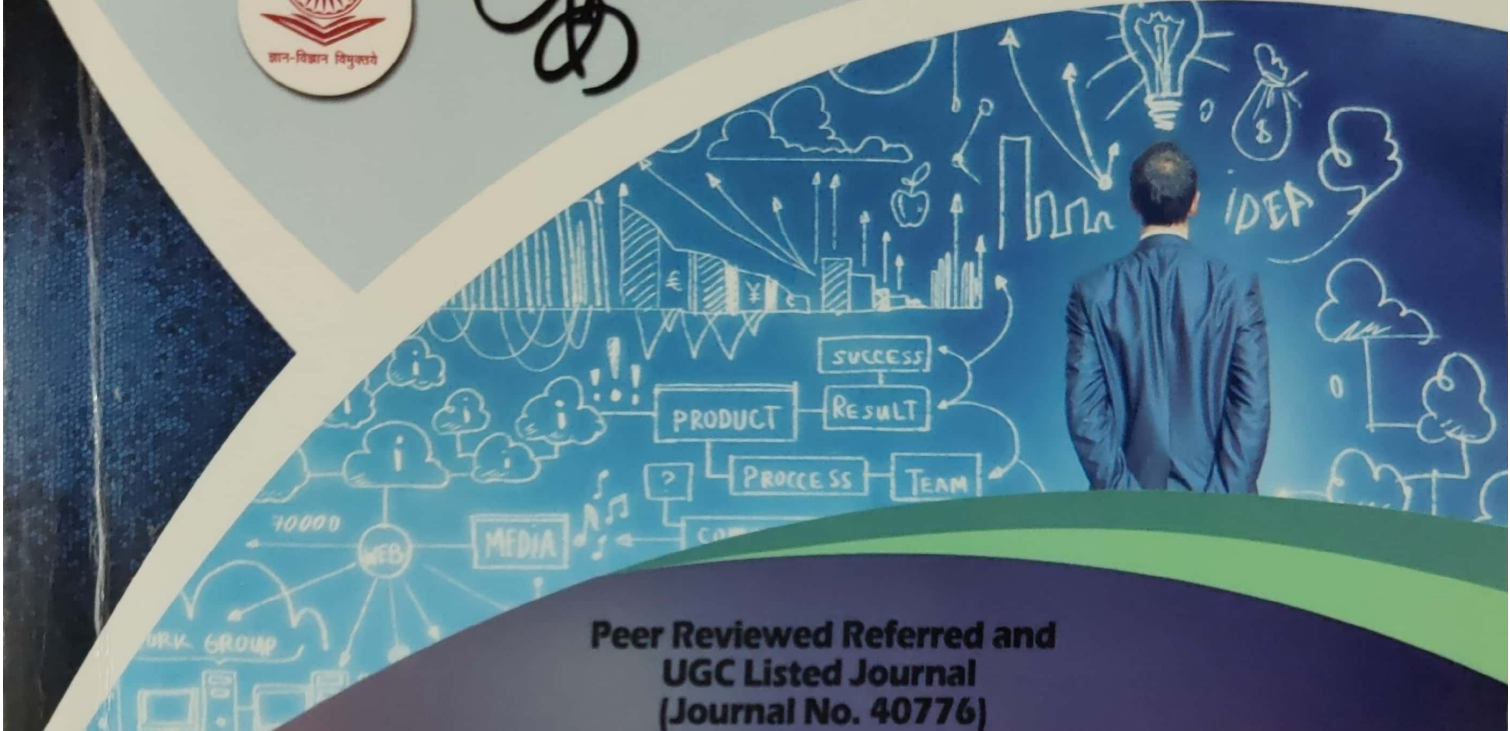
ISSN 2319-8648

Impact Factor-2.143



Chief Editor
Arun B. Godam
Latur, Dist. Latur-413512
(Maharashtra, India)
Mob. 8149668999


Shaurya Publication
Latur



Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume-VIII, Issue-I
January - March - 2019
Marathi Part - I

IMPACT FACTOR /
INDEXING 2018 - 5.5
www.sjifactor.com

**Ajanta
Prakashan**



ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - VIII

Issue - I

Marathi Part - I

January - March - 2019

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776



ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5

www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖


Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

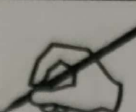
❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)





EDITORIAL BOARD



Professor Kaiser Haq
Dept. of English, University of Dhaka,
Dhaka 1000, Bangladesh.

Roderick McCulloch
University of the Sunshine Coast,
Locked Bag 4, Maroochydore DC,
Queensland, 4558 Australia.

Dr. Ashaf Fetoh Eata
College of Art's and Science
Salmau Bin Abdul Aziz University. KAS

Dr. Nicholas Loannides
Senior Lecturer & Cisco Networking Academy Instructor,
Faculty of Computing, North Campus,
London Metropolitan University, 166-220 Holloway Road,
London, N7 8DB, UK.

Muhammad Mezbah-ul-Islam
Ph.D. (NEHU, India) Assot. Prof. Dept. of
Information Science and Library Management
University of Dhaka, Dhaka - 1000, Bangladesh.

Dr. Meenu Maheshwari
Assit. Prof. & Former Head Dept.
of Commerce & Management
University of Kota, Kota.

Dr. S. Sampath
Prof. of Statistics University of Madras
Chennai 600005.

Dr. D. H. Malini Srinivasa Rao
M.B.A., Ph.D., FDP (IIMA)
Assit. Prof. Dept. of Management
Pondicherry University
Karaikal - 609605.

Dr. S. K. Omanwar
Professor and Head, Physics,
Sat Gadge Baba Amravati
University, Amravati.

Dr. Rana Pratap Singh
Professor & Dean, School for Environmental
Sciences, Dr. Babasaheb Bhimrao Ambedkar
University Raebareilly Road, Lucknow.

Dr. Shekhar Gungurwar
Hindi Dept. Vasanttrao Naik
Mahavidyalaya Vasarni, Nanded.

Memon Sohel Md Yusuf
Dept. of Commerce, Nirzwa College
of Technology, Nizwa Oman.

Dr. S. Karunanidhi
Professor & Head,
Dept. of Psychology,
University of Madras.

Prof. Joyanta Borbora
Head Dept. of Sociology,
University, Dibrugarh.

Dr. Walmik Sarwade
HOD Dept. of Commerce
Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada
University, Aurangabad.

Dr. Manoj Dixit
Professor and Head,
Department of Public Administration Director,
Institute of Tourism Studies,
Lucknow University, Lucknow.

Prof. P. T. Srinivasan
Professor and Head,
Dept. of Management Studies,
University of Madras, Chennai.

Dr. P. A. Koli
Professor & Head (Retd.),
Department of Economics,
Shivaji University, Kolhapur.

CONTENTS OF MARATHI PART - I

अ. क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	शाश्वत शेती विकासाचे चिंतन डॉ. महेश प्रभाकरराव देशमुख	१-५
२	भारतीय शेतीची अल्प उत्पादकता डॉ. कुंटे अजय प्रभाकर	६-९
३	महाराष्ट्रातील शेती प्रश्नाच्या राजकारणाचा एक अभ्यास प्रा. जिजाराम श्रीकृष्ण बागल	१०-१२
४	भारतातील हरितक्रांतीचे परिणाम डॉ. महादेवी वैजनाथ फड कावळे एस. टी.	१३-१६
५	मृदा प्रदूषणाचे कारणे, परिणाम व उपाय डॉ. भागवत सुखदेव परकाळ	१७-२४
६	सेंद्रीय शेतीविषयक जागृती : काळाची गरज डॉ. सुरेखा भिंगारदिवे	२५-२८
७	अन्नधान्य उत्पादनात विक्रमी वाढ: हरित क्रांतीचा परिणाम डॉ. शिंदे बी. के.	२९-३४
८	शेती क्षेत्रातील हरित क्रांतीचे परिणाम डॉ. साहेब राठोड	३५-३८
९	भारतातील शाश्वत शेती विकासासाठी वास्तविक आवश्यकता डॉ. चव्हाण वाय. बी. डॉ. पवळे मेघराज गणपतराव	३९-४१
१०	नियंत्रित शेती काळाची गरज डॉ. डी. डी. चौधरी	४२-४५
११	शाश्वत शेती विकासाच्या समस्या व उपाय प्रा. डॉ. जोशी राजकुमार लक्ष्मीकांतराव	४६-४९
१२	मराठवाडयाच्या दुष्काळ मुक्तीसाठी शाश्वत शेतीची आवश्यकता प्रा. डॉ. डी. बी. तांदुळजेकर	५०-५४

१२. मराठवाड्याच्या दुष्काळ मुक्तीसाठी शाश्वत शेतीची आवश्यकता

प्रा. डॉ. डी. बी. तांदुळजेकर

अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख, यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, अंबाजोगाई.

प्रस्तावना

मानवासमोर आज जे प्रमुख प्रश्न आ वासून अभे आहेत त्यामध्ये एक म्हणजे वातावरणातील बदल, वाढती लोकसंख्या आणि तिसरा म्हणजे पाण्याच्या तूटीचा. जगामध्ये जर तिसरे महायुद्ध झाले तर त्याचे कारण पाणी हे असेल असे जाणकरांचे मत आहे. मागील शंभर वर्षांमध्ये जगभर जे झपाट्याने वाढत गेलेले आद्योगिकीकरण आहे त्याने भौतिक प्रगती साध्य केली असली तरी त्यातून वरील प्रश्न निर्माण झाले आहेत. भारत हा असा देश आहे त्यामध्ये भारतीय शेती पावसावर अवलंबून आहे. आज शाश्वत सिंचनाच्या कमतरता आणि विविध भूप्रदेशामध्ये भिन्न-भिन्न आहे. भारतामध्ये पडणारा पाऊस हा आज निश्चित स्वरूपाचा राहिलेला नाही. कधी कमी कधी अधिक कधी मुसळधार कधी अवर्षाणाची स्थिती निर्माण होते आहे.

यातून शेतीशी संबंधित अनेक प्रश्न निर्माण होत आहेत. अनियमित आणि अपुऱ्या पडणाऱ्या पावसामुळे शेती आणि पिण्याच्या पाण्याचा प्रश्न दिवसेंदिवस गंभीर होत जात आहे. यातून मार्ग काढण्यासाठी पावसापासून मिळणाऱ्या पाण्याचे काटेकोरपणे नियोजन करणे हे आवश्यक झाले आहे. मराठवाड्यामध्ये बीड, उस्मानाबाद, लातूर, जालना, औरंगाबाद या जिल्ह्यांमध्ये नेहमीच अवर्षण प्रवण स्थिती ही निर्माण होत आहे. गोदावरी नदीवर वरच्या बाजूला नविन धरणे बांधली गेल्यामुळे पाण्याच्या संकट मराठवाड्यावरती घोंगावते आहे. मराठवाड्यातील शेती, शेतकरी, उद्योग आणि व्यापार या सवच क्षेत्रांमध्ये पाण्याच्या कमतरतेमुळे आज या क्षेत्राचा विकास हा थांबल्याचे चित्र आहे.

भारत आज ज्या विकासाच्या टप्प्यामधुन जातो आहे, जगामध्ये भारतीय अर्थव्यवस्था ही सातव्या क्रमांकाची अर्थव्यवस्था म्हणून ओळखली जाते. हा विकासाचा वेग कायम राहिला तर २०२२ पर्यंत ती पाचव्या क्रमांकाची अर्थव्यवस्था होईल असा अंदाज आहे. इथपर्यंत येण्यासाठी मागील ७० वर्षांच्या काळात भारतीय अर्थव्यवस्थेची वाटचाल ही जगातील विकसनशील राष्ट्रांना निश्चितच दिशा दर्शक ठरेल. १५ ऑगस्ट १९४७ ला देशाला स्वातंत्र्य मिळाल्यानंतर २६ जानेवारी १९५० पासून देशात नियोजनाला सुरुवात झाली. देश स्वतंत्र झाला तेव्हा देशाची लोकसंख्या ही ४० कोटी होती. आज ती १२७ कोटी पर्यंत जाऊन पोहचली आहे. आज भारत देश जगामध्ये लोकसंख्येच्या बाबतीत दुसऱ्या क्रमांकाचा देश आहे. जगाच्या एकूण लोकसंख्येपैकी १६.७ टक्के लोकसंख्या ही भारतात वास्तव्यास आहे. तर जगाच्या एकूण भूभागापैकी २.४ टक्के भूभाग हा भारताच्या वाटयाला आलेला आहे. लोकसंख्या अधिक आणि भूभाग कमी असला तरी नैसर्गिक साधन संपत्तीच्या बाबतीत भारत हा जगातील एक संपन्न राष्ट्र म्हणून ओळखला जातो. तर दुसऱ्या बाजूला ५० ते ६० कोटी जनता ही आर्थिकदृष्ट्या दुर्बल आहे. यातील जवळजवळ ४० कोटी लोक हे दारिद्र्य रेषेखाली आहेत. म्हणून भारताच्या आणि भारतीय लोकांच्या संदर्भात सधन देशातील निर्धन जनता असा उल्लेख केला जातो.

भारतीय अर्थव्यवस्था कृषीप्रधान अर्थव्यवस्था म्हणून ओळखली जाते तर भारतीय संस्कृती ही कृषी संस्कृती आहे, भारतीय समाज हा कृषक समाज आहे. आजही देशातील जवळजवळ ५० ते ६० टक्के लोक हे शेती क्षेत्राशी निगडित आहेत. हा टक्का जसजसा कमी होत जाईल तसतसा विकासाचा पुढचा टप्पा भारतीय अर्थव्यवस्थेने गाठलेला असेल.

मराठवाड्याला तर आज टँकरवाडा, दुष्काळवाडा आणि वाळवंटवाडा ही संबोधले जाऊ लागले आहे. मागील ५० ते ५५ वर्षांमध्ये मराठवाड्यातील मोठे, मध्यम आणि लघुप्रकल्प यावर ७२ हजार कोटी रूपये शासनाने खर्च केलेले आहेत. मराठवाड्यामध्ये आज नियोजनाच्या ६८ वर्षांनंतरही सिंचनाच्या आराखडा तयार झालेला नाही. एकूण सिंचन प्रकल्प महाराष्ट्रामध्ये सुरू करण्यात आलेले आहेत. त्यातील ७४७ प्रकल्प हे प्रलंबीत आहेत. त्यावर जवळजवळ ७५३६७ कोटी रूपये खर्च हा अपेक्षित आहे. या प्रलंबीत प्रकल्पावर दरवर्षी अंदाज सरासरी अंदाज पत्राकामध्ये ७००० कोटी रूपयाची तरदूत केली जाते जी की हे प्रकल्प पूर्ण करण्यासाठी अपुरी आहे. मराठवाड्यामध्ये आज एकूण ११ मोठे प्रकल्प ७५ मध्यम प्रकल्प आणि ७१७ लघुप्रकल्प पूर्ण झाले आहेत. हे सर्व प्रकल्प पूर्ण झाल्यानंतर मराठवाड्यातील सिंचनाचे प्रमाण हे महाराष्ट्राच्या तुलनेत कमी आहे. तर महाराष्ट्राचे सिंचनाचे प्रमाण हे देशाच्या तुलनेत कमी आहे. देशामध्ये सिंचनाचे प्रमाण हे २७% जवळपास असताना महाराष्ट्रातील सिंचनाचे प्रमाण हे १७% पूढे गेलेले नाही आणि भविष्यात मोठे प्रकल्प उभारून हे प्रमाण वाढणार नाही. त्यासाठी पाणलोट क्षेत्र विकास कार्यक्रमाची मदत घ्यावी लागणार आहे. मराठवाड्यामध्ये गोदावरी, मांजरा, तेरणा, दुधना नद्या सोडल्या तर बाकी सर्व लहान नद्या आहेत. लहान-मोठ्या नद्यांचे बारमाही प्रवाह मागील २५ ते ३० वर्षांपासून वाहन बंद झाले आहे.

संशोधनाचे उद्दिष्टे

१. मराठवाड्याचा पाण्याचा प्रश्न अभ्यासणे.
२. मराठवाड्यातील शाश्वत शेतीसमोरील आव्हाने अभ्यासणे.
३. मराठवाड्यातील अवर्षण प्रवण क्षेत्र आणि पाण्याची कमतरता अभ्यासणे.
४. शाश्वत शेतीसाठी माती आणि पाण्याचे नियोजन अभ्यासणे.
५. शाश्वत शेतीसाठी बाजार यंत्रणेचे महत्व अभ्यासणे.
६. शाश्वत शेती, शेतकरी आणि आर्थिक स्थितीचे अध्ययन करणे.

संशोधनाचे गृहितके

१. मराठवाड्यातील शेती पावसावर अवलंबून आहे.
२. मराठवाड्यातील शेतीला शाश्वत सिंचनाच्या सोईचा अभाव.
३. शेतीमालाच्या किंमतीमध्ये टोकाचे चढ-उतार असतात.
४. शेतकऱ्यामध्ये कृषीमाल किंमतीतील चढ-उताराच्या अभ्यासाचा अभाव.

तथ्य संकलन

संशोधनासाठी द्वितीयक साधन सामुग्री आणि प्रत्यक्ष शेतकऱ्यांचे अनुभव विचारात घेवून तथ्य संकलन करून तथ्यांचे

विश्लेषण करण्यात आले आहे.

शेती व्यवसायासमोरील आव्हाने

आज नियोजन कारांच्या समोर दोन आव्हाने आहेत. एक म्हणजे शेतीवरचा ताण कमी करणे आणि शेतीची गुणात्मकता वाढविणे, आणि दुसरे म्हणजे उद्योग, सेवा क्षेत्रामध्ये नवनवीन संधी निर्माण करणे. शेतीचा गुणात्मक रत्न वाढविण्यासाठी देशपातळीवर आज ते ४० टक्के सिंचनाचे प्रमाण आहे. सिंचन क्षमता वाढविण्यासाठी 'माथा ते पायथ', जलयुक्त शिवाराच्या माध्यमातून सिंचनाचे प्रमाण वाढविणे आणि दुसऱ्या बाजूला शेती मातीचे बिघडत चाललेले आरोग्य सुधारणे. वैज्ञानिक पध्दतीने पाण्याचा वापर, खते, किटकनाशके याचा शेतीसाठी केलेल्या भडीमारातून हवा, पाणी, मातीवर झालेला प्रतिकूल परिणाम शेती मातीचा घटती उत्पादकता, नद्यांचे आणि भुजलाचे वाढते प्रदुषण, हवेमधील कार्बनडॉयऑक्साईडचे वाढते प्रमाण, पर्यावरणातील बदल ही आपल्या समोरील आव्हाने आहेत. ही आव्हाने समर्थपणे पेलण्यासाठी विज्ञान आणि तंत्रज्ञानाच्या माध्यमातून पर्यावरण पूरक शेतीचा वापर करणे आज आवश्यक झालेले आहे.

२१ व्या शतकामध्ये जगभर शेतीमध्ये नवनविन प्रयोग करून उत्पादकता वाढविण्याचा प्रयत्न केला जात आहे. भारतही त्याला अपवाद नाही. शेतीमध्ये वारेमाप आदानाचा वापर केल्यामुळे तीची उत्पादकता कमी तर होणार नाही ना, असा जेव्हा प्रश्न निर्माण झाला, तेव्हा आपण शाश्वत शेती करण्याचा विचार करू लागलो.

शाश्वत शेतीसाठी उपाययोजना

१. माती परीक्षण

शाश्वत शेती, उदरनिर्वाहा ऐवजी व्यावसायिक शेती याकेडे वळत असताना आपणाला काही खबरदारी घेणे आवश्यक आहे. शेतीसाठी वापरली जाणारी आदाने यामध्ये पाणी, बी-बीयाणे, खते, किटकनाशके यांचा मेळ बसवत असताना त्याचे काही प्रतिकूल परिणाम तर होणार नाहीत ना, याचीही काळजी घेणे आवश्यक आहे. मातीमध्ये विविध प्रकारचे जे १८ घटक असतात. त्यातील कोणते घटक मातीमध्ये किती प्रमाणात उपलब्ध आहेत, हे मातीपरीक्षण केल्यानंतर लक्षात येते. याचा अर्थ शेती माती आरोग्य काय आहे, हे लक्षात आल्यानंतर कोणत्या घटकाची किती मात्रा शेतीला आवश्यक आहे, त्यानुसार नियोजन केले तर शेतीची उत्पादकता वाढविण्यास मदत होते.

२. सिंचन क्षमतेचा पर्याप्त वापर

शेती मातीचे परीक्षण केल्यानंतर पिकाची निवड, रचना करून त्याप्रमाणे दुर्मीळ अशा पाण्याचे नियोजन करणे हे ही तीतकेच आवश्यक आहे. ज्या क्षेत्रामध्ये ज्या पिकांचे नियोजन केलेले आहे, त्या भागामध्ये पावसाचे प्रमाण काय आहे, पाण्याची उपलब्धता कशी आहे आणि आपण सिंचनाचे कोणते तंत्र वापरतो, याचे नियोजन हा माती परीक्षणानंतरचा शेती उत्पादन वाढीचा दुसरा टप्पा ठरतो.

३. खते आणि किटकनाशकांचा पर्याप्त वापर

माती आणि पाण्याचे नियोजन केल्यानंतर खते, किटकनाशके यांचा वापरही शेती नियोजनाचा तीसरा टप्पा ठरतो. त्यासाठी हवामानामध्ये होणारा बदल आणि संभाव्य धोके विचारात घेऊन तंत्रज्ञाच्या मार्गदर्शनाखाली किटकनाशकाची फवारणी करून घेणे गरजेचे आहे. केवळ शेतीसाठी जमीन, पाणी, बी-बीयाने, खते, किटकनाशके, अवजारे इत्यादींचा विचार करून शेती

ही व्यवसायिक होत नसते तर पीक कापणी पासून ते बाजारात अंतीम उपभोक्त्यापर्यंत वस्तू घेवून जाण्यासाठी प्रभावी यंत्रणा निर्माण करतो ही तितकेच आवश्यक आहे. या प्रभावी यंत्रणेशिवाय शेती मालाला रास्त योग्य किंमत ही प्राप्त होत नसते.

४. प्रभावी बाजारयंत्रणा निर्माण करणे

शेतीमाल हा एकतर नाशिवंत असतो आणि फारतर एखादे वर्ष तो टिकणारा असतो. शेती मालातील विविध पिकांचे आयुष्य हे एक दिवस ते एक वर्ष कालावधीचे असते. नाशिवंत किंवा कमी नाशिवंत अशी आपण शेती मातीची विभागणी करू शकतो. भाजीपाला नाशिवंत तर अन्नधान्य कमी नाशिवंत असते. बाजारपेठेमध्ये शेती मालाला योग्य किंमत मिळण्यासाठी देशामध्ये एक प्रभावी यंत्रणा निर्माण करत असताना, शेती मालाच्या स्वरूपानुसार शितगृह आणि गोडाऊनची निर्मिती ही शेतीसाठी एक प्रभावी यंत्रणेचा भाग असेल, यासाठी शासन व्यवस्थेने प्रभाविपणे आणि प्रमाणिकपणे काम करणे हे शेती विकासासाठी आवश्यक आहे. देशामध्ये अन्नधान्याचे, भाजी पाल्याचे, दुधाचे उत्पादन मोठ्या प्रमाणावर वाढलेले आहे. ते साठविण्यासाठी गोदाम, शितगृहाची यंत्रणा उपलब्ध नसल्याने शेती मालाला बाजारात योग्य किंमत मिळत नाही. भविष्यामध्ये ती व्यवस्था शासन व्यवस्थेकडून निर्माण होईल अशी अपेक्षा करण्यास हरकत नाही. शेती मालाला योग्य किंमत मिळवून देण्यासाठी शासन स्तरावर शेतीमाल बाजारात सरकारने हस्तक्षेप करणे आवश्यक आहे. आज शेतीमाल बाजारामध्ये 'हमी भाव' जाहिर केला जातो ती हमी भाव यंत्रणा उत्पादन खर्चाशी निगडित यंत्रणा निर्माण करणे आवश्यक आहे. नुकतेच सरकारने चालु अंदाज पत्रकामध्ये शेतीमालाला उत्पादन खर्चाच्या दीडपट हमी भाव देणार असल्याचे घोषित केले आहे. ही एक शेतकऱ्यासाठी जमेची बाजू आहे.

५. सहकारी पणन संस्थांची निर्मिती

ग्रामीण भागातील बाजार समित्यांचा संख्यात्मक आणि गुणात्मक दर्जा उंचावण्यासाठी शासनाने या बाजारसमित्यांना पायाभूत संरचना निर्माण केल्या तर शेतमालाला शास्वत किंमत प्राप्त होण्यास मदत होवू शकते. आलीकडे भारत सरकारने २२०००/- ग्रामीण बाजार समित्यांच्या सुधारणेसाठी भारत सरकारने ५०० कोटी रूपयाची तरतूद केली, जी जमेची बाजू आहे बाजार समित्यांचा विकास करत असताना. शेतकऱ्यांच्या सहकारी संस्था निर्माण करून बाजारपेठेपर्यंत समुहाने आपापला माल एकत्र करून त्याची सांगड वाहतूकीशी जोडली तर वाहतूक खर्चामध्ये कपात होवू शकते. शेतकरी वर्गाची संख्या आणि शेतीमालाची विविधता विचारात घेता आवश्यकतेनुसार शेतकऱ्यांनीही पूढे येणे आवश्यक असून गावा-गावा मध्ये सहकारी तत्वावर समुह निर्माण करून त्या समुहाला स्वतःकडे आकर्षित करणे ही आवश्यक आहे. असे झाले तर निश्चितच शेतीमाल बाजारपेठेपर्यंत आणण्याचा खर्च कमी करणे शक्य होईल. शेती मालाला आज जी हंगामी शेतीमाल विक्रीची व्यवस्था आहे, तिच्या जागी शेतकऱ्याची स्वतःची सक्षम यंत्रणा सहकार तत्वावर निर्माण होणे ही आवश्यक आहे. शेतीमाल बाजार यंत्रणेमध्ये जी व्यापारी वर्गाची घूसखोरी आहे, ती जर कमी केली तर शेतकऱ्यांना आपल्या मालाला योग्य मोबदला मिळण्यास मदत होईल.

६. शेतीसाठी प्रभावी आयात-निर्यात धोरण असावे

शेतीमालाच्या आयात-निर्यात विषयक धोरणाचा दरवर्षी आढावा घेवून WTO च्या नियमावलीची बाधा येणार नाही आणि आंतरराष्ट्रीय करार जे बंधनकारक आहेत ते शाबूत ठेवून ज्या ज्या कृषीमालाची आयात निर्यात आणि त्यावरील बंधणे कायद्याच्या चौकटीत ठेवून आवश्यक आहे. WTO च्या कायदानुसार आपण शेतीला जी अनुदाने देवू शकतो, ती देत असताना

परदेशी शेतीमालाला जकाती लादल्यानंतर उत्तर म्हणून प्रतिक्रिया निर्यातक देशांकडून लादली जाणार तर नाहीत, याचीही काळजी घेणे आवश्यक आहे.

आज जगामध्ये तांदळाच्या उत्पादनामध्ये भारत दुसऱ्या क्रमांकावर आहे. तूर दाळ उत्पादनही सरप्लस झाले आहे. अशा परिस्थितीमध्ये साखरेवर १००% आयात शुल्क लादली असता देशातील साखर उद्योगाला स्थिरता येत असताना तांदुळ, तूर उत्पादनावर आयातक देशाने आयात शुल्क आकारले तर त्यातून निर्माण होणाऱ्या प्रश्नास जबाबदार कोण? असा प्रश्न निर्माण होतो. शेतीमाल त्याची गुणवत्ता, टिकावूपणा, बाजार, आयात-निर्यात, आंतरराष्ट्रीय करार, जागतीकीकरणाच्या युगामध्ये या आणि अशा शेतीमाल विषयक उत्पादन किंमत विषयक धोरण ठरविण्यापूर्वी देश आणि प्राप्त प्रदेशानुसार शेतीमाल उत्पादनाचे पॅटर्न जर आपण निर्माण करू शकलो तर शेतीच्या प्रश्नांची दाहकता निश्चितच कमी होण्यास मदत होईल.

७. शेतीविषयक अल्पकालीन आणि दीर्घकालीन धोरण असावे

अल्पकालावधीचा विचार केला असता आधारभूत किंमत, शेतकरी कर्जमाफी, शेती अनूदाने या उपाययोजना होवू शकतात. परंतु, दीर्घकाळाचा विचार करत आसताना, हे काही कायमचे उपाय होवू शकत नाहीत. शेती आणि शेतकरी यांच्या सर्वांगीण विकासासाठी शेतीशी संबंधित पायाभूत सेवा सुविधांचा, बाजाराचा, आणि नवनवीन तंत्रज्ञान आत्मसात करून त्याचा वापर करणे ही भविष्यातील गरज असणार आहे. यासाठी शासन व्यवस्था आणि शेती उद्योगाचे जाणकार, शेतकरी यांनी एकत्र उत्पादक आणि उपभोक्ता यांचे एकात्मिक कल्याण डोळ्यासमोर ठेवून नियोजन करणे आवश्यक आहे.

शेतीमाल, त्याचा उत्पादन खर्च, बाजारातील मागणी आणि पूरवठा, त्याची योग्य किंमत ठरविणे हा गुंतागुंतीचा विषय आहे. प्रत्यक्ष व्यवहारीक, आणि अनुभवावर आधारित शेतकरी आणि ग्राहक यांना दोघानाही फायदेशीर ठरेल अशी यंत्रणा निर्माण करणे गरजेचे. आज एका विशिष्ट कालखंडात टमाटे, कोथिंबीर, कांदे, बटाटे यांच्या बाजारपेठेच्या किंमतीमध्ये कमालीचा चढउतार पाहवयास मिळतो आणि अशा वेळी कधी शेतकरी तर कधी उपभोक्ता रस्त्यावर येतो. याला उपाय म्हणून प्रदेशा-प्रदेशानुसार देशपातळीवर शास्त्रीय पध्दतीने आणि बाजारपेठेचा विचार करून पीकरचना निर्माण करणे आणि त्यामध्ये शेतकऱ्यांना सामावून घेणे आवश्यक आहे, जेणेकरून शेतकरी आणि ग्राहक या दोघांचे हीत हे साध्य केले जाईल.

संदर्भ सूची

१. भारतीय अर्थव्यवस्था - डॉ. देसाई, भालेराव.
२. कृषि व ग्रामिण अर्थशास्त्र - डॉ. विजय कवि मंडन.
३. कृषि अर्थशास्त्र - वसुधा परोहित.
४. भारतीय अर्थव्यवस्था (वार्षिक अंक) वित्त मंत्रालय भारत सरकार पुरस्कृत.
५. भारतीय अर्थव्यवस्था - रूद्र आणि दत्त सुंदरम.
६. यथार्थदर्शी - लातूर, औरंगाबाद, परभणी, बीड, उस्मानाबाद, जालना जिल्ह्यातील कृषी विभाग.

52



CONTACT FOR SUBSCRIPTION

AJANTA ISO 9001: 2008 QMS/ISBN/ISSN

Vinay S. Hatole

Jaisingpura, Near University Gate, Aurangabad (M.S) 431 004,

Cell : 9579260877, 9822620877 Ph: 0240 - 2400877

E-mail : ajanta1977@gmail.com Website : www.ajantaprakashan.com



Impact Factor 6.261

ISSN- 2348-7143

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

8th March 2019 Special Issue – 106(A)

MALE FEMALE RATIO IMBALANCE IN INDIA

Chief Editor

Dr. Dhanraj T. Dhangar

Assist. Prof. (Marathi)

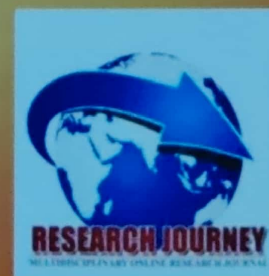
MGV'S Arts & Commerce college,
Yeola, Dist. Nashik (M.s.) India


Executive Editor of This Issue

Dr. A.M. More

Dept. of Economics

Vasundhara College, Ghatnandur,
Tq. Ambajogai, Dist. Beed



	RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal	ISSN- 2348-7143
	Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452, (GIF) –0.676 Special Issue – 106(A) Male Female Ratio Imbalance in India	March. 2019

Impact Factor – 6.261 ISSN – 2348-7143
INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal
PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

8th March 2019 Special Issue- 106(A)

MALE FEMALE RATIO IMBALANCE IN INDIA

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editor of This Issue
Dr. A.M. More
Dept. of Economics
Vasundhara College, Ghatnandur,
Tq. Ambajogai, Dist. Beed



Editorial Board

Chief Editor -

Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editor of This Issue

Dr. A.M. More
Dept. of Economics
Vasundhara College, Ghatnandur,
Tq. Ambajogai, Dist. Beed

Co-Editors –

- _ **Mr. Tufail Ahmed Shaikh** - King Abdul Aziz City for Science & Technology, Riyadh, Saudi Arabia.
- _ **Dr. Anil Dongre** - Head, Deptt. of Management, North Maharashtra University, Jalgaon
- _ **Dr. Shailendra Lende** - R.T.M. Nagpur University, Nagpur [M.S.] India
- _ **Dr. Dilip Pawar** - BoS Member (SPPU), Dept. of Marathi, KTHM College, Nashik.
- _ **Dr. R. R. Kazi** - North Maharashtra University, Jalgaon.
- _ **Prof. Vinay Madgaonkar** - Dept. of Marathi, Goa University, Goa, India
- _ **Prof. Sushant Naik** - Dept. of Konkani, Govt. College, Kepe, Goa, India
- _ **Dr. G. Haresh** - Associate Professor, CSIBER, Kolhapur [M.S.] India
- _ **Dr. Munaf Shaikh** - N. M. University, Jalgaon & Visiting Faculty M. J. C. Jalgaon
- _ **Dr. Samjay Kamble** - BoS Member Hindi (Ch.SU, Kolhapur), T.K. Kolekar College, Nesari
- _ **Prof. Vijay Shirsath** - Nanasahab Y. N. Chavhan College, Chalisgaon [M.S.]
- _ **Dr. P. K. Shewale** - Vice Principal, Arts, Science, Commerce College, Harsul [M.S.]
- _ **Dr. Ganesh Patil** - M.V.P.'s, SSSM, ASC College, Saikheda, Dist. Nashik [M.S.]
- _ **Dr. Hitesh Brijwasi** - Librarian, K.A.K.P. Com. & Sci. College, Jalgaon [M.S.]
- _ **Dr. Sandip Mali** - Sant Muktabai Arts & Commerce College, Muktainagar [M.S.]
- _ **Prof. Dipak Patil** - S.S.V.P.S.'s Arts, Sci. and Com. College, Shindhkheda [M.S.]

Advisory Board -

- _ **Dr. Marianna kotic** - Scientific-Cultural Institute, Mandala, Trieste, Italy.
- _ **Dr. M.S. Pagare** - Director, School of Languages Studies, North Maharashtra University, Jalgaon
- _ **Dr. R. P. Singh** - HoD, English & European Languages, University of Lucknow [U.P.] India
- _ **Dr. S. M. Tadkodkar** - Rtd. Professor & Head, Dept. of Marathi, Goa University, Goa, India.
- _ **Dr. Pruthwiraj Taur** - Chairman, BoS., Marathi, S.R.T. University, Nanded.
- _ **Dr. N. V. Jayaraman** - Director at SNS group of Technical Institutions, Coimbatore
- _ **Dr. Bajarang Korde** - Savitribai Phule Pune University Pune, [M.S.] India
- _ **Dr. Leena Pandhare** - Principal, NSPM's LBRD Arts & Commerce Mahila Mahavidyalaya, Nashik Road



Index

- Male-Female Ratio Imbalance in India : Special Reference to Maharashtra State K
Dr. Ganesh B. Gawande

- 1. Government Welfare Schemes in Rural Development 1
Dr. Shewale A.T
- 2. Changing Pattern of Sex Ratio in Maharashtra 4
Mr. Shivaji Kakade
- 3. Quality of Leadership in Business Management 8
Dr. Vishnu Fulzale, Shehnaz Murad Ratnani
- 4. Male And Female Imbalances In India 12
Datturaya shivaraj , Ramulu B .M.
- 5. Disparities of Sex Ratio in Maharashtra 15
Prof. Dr. Shankar B. Ambhore, Dr. Waghmare P.K.
- 6. The Gender Imbalance in India 18
Dr. Mehatre Meena G.
- 7. Female Foeticide issue in Maharashtra: An overview 22
Dr. Ganapure R. D.
- 8. “Analysis of the Factors Affected Family size and Son preference:
Special reference to Parbhani District of Maharashtra state” 26
Dr. Gajanan L. Shendge
- 9. A Study of Gender Inequality in India 31
Dr. Rahul. N. Dhumal.
- 10. System Of Agricultural Marketing In India 35
Dr. Chavan Ashok Daulatrao
- 11. Girl Child in India 39
Kamble Krushna Shivaji, Wahgmare Balaji Bhimrao
- 12. Human Development in Rural Area –A Study Of Maharashtra 44
(Gender Issues)
Dr. Raut Radheshyam Kisanrao
- 13. A Study of Male-Female Ratio Imbalance in India 47
Dr. S. H. Kadekar
- 14. Male –Female Ratio Imbalance in India with Special Reference to Religion 50
Prof. A.R Maniyar
- 15. Male-Female Differences and Situation of Female in India and Maharashtra 52
Dr. S.E. Ghumatkar



- ✓ 34. स्त्री-पुरुष गुणोत्तरातील असमानता : कारणे व उपाय 103
डॉ.डी.बी.तांदुळजेकर
35. बीड जिल्ह्यातील लोकसंख्येत असमानता : एक समाजशास्त्रीय अभ्यास 106
डॉ. संजय गंगाराम सुरेवाड
36. "मराठवाड्यातील स्त्री-पुरुष असमानतेची वास्तविकता" 108
प्रा. सिताफुले एल्. एस्.
37. महाराष्ट्रातील स्त्री - पुरुष प्रमाणातिल असमानता : कारणे आणि उपाय 112
प्रा. गोविंद रामराव काळे
38. महाराष्ट्रातील स्त्री-पुरुष गुणोत्तरा मधील असमतोल :- एक समस्या 115
प्रा. डॉ. रनमाळ पांडूरंग श्रीरंगराव
39. भारतातील लिंगगुणोत्तर-एक विश्लेषणात्मक अध्ययन 117
डॉ. विष्णु एकनाथ गुमटकर
40. भारतातील राज्यस्तरीय स्त्री-पुरुष असमानता - एक अभ्यास 120
प्रा. डॉ. अर्जुन मोरे
41. भारतीय स्त्री-पुरुष गुणोत्तरातील असंतुलन आणि धर्म 123
प्रा. डॉ. शैलजा बरुरे,
42. महाराष्ट्र व मराठवाड्यातील स्त्री-पुरुष प्रमाण : एक अभ्यास 126
प्रा. डॉ. सुरेश वसंतराव खोंड
43. भारतातील स्त्री-पुरुष गुणोत्तरातील असमतोल एक अध्यायन 129
प्रा.किर्दंत विलास गोपीनाथराव , प्रा.गोदाम रवि शाम
44. स्त्रीयांकडे पाहण्याचा समाजाचा दृष्टीकोण 131
प्रा. डॉ. संजय खाडप
45. भारतातील स्त्री-पुरुष गुणोत्तरातील असमतोल : एक अभ्यास 133
प्रा.श्रीमंत तुकाराम कावळे, फड महादेवी वैजेनाथ
46. भारतातील स्त्री-पुरुष गुणोत्तरातील असमतोल : एक सैध्दांतीक विश्लेषण 136
प्रा. डॉ. काशिद रामभाऊ देवराव
47. महाराष्ट्र राज्यातील घटते लिंगगुणोत्तर : कारणे व उपाययोजना 139
डॉ. संजय काळे
48. स्त्री-पुरुष प्रमाण महाराष्ट्र आणि देशातील तुलनात्मक स्थिती 142
प्रा.डॉ.मदन.शेळके
50. "भारतातील स्त्री-पुरुष प्रमाणातील असंतुलन :-कारणे व उपाययोजना" 146
डॉ.डी.बी.सोळंके
51. भारतातील स्त्री-पुरुष गुणोत्तरातील असमतोल 146
प्रा. डॉ. अशोक पुरभाजी टिपरसे
52. भारतातील राज्यनिहाय स्त्री - पुरुष असमानता 150
डॉ. अनंता बापुराव देशमुख

**स्त्री-पुरुष गुणोत्तरातील असमानता : कारणे व उपाय**

डॉ. डी. बी. तांदुळजेकर

अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख, यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, अंबाजोगाई, जि.बीड

"मज उडावे वाटते पण,
उंबऱ्याचा ठाक आहे,
मी रथाचे चाक आहे."
डॉ. मुकुंद राजपंखे

प्रस्तावना :

यत्र नार्यस्तू पुज्यते, रमन्ते तत्र देवता

याचा अर्थ ज्या ठिकाणी नारी शक्तीचे पुजन केले जाते. त्याठिकाणी देवाचे वास्तव्य असते. संपूर्ण जगात आपला देश संस्कृती, परंपरा, अध्यात्म, भौगोलिक विविधता या विभिन्न वैशिष्ट्यांवरून ओळखला जातो. विविध धर्मांचे, जातीचे, पंथाचे, लोक गुन्यागोविदाने आपल्या देशामध्ये मागील अनेक शतकापासून नांदत आहेत. स्त्री आणि पुरुष या खरेतर एकाच नाण्याच्या दोन बाजू आहेत किंवा एकाच रथाची दोन चाके असे म्हटले तर ते ही वावगे ठरत नाही. भारतीय संस्कृतीने महिलांना अधिशक्तीचे रूप मानुण पुरातन काळापासून तिला मानाचे स्थान दिले आहे. माती आणि माता या दोन्ही जननी म्हणून ओळखल्या जातात. एक स्त्री ही माता, भगिनी, पत्नी आणि मुलगी म्हणून पुरुषाच्या जीवनामध्ये त्याला पूर्णत्व प्राप्त करून देत असते. भारताच्या अनेक धर्मग्रंथांमध्ये तिची महती वर्णन केलेली आहे. महतीबरोबरच तिचे पावित्र्य जपण्यासाठी महाभारत, रामायणामधील युध्द ही याच भूमिमध्ये झालेली आहेत. नवरात्रीच्या माध्यमातून तिच्या विविध अशा नऊ गुणांची महती विविध रूपाने देशामध्ये दरवर्षी साजरी केली जाते. प्रत्येक यशस्वी पुरुषाच्या पाठीमागे एक महिला असते हे ही आपण अनेक वेळा अवजून सांगत असतो. किंबहुना भारतामध्ये जे अनेक महापुरुष होवून गेले त्यांची जडण-घडण करण्याचे काम एका महिलेने केले आहे. राजमाता जिजाऊ, राणी लक्ष्मीबाई, अहिल्यादेवी होळकर, सावित्रीबाई फुले, रमाबाई आंबेडकर, मद्र तेरेसा, सरोजनी नायडू, इंदिरा गांधी, कल्पना चावला, सुनिता विल्यम, पी.टी. उषा आणि इतरही अनेक कर्तुत्वाने महिलांनी या देशाच्या नावलौकिक वाढविल्या आहे. राजमाता जिजाऊ होत्या म्हणून संस्कार मुर्ती व किर्तीवंत छत्रपती शिवाजी महाराज निर्माण झाले. सावित्रीबाई फुलेंनी महात्मा ज्योतिबा फुलेंना साथ दिली म्हणून दीनदुबळ्या लोकांचा उध्दार झाला. एवढेच नव्हेतर महाभारतामध्ये कौशल्यानंदन श्रीराम व अंजनीपुत्र हनुमान हे ही आईच्या सांस्कारातून आणि तीच्या श्रुजनशितेमधून निर्माण झाले. मुळातच निसर्गतः महिलांच्यामध्ये कांही पुरुषापेक्षा अधिकतचे गुण हे निसर्गाने ठासून भरलेले आहेत. ज्यामध्ये सहनशिलता, नाविन्यता, सौंदर्य, संगप्रेरणा, स्मरणशक्ती, काटकता, बचत करण्याची वृत्ती, सहिष्णुता, वासल्य हे महिलांना मिळालेले वरदान आहे. एवढेच नव्हेतर नवनिर्मिती करण्याचा उपजत गुणधर्म हा निसर्गाने महिलेले दिलेला आहे. म्हणून खरेतर महिला ही अबला असू शकत नाही किंवा ती दुर्बलही नसते.

"थॉमस रॉबर्ट माल्थस (1766-1834) या सनातनवादी अर्थशास्त्रज्ञाने 1798 साली वाढत्या लोकसंख्येवर एक सिध्दांत मांडला. या सिध्दातामध्ये लोकसंख्या ही भूमितीय श्रेणीने वाढत असते, तर अन्नधान्य हे गणितीय श्रेणीने वाढत असल्याकारणाने अन्नधान्याच्या तुटवडा निर्माण होतो. लोकसंख्या वाढीवर नियंत्रण ठेवण्यासाठी मानवाने स्वतः पुढाकार घेवून नियंत्रण ठेवणे त्यासाठी गरजेचे असते." असे प्रतिपादन करून तो पुढे हे ही स्पष्ट करतो जर मानवाने लोकसंख्येवर स्वतः होवून नियंत्रण प्रस्थापित केले नाही तर स्वतः निसर्ग पुढाकार घेवून लोकसंख्या नियंत्रित करत असतो, यासाठी निसर्गाकडून जे उपाय योजले जातात ते म्हणजे दुष्काळ, महापूर, साथीचे रोग, युध्द, भूकंप, इत्यादी लोकसंख्या वाढ आणि मानवी समाजाची उत्क्रांती किंवा विकासाच्या विविध अवस्थामधून समाज जात असताना "रोस्टोने विकासाच्या ज्या पाच अवस्था सांगितलेल्या आहेत त्यातील औद्योगिकीकरणाची जी अवस्था मांडली आहे, त्या अवस्थेमध्ये समाजाची औद्योगिक प्रगती होत असताना भौतिक सुख प्राप्तीसाठी मनुष्य प्रयत्न करत असतो असे सांगितले आहे."³ भौतिक सुखाच्या आड ज्या-ज्या बाबी येतील त्या-त्या बाबींना तो आपल्या जीवनात धारा देत नाही. स्त्री जन्माचे ही असेच झाले. आपल्या भौतिक सुख सुविधा, खोटेया प्रतिष्ठा जपण्यासाठी स्त्री जन्माचे स्वागत मानवाने नाकारले. भारतासारखा देश जेव्हा कृषी प्रधान अवस्थेमध्ये होता, तेव्हा त्याच्या गरजा मर्यादीत होत्या आणि त्यामुळे हा प्रश्न एवढ्या प्रमाणात त्या काळी भयावह नव्हता, परंतु पुढे औद्योगिकीकरणाला रेट्यातून जी नवीन संस्कृती उदयास आली. त्या संस्कृतीनेच स्त्री जन्माचा हक्क नाकारला. परंतु अलीकडे समाजाला ही चुक लक्षात आलेली आहे. त्यामुळे मागील 10 वर्षांमध्ये अल्पशा प्रमाणात का होईना परंतु यामध्ये सुधारणा होत आहेत, ही एक जमेची बाजू आहे. अलीकडील काही दशकांपासून भारतीय लोकसंख्येतील वाढती विषमता (स्त्री-पुरुष गुणोत्तर) हा चिंतन व संशोधनाचा विषय बनलेला आहे. भारतात सुध्दा स्त्री-भ्रूण हत्या देशाच्या काही भागात अजूनही सुरू असल्याचे पुरावे देश व राज्यपातळीवरील या संदर्भात अनेक अभ्यासकांनी केलेल्या अभ्यासामधून उपलब्ध झाले आहेत. अगदी अलिकडील काळात महाराष्ट्रातील बीड जिल्ह्यातील स्त्री-भ्रूण हत्या प्रकरण ताजेच आहे. त्यामुळे भारतात स्त्री-भ्रूण हत्या हे स्त्री-पुरुष गुणोत्तरांच्या विषयामध्ये प्रामुख्याने जैविक, सामाजिक, आर्थिक व स्थलांतर विषयक घटकांची भूमिका समोर आली आहे.

स्त्री-पुरुष गुणोत्तर मापन पध्दती : स्त्री-पुरुष गुणोत्तर प्रमाण काढण्यासाठी पुढील सूत्राचा वापर केला जातो.

दर शंभर स्त्रियांमागे पुरुषांची संख्या

या पध्दतीमध्ये स्त्री-पुरुष गुणोत्तर काढण्याची पुढील सूत्राचा वापर केला जातो.

$$\text{स्त्री पुरुष गुणोत्तर (FMR)} = \frac{\text{पुरुषांची एकूण लोकसंख्या} \times 100}{\text{स्त्रियांची एकूण लोकसंख्या}}$$

दर हजार पुरुषांमागे स्त्रियांची संख्या किंवा गुणोत्तर मोजण्यासाठी पुढील सूत्राचा वापर केला जातो.

$$\text{स्त्री पुरुष गुणोत्तर (FMR)} = \frac{\text{स्त्रीयांची एकूण लोकसंख्या}}{\text{पुरुषांची एकूण लोकसंख्या}} \times 1000$$

हे गुणोत्तर 1000 असणे ही बाब स्त्री-पुरुष समतेच्या दृष्टिकोनातून आदर्श स्थिती मानली जाते, जर हे गुणोत्तर 1000 पेक्षा कमी असेल तर त्यातून स्त्री-पुरुष गुणोत्तरात विषमता निर्माण होते. त्यातूनच अनेक लोकसंख्याशास्त्रीय व सामाजिक प्रश्नांचा जन्म होतो. भारतामध्ये जनगणना अहवालात वरील दोन पध्दतीपैकी दुसऱ्या पध्दतीचा म्हणजे दर हजार पुरुषांमागे स्त्रीयांची संख्या काढणे, या पध्दतीचा उपयोग केला जातो. परंतु लिंग गुणोत्तर हे लोकसंख्येमधील पुरुष व स्त्रीयांचे गुणोत्तर आहे. जगात सर्व साधारणपणे पुरुष स्त्रीयांचे प्रमाण एकास एक असे अपेक्षित असले तरी प्रत्येक देशात हे गुणोत्तर वेगवेगळे आढळते. भारतात स्त्रीयांची घटती लोकसंख्या चिंतेची बाबत आहे. 2011 सालच्या जनगणना अहवालानुसार भारतात 1000 पुरुषांमागे 940 स्त्रिया आहेत, म्हणजेच लिंग गुणोत्तर 940 इतके आहे. लिंग गुणोत्तराचे सूत्र = (स्त्री संख्या ÷ पुरुष संख्या) x 1000 असे आहे. देशाच्या पातळीवर 940 हे गुणोत्तर असले तरी देशातील विविध राज्यांमध्ये या गुणोत्तरामध्ये भिन्नता आहे.

संशोधनाची उद्दिष्टे :

1. भारतातील स्त्री-पुरुष गुणोत्तराचा अभ्यास करणे.
2. भारतातील स्त्री-पुरुष गुणोत्तरातील असमतोलाच्या कारणांची मीमांसा करणे.
3. भारतातील स्त्री-पुरुष गुणोत्तरातील असमतोलाच्या कारणांचा अभ्यास करून त्यावर उपाययोजना सुचविणे.

संशोधनाची गृहितके :

1. लोकसंख्या वाढीसाठी भारतभूमी ही नैसर्गिकदृष्ट्या अनुकूल आहे.
2. भारतीय समाज हा आजही रूढी परंपरा जपणारा देश आहे.
3. भारतीय संस्कृती ही पुरुष प्रधान संस्कृती आहे.
4. मुलगी ही परक्याचे धन आहे.
5. मुलीच्या शिक्षणाऐवजी लग्नाच्या खर्चाची तरतूद पालकाकडून केली जाते.
6. हुंडा देणे, लग्नामध्ये अवाढव्य खर्च करणे ही खोटी प्रतिष्ठा भारतीयकडून जपली जाते.

संशोधन पध्दती :

प्रस्तुत संशोधनासाठी प्राथमिक आणि दुय्यम साधन सामुग्रीचा वापर करत असताना विविध संशोधनाचा आढावा घेवून तसेच प्रत्यक्ष व्यवहारीक अनुभव विचारात घेवून संशोधनाची मांडणी या ठिकाणी केलेली आहे.

भारतातील स्त्री-पुरुष गुणोत्तर यथार्थदर्शी :

"आज जगाची लोकसंख्या ही 700 कोटी इतकी आहे. यामध्ये जगात लोकसंख्येच्या संदर्भात चीनचा पहिला तर भारताचा दुसरा क्रमांक आहे. जागतिक लोकसंख्येच्या 18.6 टक्के इतकी लोकसंख्या चीनच्या वाट्याला तर 17.5 टक्के इतकी लोकसंख्या भारताच्या वाट्याला आलेली आहे."⁴ जागतिक पातळीवर भारताचा लोकसंख्या वाढीवचा वेग हा चिन्पेक्षा अधिक असल्याने पुढच्या 10 वर्षात भारताची लोकसंख्या ही चिन्च्या लोकसंख्येपेक्षा अधिक असेल आणि भारत हा देश जगामध्ये यासंदर्भात पहिला क्रमांकावर येईल. उपलब्ध संसाधने आणि भारतीय लोकसंख्या यांचा मेळ बसत नसल्याने विकासाला ही लोकसंख्या नक्कीच मारक ठरेल. भारतामध्ये लोकसंख्या वाढत आहे आणि या वाढत्या लोकसंख्येमध्ये स्त्री-पुरुष गुणोत्तरामध्ये जी विषमता आहे, त्यामध्ये आर्थिक आणि सामाजिक प्रश्न निर्माण होतील. मागील शंभर वर्षांमध्ये भारतातील स्त्री-गुणोत्तर हे पुढील प्रमाणे राहिलेले आहे.

भारतातील लोकसंख्या व स्त्री - पुरुष गुणोत्तर तक्ता

जनगणना वर्ष	लोकसंख्या (करोड मध्ये)	लोकसंख्या वाढ दशक वृध्दीदर (r)	स्त्री-पुरुष प्रमाण (प्रती हजार पुरुषांमागे)
1901	23.84	-	972
1911	25.21	+5.75	964
1921	25.13	-0.31	955
1931	27.90	+11.00	950
1941	31.87	+14.22	945
1951	36.11	+13.31	946
1961	43.92	+21.64	941
1971	54.82	+24.80	930
1981	68.33	+24.66	934
1991	84.64	+23.87	927
2001	102.87	+21.54	933
2011	121.02	+17.64	940

"भारतामध्ये मागील 100 वर्षांमध्ये पुरुषांच्या तुलनेमध्ये स्त्रीयांच्या लोकसंख्येचे प्रमाण हे सतत विषम राहिलेले आहे. यामध्ये नेहमीसाठीच दर 1000 पुरुषांमागे स्त्रीयांचे प्रमाण हे 100 वर्षांमध्ये कमीच राहिलेले आहे. अगदी अलकौडल काळातील 0 ते 6 वर्ष वयोगटातील बालकांच्या लिंगानुसार लोकसंख्येतील त्यांचे प्रमाण अभ्यासले असता, 1981 मध्ये 104 पुलिंगी बालके असतील तर 100 स्त्रीलिंगी बालके आहेत. पुढे 10



वर्षानंतर स्त्रीलिंगी बालकाचे प्रमाण 105.8 असताना पुलिंगी बालकाचे प्रमाण 100 इतके आहे. 2001 आणि 2011 या पूर्वील 10-10 वर्षांचा अभ्यास केला असता 107.8 आणि 108.8 पुलिंगी बालकाचे दर 100 स्त्रीलिंगी बालकाचे प्रमाण आहे. भारतामध्ये लिंगगुणोत्तराचा अभ्यास करत असताना आपणाला हे दिसून येते की भारतामध्ये 1000 पुरूषामागे 940 स्त्रीया आहेत. परंतु हेच प्रमाण देशाच्या विविध प्रदेशांमध्ये वेगवेगळे आहे. केरळमध्ये दर 1000 पुरूषामागे 1084 स्त्रीया आहेत. तर तामिळनाडू, महाराष्ट्र, पंजाब आणि दिल्ली या घटक आणि केंद्र शासित प्रदेशांमध्ये महिलांचे प्रमाण हे अनुक्रमे 996, 929, 895 आणि 868 इतके आहे आणि ही चिंतेची बाब आहे." ⁵

भारतातील स्त्री-गुणोत्तर प्रमाणातील असमतोल दूर करण्यासाठी उपाययोजना :

- भारतामध्ये स्त्री-पुरूष गुणोत्तरातील जो असमतोल मागील 100 वर्षांपासून दिसून येतो आहे, तो असमतोल दूर करण्यासाठी देशांमध्ये शाळा आणि महाविद्यालयांच्या पातळीवर अभ्यासक्रमांमध्ये मूल्य शिक्षणाचा अंतर्भाव करणे गरजेचे आहे. मूल्य शिक्षणाचा अंतर्भाव करत असताना देशांमधील संतांनी तत्त्वव्यत्यांनी, विचारवंतानी मानवी जिवनाकडे ज्या दृष्टीकोणातून पाहिले, त्याचा समावेश अभ्यासक्रमांमध्ये करणे काळाची गरज आहे. संत तुकाराम, संत ज्ञानेश्वर, संत एकनाथ यासारख्या संतांनी हे विश्वची माझे घर, वृक्षावल्ली आम्हा सायरी अशी शिक्षण देत असताना कधीही सजोवामध्ये भेदाभेद केला नाही, आणि आपण आज स्त्री-पुरूष यामध्ये भेदाभेद करू लागलो, हे योग्य नाही, हे सांगणे आवश्यक आहे.
- देशांमध्ये आज गर्भलिंग निदानाच्या संदर्भात जे देश आणि राज्यपातळीवर कायदे करण्यात आलेले आहेत. त्या कायद्याची काटेकोरपणे अंमलबजावणी होणे गरजेचे आहे.
- आज देशांमध्ये महिलांचे जे घडटे प्रमाण आहे. त्यामध्ये सुधारणा करण्यासाठी सामाजिक पातळीवर ज्या चालीरिती आहेत किंवा परंपरा आहेत या परंपरांच्यामध्ये हंडा घेणे आणि देणे हा जो प्रतीष्ठेचा विषय झालेला आहे. त्यावरती समाजांमध्ये जनजागृती करून ही प्रतिष्ठा खोटी आहे हे समाजाला सांगणे आवश्यक आहे. त्यासाठी सामाजिक संस्थांनी पुढाकार घेवून जनजागृती करणे गरजेचे आहे.
- कर्ज काढून लग्न करणे, लग्न करत असताना ते थाटामाटात झाले पाहिजे, हे ही आपल्याकडे खोटी प्रतिष्ठा म्हणून जपली जाते. थाटामाटात लग्न करण्यासाठी वेळ प्रसंगी कर्ज काढले जाते आणि ते फिटत नाही म्हणून आत्महत्या केली जाते आणि त्याचे खापर दुसऱ्यावरती फोडले जाते, हे योग्य नाही. हे समाजातील जाणकारांनी समाजाला समजून सांगितले पाहिजे. जेणे करून मुलगी ही वडिलासाठी ओझे होणार नाही.
- स्त्री म्हणून ती अबला नाही तर ती सबला आहे. तीला शिक्षणाची, आरोग्याची, संरक्षणाची, रोजगाराच्या संधीची, जोडीदार निवडीच्या, स्वातंत्र्याची, स्वतःचे निर्णय स्वतः घेवू देण्याची आज गरज आहे. त्यासाठी स्त्री शिक्षण हे तळागळापर्यंत गेले पाहिजे. तिला उच्च शिक्षण देवून आपली गुणवत्ता सिद्ध करण्याची संधी ही प्रत्येक पालकाने उपलब्ध करून दिली पाहिजे. जेणेकरून समाजापुढे ती एक सबला म्हणून पुढे येईल आणि अशा अनेक स्त्रीया जेव्हा पुढे येतील तेव्हा स्त्री-भ्रूणहत्या ही नक्कीच कमी होण्यास मदत होईल.
- मुलगा हा वंशाचा दिवा असतो असे म्हणत असताना आज देशांमध्ये हाच वंशाचा दिवा कशा प्रकारे आपल्या आई वडीलांना वृद्धाश्रमात ठेवतो आणि म्हातारपणाच्या काळात मुलगीच आई-वडीलांना कसा आधार देते हे समाजापुढे आले पाहिजे.
- महिलेला जर संधी मिळाली तर ती संधीचे सोने करते याचे अनेक उदाहरण आपल्या समोर आहेत. मा. प्रतिभाताई पाटील देशाची राष्ट्रपती होवू शकते, इंदिरा गांधी देशाची पंतप्रधान होवू शकते, सुषमा स्वराज ही देशाची परराष्ट्रीय मंत्री होवू शकते, निर्मला सितारमण देशाची संरक्षण मंत्री होवू शकते. तर मग स्त्रीला अबला म्हणून कसे काय समाज हिनवू शकतो. आज देशांमध्ये शास्त्रज्ञ, वैज्ञानिक, पोलिस, संरक्षण, त्याचबरोबर देशातील विविध क्षेत्रांमध्ये सर्वोच्च पदावर काम करणाऱ्या अनेक महिला असताना त्यांचा आदर्श समोर ठेवून आपल्या मुलीला प्रत्येक वडीलाने संधी उपलब्ध करून देणे आवश्यक आहे.

वरील सर्व बाबी स्त्री-पुरूष गुणोत्तरातील विषमता दूर करण्यासाठी महत्वाचे उपाय ठरू शकतो.

संदर्भ :

1. <https://www.ineteconomics.org>.
2. *Principals of Political Economy & Demography* by Thomas Malthus.
3. *विकासाचे अर्थशास्त्र - विजय कविमंडन*.
4. *Indian Economy* by 72nd Edition by Datt & Sundharam.
5. *India at a Glance* by Population census 2011, Census of India, Government of India 2013

RESEARCH JOURNEY

Impact Factor 6.261

ISSN- 2348-7143

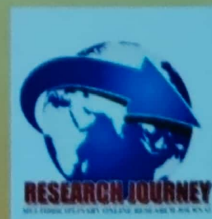
INTERNATIONAL RESEARCH FELLOW ASSOCIATION'S
UGC Approved Multidisciplinary International E-research journal
PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

PUBLISHED BY

Mrs. Swati Dhanraj Sonawane,
Director, Swatidhan International Publications, Nashik

PRINTED BY

Shaury Publication
Kapil Nagar, Latur-413512
Mob. 8149668999



SWATIDHAN PUBLICATION



Impact Factor 6.261

ISSN- 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOW ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Multidiciplinary international E-research journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

18th Feb. 2019 Special Issue- 130 (II)

THE ROLE OF GOVERNMENT TO PROTECT THE HUMAN RIGHTS

Chief Editor

Dr. Dhanraj T. Dhangar

Assist. Prof. (Marathi)

MGV'S Arts & Commerce college,
Yeola, Dist. Nashik (M.s.) India

Executive Editor of This Issue

Dr. Vanmala Govindrao Gundre

Principal

Yashwantrao Chavan College, Ambajogai. Dist. Beed.

Co-Editor

Dr. Ahilya Barure

Dr. D.R. Tandale

Dr. D.B. Tanduljekar





RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal

ISSN- 2348-7143

Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452, (GIF) –0.676 Special Issue – 130 (II)
The Role of Government to protect the Human Rights

Feb. 2019

UGC Approved
No. 40705

Impact Factor – 6.261 ISSN – 2348-7143
INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

Vol. (II)

18 Feb. 2019 Special Issue - 130

THE ROLE OF GOVERNMENT TO PROTECT THE HUMAN RIGHTS

Chief Editor -

Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editor of This Issue

Dr. Vanmala Govindrao Gundre
Principal
Yashwantrao Chavan College, Ambajogai. Dist. Beed.

Co-Editor

Dr. Ahilya Barure
Dr. D.R. Tandale
Dr. D.B. Tanduljekar

Editorial Board

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editor of This Issue
Dr. Vanmala Govindrao Gundre
Principal
Yashwantrao Chavan College, Ambajogai. Dist. Beed.

Co-Editor
Dr. R.B. Barure
Dr. D.R. Tandale
Dr. D.B. Tanduljekar

Co-Editors –

- **Mr. Tufail Ahmed Shaikh**- King Abdul Aziz City for Science & Technology, Riyadh, Saudi Arabia.
- **Dr. Anil Dongre** - Head, Deptt. of Management, North Maharashtra University, Jalgaon
- **Dr. Shailendra Lende** - R.T.M. Nagpur University, Nagpur [M.S.] India
- **Dr. Dilip Pawar** - BoS Member (SPPU), Dept. of Marathi, KTHM College, Nashik.
- **Dr. R. R. Kazi** - North Maharashtra University, Jalgaon.
- **Prof. Vinay Madgaonkar** - Dept. of Marathi, Goa University, Goa, India
- **Prof. Sushant Naik** - Dept. of Konkani, Govt. College, Kepe, Goa, India
- **Dr. G. Hareesh** - Associate Professor, CSIBER, Kolhapur [M.S.] India
- **Dr. Munaf Shaikh** - N. M. University, Jalgaon & Visiting Faculty M. J. C. Jalgaon
- **Dr. Samjay Kamble** -BoS Member Hindi (Ch.SU, Kolhapur), T.K. Kolekar College, Nesari
- **Prof. Vijay Shirsath** - Nanasaheb Y. N. Chavhan College, Chalisgaon [M.S.]
- **Dr. P. K. Shewale** - Vice Principal, Arts, Science, Commerce College, Harsul [M.S.]
- **Dr. Ganesh Patil** - M.V.P.'s, SSSM, ASC College, Saikheda, Dist. Nashik [M.S.]
- **Dr. Hitesh Brijwasi** - Librarian, K.A.K.P. Com. & Sci. College, Jalgaon [M.S.]
- **Dr. Sandip Mali** - Sant Muktabai Arts & Commerce College, Muktainagar [M.S.]
- **Prof. Dipak Patil** - S.S.V.P.S.'s Arts, Sci. and Com. College, Shindhkheda [M.S.]

Advisory Board -

- **Dr. Marianna kotic** - Scientific-Cultural Institute, Mandala, Trieste, Italy.
- **Dr. M.S. Pagare** - Director, School of Languages Studies, North Maharashtra University, Jalgaon
- **Dr. R. P. Singh** -HoD, English & European Languages, University of Lucknow [U.P.] India
- **Dr. S. M. Tadkodkar** - Rtd. Professor & Head, Dept. of Marathi, Goa University, Goa, India.
- **Dr. Pruthwiraj Taur** - Chairman, BoS., Marathi, S.R.T. University, Nanded.
- **Dr. N. V. Jayaraman** - Director at SNS group of Technical Institutions, Coimbatore
- **Dr. Bajarang Korde** - Savitribai Phule Pune University Pune, [M.S.] India
- **Dr. Leena Pandhare** - Principal, NSPM's LBRD Arts & Commerce Mahila Mahavidyalaya, Nashik Road
- **Dr. B. V. Game** - Act. Principal, MGV's Arts and Commerce College, Yeola, Dist. Nashik.

Review Committee -

- **Dr. J. S. More** – BoS Member (SPPU), Dept. of Hindi, K.J.Somaiyya College, Kopergaon
- **Dr. S. B. Bhambar**, BoS Member Ch.SU, Kolhapur, T.K. Kolekar College, Nesari
- **Dr. Uttam V. Nile** - BoS Member (NMU, Jalgaon) P.S.G.V.P. Mandals ACS College, Shahada
- **Dr. K.T. Khairnar**– BoS Member (SPPU), Dept. of Commerce, L.V.H. College, Panchavati
- **Dr. Vandana Chaudhari** KCE's College of Education, Jalgaon
- **Dr. Sayyed Zakir Ali** , HOD, Urdu & Arabic Languages, H. J. Thim College, Jalgaon
- **Dr. Sanjay Dhondare** – Dept. of Hindi, Abhay Womens College, Dhule
- **Dr. Amol Kategaonkar** – M.V.P.S.'s G.M.D. Arts, B.W. Commerce & Science College, Sinnar.

Published by –

© Mrs. Swati Dhanraj Sonawane, Director, Swatidhan International Publication, Yeola, Nashik
Email : swatidhanrajs@gmail.com Website : www.researchjourney.net



Index

1. मानवाधिकार आणि मागासवर्गीय वर्ग प्रा. कांबळे दिलीप बबनराव	13
2. भारतातील मानवी अधिकार आणि सामाजिक लोकशाहीची यशस्वीता प्रा. सोनवळकर रमेश शंकरराव	15
3. मानवी हक्क आणि पोलिस प्रशासन डॉ. संभाजी कोंडबाजी फोले	20
4. मानवी हक्क आणि स्त्री गडलवाड सुप्रिया गणपतराव	23
5. आदिवासी जमाती व मानवी हक्क प्रा. डॉ. संजय सुरेवाड	25
6. मानवी हक्क आणि सिमांत शेतकरी प्रा. गोविंद रामराव काळे	27
7. मानवाधिकाराचे प्रकार डॉ. ज्ञानेश्वर सोनवणे	29
8. मानवी हक्क : संकल्पना आणि आवश्यकता प्रा. पवार मनोरमा श्रीधर	31
9. भारतीय राज्यघटनेतील मानवी हक्क ज्योती श्रीपती जोगदंड (वैद्य) , डॉ. वनमाला गुंडरे	33
10. शाररिक शिक्षण व मानवी हक्क प्रा. भारत विठ्ठलराव पल्लेवाड	37
11. भारतीय संविधान और मानव अधिकार प्रा. डॉ. भारती नकुलराव कांबळे	39
12. मानव अधिकार आणि दहशतवाद महेशकुमार चौरै	42
13. मानवी हक्क आणि महिला प्रा. ज्ञानेश्वर बनसोडे , डॉ. महादेव गव्हाणे	44
14. भारतीय अर्थव्यवस्था : रोजगार हक्काची घटनात्मक स्थिती आणि वास्तव डॉ. डी. बी. तांदुळजेकर	47
15. मानवी हक्कांच्या संरक्षणात प्रसारमाध्यमे व स्वयंसेवी संस्थांची भूमिका प्रा. डॉ. अप्पाराव चंद्रराव गायकवाड , प्रा. डॉ. आदमाने भाऊसाहेब बंकट	50
16. मानवी हक्क आणि महिला डॉ. महादेवी वैजनाथ फड, कावळे एस.टी.	56
17. भारतीय अर्थव्यवस्था व मानवाधिकार प्रा. घुटे बालाजी तुळशीराम	58



भारतीय अर्थव्यवस्था : रोजगार हक्काची घटनात्मक स्थिती आणि वास्तव

डॉ. डी. बी. तांदुळजेकर,

अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख, यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, अंबाजोगाई, जि.बीड

प्रस्तावना :

मानवाधिकाराचे वैश्विक घोषणापत्र हे संयुक्त राष्ट्रांच्या आमसभेने 10 डिसेंबर 1948 रोजी पॅरिस येथे स्वीकारलेले घोषणापत्र आहे. गिनेस बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्ड्स अनुसार हा जगातील सर्वाधिक भाषांतरित दस्तऐवज आहे.¹ हे घोषणापत्र दुसऱ्या महायुद्धात जगाने अनुभवलेल्या नृशंस अत्याचारांचा परिणाम म्हणून अस्तित्वात आले. सर्व मानवांच्या जन्मसिद्ध मानवाधिकारांची पहिली जागतिक अभिव्यक्ती म्हणून या घोषणाकडे पाहण्यात येते. यात एकूण 30 कलमे असून त्यांचा सविस्तर अर्थ नंतर झालेल्या अनेक जागतिक करारांमधून, राष्ट्रीय घटना आणि कायदे यातून आणि स्थानिक मानवाधिकार संघटनांकडून लावण्यात आला आहे. या घोषणापत्रावर आधारित मानवी हक्कांचे आंतरराष्ट्रीय विधेयक 1966 मध्ये संयुक्त राष्ट्रसंघाच्या आमसभेत मांडण्यात आले. 1976 मध्ये पुरेशा सदस्य राष्ट्रांच्या पाठिंब्यांतर त्यास आंतरराष्ट्रीय कायद्याचे स्वरूप प्राप्त झाले.² कलम 22 ते 25 अंतर्गत रोजगार हक्काची हमी देण्यात आलेली आहे. त्याचा तपशिल पुढील प्रमाणे.

कलम 22 :

प्रत्येकास समाजाचा एक घटक या नात्याने सामाजिक सुरक्षितता प्राप्त करून घेण्याचा अधिकार आहे आणि राष्ट्रीय प्रयत्न व आंतरराष्ट्रीय सहकार्य यांच्याद्वारे व प्रत्येक राष्ट्रांच्या व्यवस्थेनुसार व साधनसंपत्तीनुसार आपल्या प्रतिष्ठेस व आपल्या व्यक्तीमत्वाच्या मुक्त विकासासाठी अनिवार्य असलेले आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक अधिकार संपादन करण्याचा हक्क आहे.

कलम 23 :

1. प्रत्येकास काम मिळण्याचा, आपल्या इच्छेनुसार काम निवडण्याचा, कामाच्या न्याय्य व अनुकूल शर्तीचा फायदा मिळवण्याचा व बेकारीपासून संरक्षण मिळण्याचा अधिकार आहे.
2. कोणत्याही प्रकारे भेदभाव न करता प्रत्येकास समान कामाबद्दल समान वेतन मिळण्याचा अधिकार आहे.
3. काम करणाऱ्या प्रत्येक व्यक्तीस स्वतःला व आपल्या कुटुंबाला मानवी प्रतिष्ठेस साजसे जीवन जगता येईल असे न्याय व योग्य पारिश्रमिक व जरूर लागल्यास त्याशिवाय सामाजिक संरक्षणाची इतर साधने मिळण्याचा अधिकार आहे.
4. प्रत्येकास आपल्या हितसंबंधांच्या संरक्षणार्थ संघ स्थापण्याचा व त्याचा सदस्य होण्याचा अधिकार आहे.

कलम 24 :

वाजवी मर्यादा असलेले कामाचे तास व ठरावीक मुदतीने पगारी सुट्ट्या धरून प्रत्येकास विश्रांती व आराम मिळण्याचा अधिकार आहे.

कलम : 25

1. प्रत्येकास स्वतःचे व आपल्या कुटुंबीयांचे आरोग्य व स्वास्थ्य यांच्या दृष्टीने समुचित राहणीमान राखण्याचा अधिकार आहे. यामध्ये अन्न, वस्त्र, निवारा, वैद्यकीय मदत व आवश्यक सामाजिक सोई या गोष्टींचा अंतर्भाव होतो. त्याचप्रमाणे बेकारी, आजारपण, अपंगता, वैधव्य किंवा वार्धक्य यामुळे किंवा त्याच्या आवाक्याबाहेरील परिस्थितीमुळे उदरनिर्वाहाचे दुसरे साधन उपलब्ध नसल्यास सुरक्षितता मिळण्याचा अधिकार आहे.
2. माता व मुले यांना विशेष देखरेख व मदत मिळण्याचा हक्क आहे. सर्व मुलांना, मग ती औरस असोत किंवा अनौरस, सारखेच सामाजिक संरक्षण मिळाले पाहिजे.

दुसऱ्या महायुद्धानंतर जगातील बहुसंख्य राष्ट्र स्वतंत्र झाली. खऱ्या अर्थाने दुसऱ्या महायुद्धानंतर सैनिकी राज्याची संकल्पना मागे पडून कल्याणकारी राज्याची संकल्पना पुढे आली. भारत देश ही 15 ऑगस्ट 1947 ला स्वतंत्र झाल्यानंतर भारताने कल्याणकारी राज्याची संकल्पना स्विकारली आणि त्याचाच एक भाग म्हणून सार्वभौम लोकशाही गणराज्य जगाच्या पटलावर अस्तित्वात आले. भारतीय राज्यघटनेने देशातील जनतेला जे मूलभूत अधिकार प्रदान करण्यात आलेले आहेत त्याचा गोषवारा हा पुढील प्रमाणे.

भारतीय राज्य घटनेने प्रदान मुलभूत हक्क :

मुलभूत हक्क ही भारतीय संविधानातील मुलभूत अधिकारांची सनद आहे. ही सनद भारतीयांना भारतीय नागरिक म्हणून त्यांचे आयुष्य शांतता व समानतेने व्यतीत करण्याचे नागरी अधिकार प्रदान करते. या मुलभूत हक्कांमध्ये कायद्यापुढे समानता, उच्चार आणि अभिव्यक्ती स्वातंत्र्य, शांततेने कोठेही उपस्थित राहण्याचे व सभा स्वातंत्र्य आणि नागरी हक्कांच्या संरक्षणासाठी संवैधानिक प्रतिकारासाठी यासारख्या याचिकांचा अधिकार असे उदारमतवादी लोकतांत्रिक देशांमध्ये असलेल्या अधिकारांच्या समावेश होतो. या अधिकारांचा भंग केल्यास न्यायालयाच्या विवेकानुसार भारतीय दंडविधान संहितेखाली शिक्षा होऊ शकते. मुलभूत मानवी अधिकाराखाली भारतीय नागरिकांच्या व्यक्तिमत्वाच्या योग्य आणि मैत्रीपूर्ण प्रगतीसाठीचे हक्क अशी भारताच्या मुलभूत हक्कांची व्याख्या केली जाऊ शकते. हे हक्क संपूर्ण जगात वंश, जन्माचे ठिकाण, धर्म, जात, संप्रदाय, रंग, लिंग, यात भेदभावाशिवाय सर्व नागरिकांना लागू आहेत. काही बंधने वगळता हे अधिकार न्यायालयाद्वारे सर्व ठिकाणी लागू आहेत. इंग्लंडचे हक्काविषयीचे विधेयक, अमेरिकन संयुक्त राज्यांचे हक्काविषयीचे विधेयक आणि फ्रान्सचे माणसाच्या अधिकाराच्या घोषणा यांमध्ये भारताच्या मुलभूत अधिकारांचे मूळ आहे.

भारतीय संविधानाने प्रदान केलेले सात मुलभूत अधिकार खालील प्रमाणे आहेत.

1. समानतेचा हक्क
2. अभिव्यक्ती स्वातंत्र्याचा हक्क
3. शोषणापासून संरक्षणाचा हक्क
4. धार्मिक निवड व स्वातंत्र्याचा हक्क



5. संवैधानिक प्रतिकाराचा हक्क
6. सांस्कृतिक व शैक्षणिक हक्क
7. मालमत्तेचा हक्क (हा हक्क 44 व्या संवैधानिक दुरुस्तीनुसार मुलभूत अधिकारातून वगळून कायदेशीर अधिकार म्हणून नमूद करण्यात आला आहे.)

खासगी व समुदायाच्या भल्याकरता असणाऱ्या स्वातंत्र्याला हक्क असे संबोधले जाते. भारतीय घटनेने प्रदान केलेले हक्क हे मूभागाचे मुलभूत कायदे यामध्ये अंतर्भूत केले असल्याकारणाने ते मुलभूत असून न्यायालयाद्वारे प्रवर्तित केले गेले आहेत. तरीही, हे हक्क अपरिवर्तनीय किंवा घटनादुरुस्तीपासून मुक्त नाहीत.

वैश्विक आणि राष्ट्रीय पातळीवर मानवी हक्कांच्या कायदेशीर घटनात्मक सनद तयार झाली असून तरी भारतासारख्या प्रचंड लोकसंख्या असलेल्या देशामध्ये रोजगाराचा हक्क आणि उपलब्ध असणारी मानवी आणि नैसर्गिक संसाधने यांचा मेळ बसणे तसे कठिण काम आहे. देश स्वतंत्र झाला तेव्हा देशाची असलेली लोकसंख्या आणि आजची असलेली लोकसंख्या आणि उपलब्ध होणारे रोजगार किंवा रोजगाराच्या संधी आणि निवडीचे स्वातंत्र्य याचा अर्थशास्त्रीय दृष्टीकोणातून मेळ घालणे व्यवहारीकदृष्ट्या शक्य वाटत नाही. झपाट्याने वाढणारी लोकसंख्या लोकशाही गणराज्यामध्ये विविध क्षेत्रामध्ये असलेली स्पर्धा यामुळे रोजगार निर्मितीला मर्यादा येतात. भारतीय अर्थव्यवस्थाही कृषी प्रधान अर्थव्यवस्था आहे. कृषीक्षेत्रामध्ये रोजगार निर्मितीची क्षमता अधिक असली तरी शेती क्षेत्राला पुरेसा पाणी पुरवठा होत नसल्या कारणाने हे क्षेत्र अतिरिक्त श्रमिकाला आपल्यामध्ये सामावून घेण्यास असमर्थ ठरते आहे. याठिकाणी आपण भारतीय अर्थव्यवस्था, भारतीय अर्थव्यवस्थेमध्ये वाढणारी लोकसंख्या आणि रोजगाराची संधी तसेच निवडीचे स्वातंत्र्य याचाही परामर्श घेणार आहोत.

संशोधनाची गृहितके :

1. रोजगार निर्मितीती पेक्षा लोकसंख्या वाढीचा वेग अधिक आहे.
2. रोजगाराच्या संधी आणि साधनांचा मेळ रोजगाराशी बसत नाही.
3. रोजगाराच्या संधी आणि निवडीचे स्वातंत्र्य याचा अभाव.
4. उच्च शिक्षण आणि रोजगाराची संधी यांची सांगड बसत नाही.
5. उच्च शिक्षण कुशल मनुष्यबळ असमर्थ आहे.

संशोधनाची उद्दिष्टे :

1. रोजगार हक्काची घटनात्मक तरतुद आणि त्याची प्रत्यक्ष अंमलबजावणी आभ्यासणे.
2. रोजगार हमी योजनेचा आढावा घेऊन रोजगार निर्मितीचा राज्य संस्थेने केलेला प्रयत्न अभ्यासणे.
3. भारतातील बेरोजगारीचा आढावा घेणे.
4. भारतातील रोजगार निर्मितीचा आढावा घेणे.

भारतातील लोकसंख्येचा विस्फोट :

लोकसंख्येच्या दृष्टीने भारत जगात सध्या दुसऱ्या क्रमांकावर आहे. पहिला क्रमांक अर्थातच चीनचा आहे. सध्याच्या भारतीय लोकसंख्यावाढीचे प्रमाण लक्षात घेता सन 2025 पर्यंत भारत चीनला मागे टाकून प्रथम क्रमांकावर येऊ शकेल. सध्याच्या जागतिक लोकसंख्येत भारताचा वाटा 17 टक्के आहे. परंतु जगाच्या भूभागांपैकी फक्त 2.4 टक्के भूभाग भारताने व्यापला आहे. दरवर्षी भारतीय लोकसंख्येत सुमारे 1.8 कोटींची भर पडते. या वेगाने सन 2050 पर्यंत भारतीय लोकसंख्या 153 कोटींवर पोहोचेल आणि तेव्हा चीनची लोकसंख्या 139 कोटी असेल.

रोजगार निर्मितीसाठी भारतामध्ये झालेले प्रयत्न :

1. राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम जे गरीब लोक उत्पन्नाचे साधन म्हणून फक्त मजुरीवर अवलंबून असतात त्या ग्रामीण लोकांसाठी ही योजना असून ही योजना केंद्रशासन पुरस्कृत असली तरीही वित्तीय बोजा हा राज्य व केंद्र शासना यांच्यात 50-50% विभागून घेतला आहे. ही योजना सहाय्या योजनेत सुरू केली असून ती 1 एप्रिल 1989 पासून जवाहर रोजगार योजनेत (JRY) समाविष्ट करण्यात आली.
2. ग्रामीण भूमिहीन मजूर रोजगार हमी कार्यक्रम ग्रामीण भागातील भूमिहीन शेतमजुराला वर्षातील 100 दिवस रोजगार देण्याची हमी या योजनेत आहे. या योजनेत कुटुंबातील किमान एका व्यक्तीला रोजगार हमी दिली जाते. हि केंद्रपुरस्कृत योजना राज्य शासनामार्फत अमलात आणली जाते. याची सुरवात 15 ऑगस्ट 1943 रोजी केली जाते.
3. समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम (IRD) राष्ट्रीय स्तरावर व्यापकपणे स्वीकारण्यात आलेली महत्वपूर्ण योजना म्हणजे समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम होय. या कार्यक्रमाची सुरवात सन 1978-79 या साली करण्यात आली. दारिद्र्य व रोजगार निर्मुलनासाठी या योजनेत गरीब कुटुंबांना वेतन रोजगार दिला जातो.
4. रोजगार हमी योजना ग्रामीण भागात हंगामी बेरोजगारीचे प्रमाण मोठे आहे. यासाठी बिगरहंगाम काळात कुटुंबातील 18 ते 60 या वयोगटातील 2 व्यक्तींना 100 दिवस रोजगार देण्याची योजना दिली आहे.
5. संपूर्ण ग्रामीण योजना 2001 मध्ये जवाहर रोजगार ग्रामसमृद्धी योजना आणि रोजगार हमी योजना यांचा समावेश संपूर्ण ग्रामीण रोजगार योजनेत करण्यात आली.
6. सुवर्णजयंती शहरी योजना (SJSRY) 1997 पासून या योजनेची सुरवात करण्यात आली. शहरी भागातील बेरोजगारी आणि दारिद्र्य कमी करण्यासाठी या योजनेची सुरवात केली आहे. यामध्ये समन्वित नागरी दारिद्र्यनिर्मुलन करण्यावर भर आहे. या योजनेत स्वयंरोजगाराला प्रोत्साहन तसेच वेतन रोजगार देणे अशा दोन्ही घटकांचा समावेश आहे. या योजनेचा 75% खर्च केंद्रशासन व 25% राज्यशासन उचलते.
7. पंतप्रधान रोजगार योजना (PMR) आठव्या पंचवर्षिक योजनेत सुशिक्षित युवकांना छोटे उद्योग स्थापन करण्यास प्रोत्साहन देण्यासाठी पंतप्रधान रोजगार योजना सुरू करण्यात आली. प्रतिवर्षी एक लाखावून अधिक कर्ज प्रकरणे या योजनेत मंजूर करण्यात आली.



संशोधनाचा निष्कर्ष :

भारतासारख्या विशाल लोकसंख्या असलेल्या देशामध्ये रोजगाराच्या हक्कावर मर्यादा येतात. रोजगारासाठी उपलब्ध असणारी संसाधने, गुंतवणुकीची पातळी, रोजगार निवडीचे स्वातंत्र्य विविध क्षेत्रांना आवश्यक असणाऱ्या कामगारामध्ये कुशलतेचा अभाव परिणामी रोजगाराच्या संधीमध्ये मुबलकता दिसून येत नाही. त्यामुळे घटनात्मक तरतूद केली तरी पूर्ण रोजगाराची पातळी गाठणे शक्य होत नाही.

संदर्भग्रंथ सूची :

१. <http://www.unhchr.ch/udhr/miscinfo/record.htm>
२. Paul Williams, Ed., 'The International Bill of Human Rights', Entwhistle, 1981
३. Indian Economics - Rudra & Dattasundaram
४. भारतीय अर्थव्यवस्था - डॉ. देसाई, डॉ. जोशी, डॉ. निर्मल भालेराव.

RESEARCH JOURNEY

Impact Factor 6.261

ISSN- 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOW ASSOCIATION'S
UGC Approved Multidisciplinary international E-research journal
PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

PUBLISHED BY

Mrs. Swati Dhanraj Sonawane,
Director, Swatidhan International Publications, Nashik

PRINTED BY

Arun Godam
Shaurya Publication
Kapil Nagar, Latur-413512
Contact- 8149668999



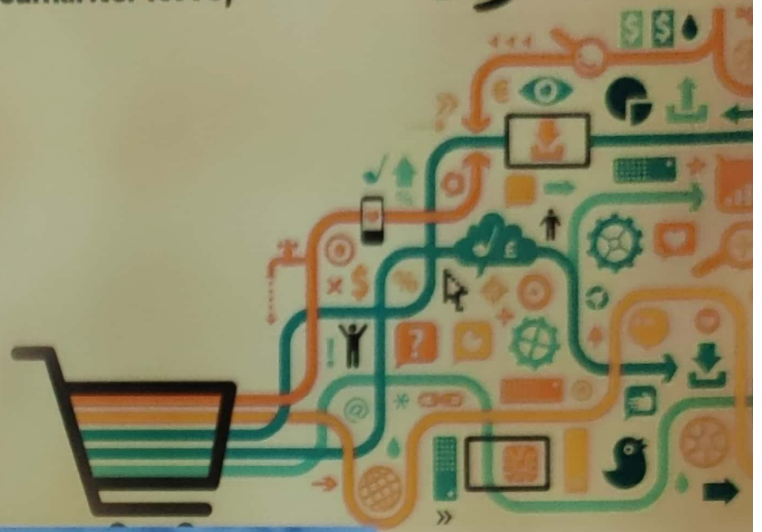
Visit to - www.researchjourney.net
www.rjournals.co.in

SWATIDHAN PUBLICATION



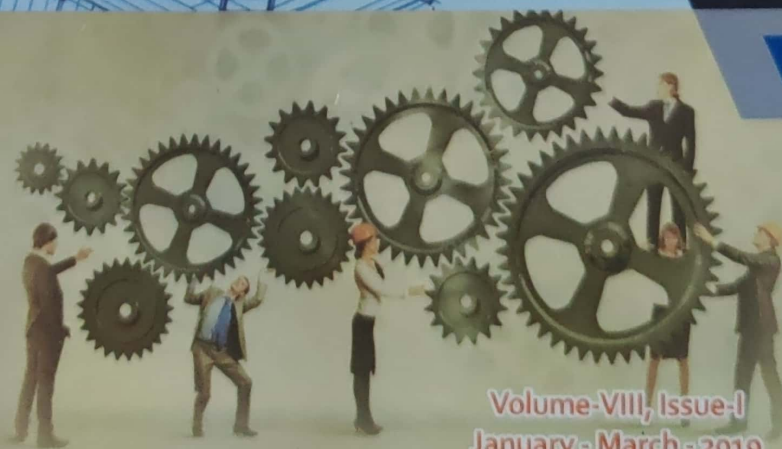


Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)



ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA



Volume-VIII, Issue-I
January - March - 2019

Ajanta Prakashan

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com



ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - VIII

Issue - I

January - March - 2019

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776



ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)



EDITORIAL BOARD



Professor Kaiser Haq

Dept. of English, University of Dhaka,
Dhaka 1000, Bangladesh.

Roderick McCulloch

University of the Sunshine Coast,
Locked Bag 4, Maroochydore DC,
Queensland, 4558 Australia.

Dr. Ashaf Fetoh Eata

College of Art's and Science
Salmau Bin Abdul Aziz University. KAS

Dr. Nicholas Loannides

Senior Lecturer & Cisco Networking Academy Instructor,
Faculty of Computing, North Campus,
London Metropolitan University, 166-220 Holloway Road,
London, N7 8DB, UK.

Muhammad Mezbah-ul-Islam

Ph.D. (NEHU, India) Assot. Prof. Dept. of
Information Science and Library Management
University of Dhaka, Dhaka - 1000, Bangladesh.

Dr. Meenu Maheshwari

Assit. Prof. & Former Head Dept.
of Commerce & Management
University of Kota, Kota.

Dr. S. Sampath

Prof. of Statistics University of Madras
Chennari 600005.

Dr. D. H. Malini Srinivasa Rao

M.B.A., Ph.D., FDP (IIMA)
Assit. Prof. Dept. of Management
Pondicherry University
Karaikal - 609605.

Dr. S. K. Omanwar

Professor and Head, Physics,
Sat Gadge Baba Amravati
University, Amravati.

Dr. Rana Pratap Singh

Professor & Dean, School for Environmental
Sciences, Dr. Babasaheb Bhimrao Ambedkar
University Raebareilly Road, Lucknow.

Dr. Shekhar Gungurwar

Hindi Dept. Vasant Rao Naik
Mahavidyalaya Vasarni, Nanded.

Memon Sohel Md Yusuf

Dept. of Commerce, Nirzwa College
of Technology, Nizwa Oman.

Dr. S. Karunanidhi

Professor & Head,
Dept. of Psychology,
University of Madras.

Prof. Joyanta Borbora

Head Dept. of Sociology,
University, Dibrugarh.

Dr. Walmik Sarwade

HOD Dept. of Commerce
Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada
University, Aurangabad.

Dr. Manoj Dixit

Professor and Head,
Department of Public Administration Director,
Institute of Tourism Studies,
Lucknow University, Lucknow.

Prof. P. T. Srinivasan

Professor and Head,
Dept. of Management Studies,
University of Madras, Chennai.

Dr. P. A. Koli

Professor & Head (Retd.),
Department of Economics,
Shivaji University, Kolhapur.

**CONTENTS**

S. No.	Title & Author	Page No.
1	Impact of Doha Declaration on Compulsory Licensing- A Critique Dr. Sunita Adhav	1-7
2	Pharmaceutical Industry Development in Pre and Post Liberation Dr. D. B. Tanduljekar	8-13
3	Resolving IPR Issues through Alternative Dispute Resolution: Challenges and Issues Dr. Archana Sukey	14-22
4	Copyright Issues In Academic Libraries: Challenges And Limitations Dr. Sunita Mane (Saware)	23-29
5	End User Liability and Copyright Issues in Cyberspace Ms. Pavithra R. Mr. Kunal Mansharamani	30-35
6	New Intellectual Property Regime and Rights of the Indigenous People: The Indian Case Mr. Abhijeet Ramkrishna Dhere	36-42
7	Comparative Study of Compulsory Licensing In Civil Law and Common Law Countries Ms. Shivanjali Bhoite	43-51
8	Alternative Dispute Resolution is the need of the hour for Intellectual Property Ms. Amulya Nigam	52-59
9	Study of Domain Names and Domain Name Dispute Resolution by INDRP: Indian Perspective Ms. Mayura Borde	60-67
10	Doha Declaration and Its Impact on Pharmaceutical Industry-A Critical Study Ms. Prajakta Pimpalshende	68-76

2. Pharmaceutical Industry Development in Pre and Post Liberation

Dr. D. B. Tanduljekar

Introduction

Intellectual Property Rights (IPRs) are the rights given to the creators of intellectual property (i.e., creations of minds), which bestows exclusive right to the creator for that product/property for a defined period of time. As per World Trade Organization (WTO), IPR can be categorized basically into two categories: copyright and industry property.¹

Copyright and rights related to copyright

Rights of the authors of artistic and literary works are protected under "copyright and rights related to copyrights." The protection offered under "copyright" is for a minimum duration of "60 years" after author's death. Intellectual properties that come under "copyright" are books, other writings, music compositions, sculpture, film, computer program, and painting. Other "neighboring rights" protected along with copyright are performer rights (acting, musician, and singing), phonogram producers (recordings), etc. The motto of such protection is to encourage creative works.

Pre and Post Liberation and Intellectual Property Rights

The Patents Act 1970 introduced the "process patent" system, which came out to be very advantageous to Indian Pharmaceutical sector. As per this act, patents were valid for 7 years. In 1994, India became a signatory to General Agreement on Tariffs and Trade (GATT), and consequently, India had to follow the IPR component of GATT, i.e., the "TRIPS" component of the "Uruguay round" of the "GATT Treaty." Noncompliance with TRIPS could lead to loss of membership of India from WTO. Following this treaty, an ordinance was passed with certain changes in the Indian patent system on December 31, 1994, but it ceased to operate after 6 months. Although "TRIPS" was brought into action since January 1, 1995, but till 1999, no change was noticed in Indian patent regulations. In 1997, the "United States" took the matter of entitlement of only "process patent" in the field of "food and drugs" in India to the WTO. The "dispute settlement body" of WTO concluded that India breached the article 70.8 (a) (requirement of "product patent system" in pharmaceutical and agricultural field) and 70.9



{exclusive marketing rights (EMR) to be provided since 1995}. In conjunction with this, India had to modify its existent patent rule and the amended act came out in 1999. Section 5 (2) of the new amended act of 1999 had the provision of mailbox application and details of EMR were included in Chapter IVA. Although this act was enacted in 1999, it had retroactive effect from January 1, 1995. This amendment had the provision of mailbox applications under the Section 5(2), where a party could apply for product patent in some special areas such as pharmaceutical and agricultural sectors (also known as WTO applications or mailbox applications). Such applications were only to be analyzed after December 31, 2004. However, the applicant could also apply for EMR as specified in Section 24A and 24B, but obtaining "EMR" did not guarantee for obtaining a patent. Hence, the GATT treaty and consequent compliance with "TRIPS" had two giant effects on Indian IPR sector; first, India moved to the "product patent" system and the "patent protection period" increased from 7 to 14 than to 20 years. To fully comply with this "product patent" system, India was given time till 2005. After 2005, India became fully compliant under "Product patent system" as per TRIPS.³

Pre & the post liberation period Indian pharmaceutical industry facing same inside and global challenges that challenges are given below.

1. This has somehow always been a problem for the companies. The onginge rumor is that the united state food and drug administration is trying to block the growth of the companies.
2. The approval of USFDA is important because the largest consumer of pharma products is the USA and India is a major exporter. The opinion of the USFDA is considered to be the standard in the sector as well.
3. The companies are trying to improve their standard and this issue can be solved by having officials who are more stringent and inspections on a regular basis can be done.
4. The Indian Pharma industry is highly fragmented. The market is overloaded with generic manufacturers.
5. This is a cause for concern because high fragmentation causes instability, volatility and uncertainty.
6. The main issue raised by most of the Pharma companies is that the profits which they earn are basically peanuts and this income is not sufficient enough.

7. The companies sight that the reforms of the Government of the essential medicines has caused them to lower the price of drugs.

Criticisms of the Current Indian Patent System

Effect of Product patent on Indian pharmaceutical sector

As Indian patent system was a "Process patent-" driven system, the transition to "product patent" system was expected to be devastating to the pharmaceutical industry, and the early reaction was full of panic. The expected outcomes were "unexpected rise in drug price" and subsequent destruction of Indian Pharmaceuticals Industry. However, the Indian pharmaceutical sector copped up with the new regulatory changes and the indigenous R&D sector started growing. Granting of "patent" is a way to encourage innovation, which allows patentees to enjoy monopoly over the patented product for a period of 20 years from the date of filing. The effect of this monopoly can be very severe in pharmaceutical sector, more so in the case of lifesaving drugs.²

Developments of pharmaceutical companies and its effects on Indian economy

Introduction The Indian pharmaceutical company has changed extremely over the last 50years, from being traders in imported drugs in the fifties, to major bulk drug producers by the eighties. During this transitional period Indian pharmaceutical units have learnt the technology of bulk drug production by their own research and adaptation, and today they produce more than 250 bulk drugs, emphasizing on import substitution and use of indigenous raw materials.⁴

Developments of pharmaceutical companies

1. At present the Indian pharmaceutical company has about 300 large units, 1700 medium-size units and about 8000 small-scale units throughout the country.⁵
2. The Indian industry has progressed through the value-added ladder of pharmaceutical production as a result of its domestic policies as well as the presence of supportive factors conditions, namely, the pool of scientific excellence available at low cost. The Indian pharmaceutical company accounted for 70% of the bulk drugs and 80% of the formulations in the country, making India one of the few countries in the world achieving self-sufficiency in drugs.
3. The industry is highly fragmented; no single company has more than 7% market share and the largest five companies account for just 20% of the total market.

4. Patents and the Future of the Indian pharmaceutical company the absence of product patent protection for pharmaceuticals and agrochemicals led many multinationals to limit their portfolios to patent expired products or a few selected patented products. This resulted in an erosion of their market share because. Local manufacturers introduced the most advanced medicines through reverse engineering. Foreign firms were required to pay royalties for international drugs, while Indian companies could access the newest molecules from all over the world and reformulate them for sale in the domestic market.⁶

Developments of pharmaceutical companies & Social Benefits:

1. The development of the Indian pharmaceutical company would create new jobs, but mainly it would provide access both to modern technology in the field of medicines and to medicines developed indigenously. As a result, it will be able to provide new drug formulations and improved healthcare treatments to Indian patients.
2. In particular, new medicines would be available to treat diabetes, cardiovascular diseases, cancer, and psychological disorders. But even during the drug discovery and development phases, significant funds would be invested in local communities.

Developments of pharmaceutical companies & Economics Benefits:

1. The development of the pharmaceutical industry would help the Indian economy produce more national wealth.
2. Foreign investment would increase, and Indian companies would have the opportunity to collaborate with many companies from around the world. Indirectly, developing the pharmaceutical industry would also help other industries.
3. The related employment opportunities in various fields are no less important. If good jobs were available locally, citizens would not feel the economic pressure to migrate to the United States, Europe, or Japan.
4. Development of clinical trial centers would provide funding from private pharmaceutical industries to local hospitals. In return, a staff of nurses and doctors would be maintained, which would benefit local communities.
5. Economic growth will bring political stability to India. It will improve international credibility and create a visionary rather than a reactionary political regime.
6. The poverty level in India stands at 27%, which is very high compared with China's 5% level, for example. (14)

7. Making medicines affordable to all Indian citizens is a noble goal, but one must strive for a fair distribution of low-priced medicines to the masses and high priced modern medicines to wealthier people.
8. The economic development that would result from growth in the pharmaceutical and computer sectors could trigger development of other sectors and indirectly lower the poverty level.
9. India can then achieve macroeconomic growth through education, infrastructure development, improved sanitation, and enhanced public health. In a political sense, these developments will forge a win-win situation for Indian citizens and politicians.
10. Foreign Direct Investment: FDI up to 100% is permitted through the automatic route for the manufacture of drugs and pharmaceuticals provided the activity does not attract compulsory licensing or involves the use of recombinant DNA technology and specific cell / tissue targeted formulations. FDI proposals for the manufacture of licensable drugs, pharmaceuticals and bulk drugs produced by recombinant DNA technology and specific cell / tissue targeted formulations will require prior approval of the Foreign Investment Promotion Board (FIPB) of the Government of India.
11. The domestic pharmaceutical market in India has grown at a CAGR of nearly 12% in the last five years. The major pharmaceutical companies in India are the main R &D investor in the country. The R&D spend (capital and current) of these major companies has grown at CAGR of 38 percent during the period 2000-01 to 2005-06. In 2005-06, the R &D expenditure of 50 major companies totaled \$495.19 million growing at a rate of 26 percent over the previous year. The higher growth rate is attributed to product patent implementation in the country in January 2005. The Indian prescription drug market in 2006 was worth Rs 27,333 crore (Rs 273.33 billion), up 18 per cent as compared to Rs 23,243 crore (Rs 232.43 billion) in 2005. Bulk of this business came from the sale of drugs that do not enjoy patent protection, a reason for the dominance of domestic pharmaceutical industry in the post - TRIPS period shows that the growth rate has been 5.29 percent per annum in pre-TRIPS period and 5.68 percent per annum in post-TRIPS period which shows that exports have increased in post-TRIPS period.

References

1. World Trade Organization. WTO What Is the WTO? – Who We Are. Last accessed on 2018 Jun 27. Available from: https://www.wto.org/english/tratop_e/trips_e/intel1_e.htm.
2. Controller General of Patents, Designs and trademarks. History of Indian Patent System. Last accessed on 2018 Jun 27. Available from: <http://www.ipindia.nic.in/history-of-indian-patent-system.htm>.
3. Indian Patents Act. 1970. Last updated on 2017 Jun 23; Last accessed on 2018 Jun 27. Available from: http://www.ipindia.nic.in/writereaddata/Portal/IPOAct/1_113_1_The_Patents_Act_1970_Updated_till_23_June_2017.pdf.
4. Nair GG. Impact of TRIPS on Indian pharmaceutical industry. *J Intellect Prop Rights*. 2008; 13:432–41.
5. Damodaran, A.D. Indian patent law in the post TRIPS decade: S&T policy appraisal. *J Intellect Prop Rights*. 2008; 13:414–23.
6. Sampat BN, Shadlen KC. Patent watch: Drug patenting in India: Looking back and looking forward. *Nat Rev Drug Discov*. 2015;14:519–20. [PubMed]



CONTACT FOR SUBSCRIPTION

AJANTA ISO 9001: 2008 QMS/ISBN/ISSN

Vinay S. Hatole

Jaisingpura, Near University Gate, Aurangabad (M.S) 431 004,

Cell : 9579260877, 9822620877 Ph: 0240 - 2400877

E-mail : ajanta1977@gmail.com Website : www.ajantaprakashan.com



Impact Factor 6.261

ISSN- 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOW ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Multidisciplinary international E-research journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

28th January 2019 Special Issue – 106

The Changing Role of the Welfare State in the Last Two Decades

Chief Editor

Dr. Dhanraj T. Dhangar
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce college,
Yeola, Dist. Nashik (M.s.) India

Executive Editor of This Issue

Dr. A.M. More
Dept. of Economics
Vasundhara College, Ghatnandur,
Tq. Ambajogai, Dist. Beed





RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal

ISSN- 2348-7143

Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452, (GIF) – 0.676 Special Issue - 106
The Changing Role of the Welfare State in the Last Two Decades

January 2019

UGC Approved
No. 40705

Impact Factor – 6.261

ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

28 Janary 2019 Special Issue- 106

The Changing Role of the Welfare State in the Last Two Decades

Chief Editor -

Dr. Dhanraj T. Dhangar,

Assist. Prof. (Marathi)

MGV'S Arts & Commerce College,

Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editor of This Issue

Dr. A.M. More

Dept. of Economics

Vasundhara College, Ghatnandur,

Tq. Ambajogai, Dist. Beed



RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal

ISSN- 2348-7143

Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452, (GIF) - 0.676
Special Issue - 106
The Changing Role of the Welfare State in the Last Two Decades

January 2019

UGC Approved
No. 40705

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S
RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal
PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

SPECIAL ISSUE - 106

Title of the issue : **The Changing Role of the Welfare State in the Last Two Decades**

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS

© All rights reserved with the authors & publisher Price : Rs. 400/-

PUBLISHED BY

Mrs. Swati Dhanraj Sonawane,

Director, Swatidhan International Publications, Nashik

E-mail : swatidhanrajs@gmail.com Website : www.researchjourney.net

PRINTED BY

Shaury Publication

Kapil Nagar, Latur-413512

Mob. 8149668999

EDITION :

28 Jan. 2019

PRICE : 400 /-

या अंकाचे सर्व अधिकार प्रकाशकांनी स्वतःकडे राखून ठेवलेले आहेत. लेखांचे प्रकाशन व पुनप्रकाशनाचे अधिकार प्रकाशक आणि संबंधित लेखकाधीन समान असून शोध निबंधातील मते ही संबंधित लेखाच्या लेखकांची वैयक्तिक मते आहेत त्या मताशी संपादक व प्रकाशक सहमत असतीलच असे नाही.





Editorial Board

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editor of This Issue
Dr. A.M. More
Dept. of Economics
Vasundhara College, Ghatnandur,
Tq. Ambajogai, Dist. Beed

Co-Editors –

- _ **Mr. Tufail Ahmed Shaikh**- King Abdul Aziz City for Science & Technology, Riyadh, Saudi Arabia.
- _ **Dr. Anil Dongre** - Head, Deptt. of Management, North Maharashtra University, Jalgaon
- _ **Dr. Shailendra Lende** - R.T.M. Nagpur University, Nagpur [M.S.] India
- _ **Dr. Dilip Pawar** - BoS Member (SPPU), Dept. of Marathi, KTHM College, Nashik.
- _ **Dr. R. R. Kazi** - North Maharashtra University, Jalgaon.
- _ **Prof. Vinay Madgaonkar** - Dept. of Marathi, Goa University, Goa, India
- _ **Prof. Sushant Naik** - Dept. of Konkani, Govt. College, Kepe, Goa, India
- _ **Dr. G. Hareesh** - Associate Professor, CSIBER, Kolhapur [M.S.] India
- _ **Dr. Munaf Shaikh** - N. M. University, Jalgaon & Visiting Faculty M. J. C. Jalgaon
- _ **Dr. Samjay Kamble** -BoS Member Hindi (Ch.SU, Kolhapur), T.K. Kolekar College, Nesari
- _ **Prof. Vijay Shirsath** - Nanasaheb Y. N. Chavhan College, Chalisgaon [M.S.]
- _ **Dr. P. K. Shewale** - Vice Principal, Arts, Science, Commerce College, Harsul [M.S.]
- _ **Dr. Ganesh Patil** - M.V.P.'s, SSSM, ASC College, Saikheda, Dist. Nashik [M.S.]
- _ **Dr. Hitesh Brijwasi** - Librarian, K.A.K.P. Com. & Sci. College, Jalgaon [M.S.]
- _ **Dr. Sandip Mali** - Sant Muktabai Arts & Commerce College, Muktainagar [M.S.]
- _ **Prof. Dipak Patil** - S.S.V.P.S.'s Arts, Sci. and Com. College, Shindhkheda [M.S.]

Advisory Board -

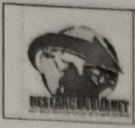
- _ **Dr. Marianna kotic** - Scientific-Cultural Institute, Mandala, Trieste, Italy.
- _ **Dr. M.S. Pagare** - Director, School of Languages Studies, North Maharashtra University, Jalgaon
- _ **Dr. R. P. Singh** -HoD, English & European Languages, University of Lucknow [U.P.] India
- _ **Dr. S. M. Tadkodkar** - Rtd. Professor & Head, Dept. of Marathi, Goa University, Goa, India.
- _ **Dr. Pruthwiraj Taur** - Chairman, BoS., Marathi, S.R.T. University, Nanded.
- _ **Dr. N. V. Jayaraman** - Director at SNS group of Technical Institutions, Coimbatore
- _ **Dr. Bajarang Korde** - Savitribai Phule Pune University Pune, [M.S.] India
- _ **Dr. Leena Pandhare** - Principal, NSPM's LBRD Arts & Commerce Mahila Mahavidyalaya, Nashik Road



	13
1. Title: Inspiring Keynote Address Dr. Jayakumar A Sindhe	14
2. Dr. Babasaheb Ambedkar : Suggested Remedies for the Farmers Dr. A.M. Korade, Prakash T. Kharat	16
3. Analysis of Reservatin Policy in India Dr. Rajesh H. Bhoite	19
4. Sustainable Development and Globalization Dr. Raut Radheshyam Kisanrao	22
5. Authorization of ICT in Women Empowerment Dr. B.V. Chalukya	28
6. Challenges and opportunities in Indian Banking Sector Dr. D. B. More , kamble krushna shivaji	32
7. The overview of Government Subsidies to Agriculture Sector in India. Dr. Ippar R.K.	35
8. India is a Welfare State: Spending on Socio-Economic Welfare Services Dr. S.H. Kadekar	38
9. Rural Public Works: Maharashtra's Employment Guarantee Scheme Dr D. K. Ingle , Dr.G.R.Khedkar	40
10. Corporate Governance of Public Sector Banks in India Prof. Dr. Ram Solankar	45
11. Economic Reforms of the Banking Sector in India Prof. Dr. Shankar B. Ambhore, Dr.Waghmare P.K.	49
12. Impact of Government Policies on Indian Economy Dr.Vitthal Shankarrao Phulari	52
13. Role Of Government In Ensuring Food Security Through Antyodaya Anna Yojana In India Vijaykumar sharanappa, Dr. Jayakumar Shinde	55
14. A Review Of Modi's Government Schemes And Welfare To Prevent Drawbacks Dr.S.L. Medhe	59
15. A Research Article On Modern Agriculture Policies: Towards Strengthening of Indian Farmers Dr. Pandurang B. Patil, Mr. B. J. Gaikwad	

- | | |
|---|-----|
| 16. Recent Trends In Indian Banking Sector
Rajesh G. Umbarkar | 63 |
| 17. Indian Economy And Agriculture
Prof Satarle Sham Laxman | 67 |
| 18. A Review Of Indian Banking Sector And Role Of Government In Its Development.
Ms. Satya Kishan | 69 |
| 19. MGNREGA and Migration Reduction -A Study in Bidar District of Karnataka
Dr. Jaibharat Madivalappa Mangeshkar | 73 |
| 20. Roll Of Indian Government In External Debt Management
Aboli Gangadhar Joshi | 80 |
| 21. भारतीय वाणिज्यिक बैंकों का विलय एवं अधिग्रहण एक अध्ययन
डॉ. सुर्यकांत त्र्यं. पवार | 84 |
| 22. भारतीय अर्थव्यवस्थेत कृषी क्षेत्राचे योगदान
प्रा. डॉ. मोरे ए.एम. | 86 |
| 23. शेती विकासाकरीता पंतप्रधान पिक विमा योजना एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
डॉ. संजय धनवटे, डॉ. महेन्द्र गावंड | 88 |
| 24. भारतातील स्त्री-पुरुष गुणोत्तरातील असमतोल : कारणे व उपाय
अमोल एस. शिंदे, श्री सावंत बी. एस. | 91 |
| 25. भारतीय शेतीची वास्तविकता आणि शासन
डॉ. महादेवी वैजनाथ फड, डॉ. दिपक महोदव भारती | 96 |
| 26. महाराष्ट्र राज्यातील कृषी पर्यटनातील अर्थसंधी : एक अभ्यास
श्री. इंद्रजीत रामदास भगत | 98 |
| 27. भारतातील 2014 नंतरच्या कल्याणकारी योजना
प्रा. डॉ. किशन सत्ताजी बाभुळगावकर | 101 |
| 28. महिलांचे सक्षमीकरण : एक आढावा
श्रीमती. देशमुख के. एस. | 103 |
| 28. जिल्हा परिषदेच्या समाज कल्याण विभागाच्या खर्च प्रवृत्तीचा अभ्यास
- विशेष संदर्भ औरंगाबाद जिल्हा-
डॉ. सुनिल अण्णा गोरडे | 106 |
| २९. जागतिकीकरण आणि भारतीय शेतीची दशा आणि दिशा
डॉ. नासिकेत गोविंदराव सुर्यवंशी | 108 |
| 30. भारतीय अर्थव्यवस्थेतील सरकारची बदलती भूमिका
डॉ वाय. बी. चव्हाण | 110 |

- | | |
|---|-----|
| 47. शासन आणि कल्याणकारी योजना
प्रा.डॉ.अर्जुन मोरे, दुर्गादास चौधरी | 155 |
| 48. भारतातील कामगाराचे अधिकार
डॉ. अनंता बापुराव देशमुख | 158 |
| 49. भारतातील कामगार सुधारणा व आव्हाने
प्रा.लोढे गणेश | 162 |
| 50. भारतीय अर्थव्यवस्थेत कृषी क्षेत्राचे स्थान
प्रा.डॉ.सुरेश टी. सामाले | 164 |
| 51. भारतातील राष्ट्रीयकृत बँका : एक चिंतन
डॉ. बी.के. शिंदे | 167 |
| 52. कामगार कल्याणकारी कायद्यांचा आढावा
डॉ.सौ.मनिषा देशमुख | 170 |
| 53. जागतिकीकरणाचे भारतीय कृषी क्षेत्रावरील परीणाम
प्रा. डॉ. खोंड सुरेश वसंतराव | 172 |
| 54. बँकिंग लोकपाल योजना
प्रा. घुले उमेश भास्कर, प्रा. जाधव हेमराज वामनराव | 174 |
| 55. शासन आणि भारतीय कृषी व्यवसाय
प्रा.गित्ते दत्तात्रय अशोकराव | 176 |
| 56. शासन आणि कल्याणकारी योजना
प्रा. गोदाम रवि शाम | 177 |
| 57. भारत सरकारच्या कल्याणकारी योजना
वसंत नथु हिस्सल | 179 |
| 58. भारत सरकारच्या कृषी योजनेचा एक चिकित्सक अभ्यास
प्रा. डॉ. कागदे बा.बा. | 182 |
| 59. भारतातील कामगार कायदे : एक अभ्यास
प्रा.डॉ.मैंद बी.व्ही. | 184 |
| 60. शासन आणि कामगार कायदे
डॉ. रनमाळ पांडूरंग श्रीरंगराव | 187 |
| 61. केंद्र शासन आणि भारतीय कृषी
प्रा.डॉ. संजयकुमार हनुमंतराव जाधव | 189 |
| ✓62. शाश्वत शेतीसाठी मृद आणि जलसंधारणाची गरज
प्रा.डॉ.डी.बी.तांदुळजेकर | 192 |



शाश्वत शेतीसाठी मृद आणि जलसंधारणाची गरज

प्रा.डॉ.डी.बी.तांदुळजेकर

अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख, यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, अंबाजोगाई

प्रस्तावना :

डाविनच्या सिध्दांतानुसार जलातून जीवाची उत्पत्ती झाली असे म्हटले जाते. सजीवसृष्टी निर्माण होणापूर्वी पृथ्वीवर सजीवाला आवश्यक असलेले घटक निर्माण झाले. ज्यात जल, जंगल, जमीन हवा, इ. पुढे नदीकाठी मानवी संस्कृती विकसित होत गेली हा मानवी जीवनाच्या इतिहासावरून स्पष्ट होते. जगामध्ये ज्या संस्कृती विकसित झाल्या त्या काळाच्या ओघात नष्टही झाल्या आणि पुन्हा नविन संस्कृती उदयासही झाला. मानवी समाज विकासाच्या विविध टप्प्यातून जात असताना मानवी समाजाने अनेक चढउतार अनुभवलेले आहेत.

भारत आज ज्या विकासाच्या टप्प्यामधून जातो आहे, जगामध्ये भारतीय अर्थव्यवस्था ही सातव्या क्रमांकाची अर्थव्यवस्था म्हणून ओळखली जाते. हा विकासाचा वेग कायम राहिला तर 2022 पर्यंत ती पाचव्या क्रमांकाची अर्थव्यवस्था होईल असा अंदाज आहे. इथपर्यंत येण्यासाठी मागील 70 वर्षांच्या काळात भारतीय अर्थव्यवस्थेची वाटचाल ही जगातील विकसनशील राष्ट्रांना निश्चितच दिशा दर्शक ठरेल. 15 ऑगस्ट 1947 ला देशाला स्वातंत्र्य मिळाल्यानंतर 26 जानेवारी 1950 पासून देशात नियोजनाला सुरुवात झाली. देश स्वतंत्र झाला तेव्हा देशाची लोकसंख्या ही 40 कोटी होती. आज ती 127 कोटी पर्यंत जाऊन पोहचली आहे. आज भारत देश जगामध्ये लोकसंख्येच्या बाबतीत दुसऱ्या क्रमांकाचा देश आहे. जगाच्या एकूण लोकसंख्येपैकी 16.7 टक्के लोकसंख्या ही भारतात वास्तव्यास आहे. तर जगाच्या एकूण भूभागापैकी 2.4 टक्के भूभाग हा भारताच्या वाट्याला आलेला आहे. लोकसंख्या अधिक आणि भूभाग कमी असला तरी नैसर्गिक साधन संपत्तीच्या बाबतीत भारत हा जगातील एक संपन्न राष्ट्र म्हणून ओळखला जातो. तर दुसऱ्या बाजूला 50 ते 60 कोटी जनता ही आर्थिकदृष्ट्या दुर्बल आहे. यातील जवळजवळ 40 कोटी लोक हे दारिद्र्य रेषेखाली आहेत. म्हणून भारताच्या आणि भारतीय लोकांच्या संदर्भात सधन देशातील निर्धन जनता असा उल्लेख केला जातो.

भारतीय अर्थव्यवस्था कृषीप्रधान अर्थव्यवस्था म्हणून ओळखली जाते तर भारतीय संस्कृती ही कृषी संस्कृती आहे, भारतीय समाज हा कृषक समाज आहे. आजही देशातील जवळजवळ 50 ते 60 टक्के लोक हे शेती क्षेत्राशी निगडित आहेत. हा टक्का जसजसा कमी होत जाईल तसतसा विकासाचा पुढचा टप्पा भारतीय अर्थव्यवस्थेने गाठलेला असेल.

संशोधनाचे उद्दिष्टे :

1. शाश्वत शेती संकल्पना अभ्यासणे.
2. शेतीच्या अर्थव्यवस्थेतील स्थान अभ्यासणे.
3. शाश्वत शेतीसाठी माती आणि पाण्याचे नियोजन अभ्यासणे.
4. शाश्वत शेतीसाठी बाजार यंत्रणेचे महत्व अभ्यासणे.
5. शाश्वत शेती, शेतकरी आणि आर्थिक स्थितीचे अध्ययन करणे.

संशोधनाचे गृहितके :

1. भारतीय शेती पावसावर अवलंबून आहे.
2. भारतीय शेतीला शाश्वत सिंचनाच्या सोईचा अभाव.
3. शेतीमालाच्या किंमतीमध्ये टोकाचे चढ-उतार असतात.
4. शेतकरी शेती उत्पादन करत असताना बाजार पेठेकडे दुर्लक्ष करतो.

तथ्य संकलन :

संशोधनासाठी द्वितीयक साधन सामुग्री आणि प्रत्यक्ष शेतकऱ्यांचे अनुभव विचारात घेवून तथ्य संकलन करून तथ्यांचे विश्लेषण करण्यात आले आहे.

शेती व्यवसायासमोरील आव्हाने :

आज नियोजन कारांच्या समोर दोन आव्हाने आहेत. एक म्हणजे शेतीवरचा ताण कमी करणे आणि शेतीची गुणात्मकता वाढविणे, आणि दुसरे म्हणजे उद्योग, सेवा क्षेत्रामध्ये नवनवीन संधी निर्माण करणे. शेतीचा गुणात्मक दर्जा वाढविण्यासाठी देशपातळीवर आज ते 40 टक्के सिंचनाचे प्रमाण आहे. सिंचन क्षमता वाढविण्यासाठी 'माथा ते पायथा', जलयुक्त शिवाराच्या माध्यमातून सिंचनाचे प्रमाण वाढविणे आणि दुसऱ्या बाजूला शेती मातीचे विघटन चाललेले आरोग्य सुधारणे. वैज्ञानिक पध्दतीने पाण्याचा वापर, खते, किटकणाशके याचा शेतीसाठी केलेल्या भडीमारातून हवा, पाणी, मातीवर इ ालेला प्रतिकूल परीणाम शेती मातीचा घटती उत्पादकता, नदऱ्यांचे आणि भुजलाचे वाढते प्रदुषण, हवेमधील कार्बनडॉयऑक्साईडचे वाढते प्रमाण, पर्यावरणातील बदल ही आपल्या समोरील आव्हाने आहेत. ही आव्हाने समर्थपणे पेलण्यासाठी विज्ञान आणि तंत्रज्ञानाच्या माध्यमातून पर्यावरण पूरक शेतीचा वापर करणे आज आवश्यक झालेले आहे.

21 व्या शतकामध्ये जगभर शेतीमध्ये नवनविन प्रयोग करून उत्पादकता वाढविण्याचा प्रयत्न केला जात आहे. भारतही त्याला अपवाद नाही. शेतीमध्ये वारेमाप आदानाचा वापर केल्यामुळे तीची उत्पादकता कमी तर होणार नाही ना, असा जेव्हा प्रश्न निर्माण झाला, तेव्हा आपण शाश्वत शेती करण्याचा विचार करू लागलो.

शाश्वत शेतीसाठी उपाययोजना :

1. माती परीक्षण :

शाश्वत शेती, उदरनिर्वाहा ऐवजी व्यावसायिक शेती याकडे वळत असताना आपणाला काही खबरदारी घेणे आवश्यक आहे. शेतीसाठी वापरली जाणारी आदाने यामध्ये पाणी, बी-बीयाणे, खते, किटकणाशके यांचा मेळ बसवत असताना त्याचे काही प्रतिकूल परिणाम तर होणार नाहीत ना, याचीही



काळजी घेणे आवश्यक आहे. मातीमध्ये विविध प्रकारचे जे 18 घटक असतात. त्यातील कोणते घटक मातीमध्ये किती प्रमाणात उपलब्ध आहेत, हे मातीपरीक्षण केल्यानंतर लक्षात येते. याचा अर्थ शेती माती आरोग्य काय आहे, हे लक्षात आल्यानंतर कोणत्या घटकाची किती मात्रा शेतीला आवश्यक आहे, त्यानुसार नियोजन केले तर शेतीची उत्पादकता वाढविण्यास मदत होते.

2. **सिंचन क्षमतेचा पर्याप्त वापर :**
शेती मातीचे परीक्षण केल्यानंतर पिकाची निवड, रचना करून त्याप्रमाणे दुर्मीळ अशा पाण्याचे नियोजन करणे हे ही तितकेच आवश्यक आहे. ज्या क्षेत्रामध्ये ज्या पिकांचे नियोजन केलेले आहे, त्या भागामध्ये पावसाचे प्रमाण काय आहे, पाण्याची उपलब्धता कशी आहे आणि आपण सिंचनाचे कोणते तंत्र वापरतो, याचे नियोजन हा माती परीक्षणानंतरचा शेती उत्पादन वाढीचा दुसरा टप्पा ठरतो.

3. **खते आणि किटकनाशकांचा पर्याप्त वापर :**
माती आणि पाण्याचे नियोजन केल्यानंतर खते, किटकनाशके यांचा वापरही शेती नियोजनाचा तीसरा टप्पा ठरतो. त्यासाठी हवामानामध्ये होणारा बदल आणि संपाव्य धोके विचारात घेऊन तंत्रज्ञाच्या मार्गदर्शनाखाली किटकनाशकाची फवारणी करून घेणे गरजेचे आहे. केवळ शेतीसाठी जमीन, पाणी, बी-बीयाने, खते, किटकनाशके, अवजारे इत्यादींचा विचार करून शेती ही व्यवसायिक होत नसते तर पीक कापणी पासून ते बाजारात अंतीम उपभोक्त्यापर्यंत वस्तू घेवून जाण्यासाठी प्रभावी यंत्रणा निर्माण करतो ही तितकेच आवश्यक आहे. या प्रभावी यंत्रणेशिवाय शेती मालाला राहत योग्य किंमत ही प्राप्त होत नसते.

4. **प्रभावी बाजारयंत्रणा निर्माण करणे :**
शेतीमाल हा एकतर नाशिवंत असतो आणि फारतर एखादे वर्ष तो टिकणारा असतो. शेती मालातील विविध पिकांचे आयुष्य हे एक दिवस ते एक वर्ष कालावधीचे असते. नाशिवंत किंवा कमी नाशिवंत अशी आपण शेती मातीची विभागणी करू शकतो. भाजीपाला नाशिवंत तर अन्नधान्य कमी नाशिवंत असते. बाजारपेठेमध्ये शेती मालाला योग्य किंमत मिळण्यासाठी देशामध्ये एक प्रभावी यंत्रणा निर्माण करत असताना, शेती मालाच्या स्वरूपानुसार शितगृह आणि गोडाऊनची निर्मिती ही शेतीसाठी एक प्रभावी यंत्रणेचा भाग असेल, यासाठी शासन व्यवस्थेने प्रभाविपणे आणि प्रमाणिकपणे काम करणे हे शेती विकासासाठी आवश्यक आहे. देशामध्ये अन्नधान्याचे, भाजी पाल्याचे, दुधाचे उत्पादन मोठ्या प्रमाणावर वाढलेले आहे. ते साठविण्यासाठी गोदाम, शितगृहाची यंत्रणा उपलब्ध नसल्याने शेती मालाला बाजारात योग्य किंमत मिळत नाही. भविष्यामध्ये ती व्यवस्था शासन व्यवस्थेकडून निर्माण होईल अशी अपेक्षा करण्यास हरकत नाही. शेती मालाला योग्य किंमत मिळवून देण्यासाठी शासन स्तरावर शेतीमाल बाजारात सरकारने हस्तेक्षेप करणे आवश्यक आहे. आज शेतीमाल बाजारामध्ये 'हमी भाव' जाहिर केला जातो ती हमी भाव यंत्रणा उत्पादन खर्चाशी निगडित यंत्रणा निर्माण करणे आवश्यक आहे. नुकतेच सरकारने चालू अंदाज पत्रकामध्ये शेतीमालाला उत्पादन खर्चाच्या दीडपट हमी भाव देणार असल्याचे घोषित केले आहे. ही एक शेतकऱ्यासाठी जमेची बाजू आहे.

5. **सहकारी पणन संस्थांची निर्मिती :**
ग्रामीण भागातील बाजार समित्यांचा संख्यात्मक आणि गुणात्मक दर्जा उंचावण्यासाठी शासनाने या बाजारसमित्यांना पायाभूत संरचना निर्माण केल्या तर शेतमालाला शास्वत किंमत प्राप्त होण्यास मदत होवू शकते. आलीकडे भारत सरकारने 22000/- ग्रामीण बाजार समित्यांच्या सुधारणेसाठी भारत सरकारने 500 कोटी रूपयाची तरतूद केली, जी जमेची बाजू आहे बाजार समित्यांचा विकास करत असताना. शेतकऱ्यांच्या सहकारी संस्था निर्माण करून बाजारपेठेपर्यंत समुहाने आपापला माल एकत्र करून त्याची सांगड वाहतूकीशी जोडली तर वाहतूक खर्चामध्ये कपात होवू शकते. शेतकरी वर्गाची संख्या आणि शेतीमालाची विविधता विचारात घेता आवश्यकतेनुसार शेतकऱ्यांनीही पूढे येणे आवश्यक असून गावा-गावा मध्ये सहकारी तत्वावर समुह निर्माण करून त्या समुहाला स्वतःकडे आकर्षित करणे ही आवश्यक आहे. असे झाले तर निश्चितच शेतीमाल बाजारपेठेपर्यंत आणण्याचा खर्च कमी करणे शक्य होईल. शेती मालाला आज जी हंगामी शेतीमाल विक्रीची व्यवस्था आहे, तिच्या जागो शेतकऱ्याची स्वतःची सक्षम यंत्रणा सहकार तत्वावर निर्माण होणे ही आवश्यक आहे. शेतीमाल बाजार यंत्रणेमध्ये जी व्यापारी वर्गाची घूसखोरी आहे, ती जर कमी केली तर शेतकऱ्यांना आपल्या मालाचा योग्य मोबदला मिळण्यास मदत होईल.

6. **शेतीसाठी प्रभावी आयात-निर्यात धोरण असावे :**
शेतीमालाच्या आयात-निर्यात विषयक धोरणाचा दरवर्षी आढावा घेवून WTO च्या नियमावलीची बाधा येणार नाही आणि आंतरराष्ट्रीय करार जे बंधनकारक आहेत ते शाबूत ठेवून ज्या ज्या कृषीमालाची आयात निर्यात आणि त्यावरील बंधने कायद्याच्या चौकटीत ठेवून आवश्यक आहे. WTO च्या कायदानुसार आपण शेतीला जी अनुदाने देवू शकतो, ती देत असताना परदेशी शेतीमालाला जकाती लादल्यानंतर उत्तर म्हणून प्रतिक्रिया निर्यातक देशांकडून लादली जाणार तर नाहीत, याचीही काळजी घेणे आवश्यक आहे.

आज जगामध्ये तांदळाच्या उत्पादनामध्ये भारत दुसऱ्या क्रमांकावर आहे. तूर दाळ उत्पादनही सरप्लस झाले आहे. अशा परिस्थितीमध्ये साखरेवर 100% आयात शुल्क लादली असता देशातील साखर उद्योगाला स्थिरता येत असताना तांदुळ, तूर उत्पादनावर आयातक देशाने आयात शुल्क आकारले तर त्यातून निर्माण होणाऱ्या प्रश्नास जबाबदार कोण? असा प्रश्न निर्माण होतो. शेतीमाल त्याची गुणवत्ता, टिकावपणा, बाजार, आयात-निर्यात, आंतरराष्ट्रीय करार, जागतीकीकरणाच्या युगामध्ये या आणि अशा शेतीमाल विषयक उत्पादन किंमत विषयक धोरण उरविण्यापूर्वी देश आणि प्राप्त प्रदेशानुसार शेतीमाल उत्पादनाचे पॅटर्न जर आपण निर्माण करू शकलो तर शेतीच्या प्रश्नांची दाहकता निश्चितच कमी होण्यास मदत होईल.

7. **शेतीविषयक अल्पकालीन आणि दीर्घकालीन धोरण असावे :**
अल्पकालावधीचा विचार केला असता आधारभूत किंमत, शेतकरी कर्जमाफी, शेती अनुदाने या उपाययोजना होवू शकतात. परंतु, दीर्घकाळाचा विचार करत असताना, हे काही कायमचे उपाय होवू शकत नाहीत. शेती आणि शेतकरी यांच्या सर्वांगीण विकासासाठी शेतीशी संबंधीत पायाभूत सेवा सुविधांचा, बाजाराचा, आणि नवनवीन तंत्रज्ञान आत्मसात करून त्याचा वापर करणे ही भविष्यातील गरज असणार आहे. यासाठी शासन व्यवस्था आणि शेती उद्योगाचे जाणकार, शेतकरी यांनी एकत्र उत्पादक आणि उपभोक्ता यांचे एकात्मिक कल्याण डोळ्यासमोर ठेवून नियोजन करणे आवश्यक आहे.

शेतीमाल, त्याचा उत्पादन खर्च, बाजारातील मागणी आणि पुरवठा, त्याची योग्य किंमत ठरविणे हा गुंतागुंतीचा विषय आहे. प्रत्यक्ष व्यवहारीक, आणि अनुभवावर आधारीत शेतकरी आणि ग्राहक यांना दोघानाही फायदेशीर ठरेल अशी यंत्रणा निर्माण करणे गरजेचे. आज एका विशिष्ट कालखंडात टमाटे, कोथींबीर, कांदे, बटाटे यांच्या बाजारपेठेच्या किंमतीमध्ये कमालीचा चढउतार पाहवयास मिळतो आणि अशा वेळी कधी शेतकरी तर कधी उपभोक्ता रस्त्यावर येतो. याला उपाय म्हणून प्रदेशा-प्रदेशानुसार देशपातळीवर शास्त्रीय पध्दतीने आणि बाजारपेठेचा विचार करून पीकरचना निर्माण करणे आणि त्यामध्ये शेतक-यांना सामावून घेणे आवश्यक आहे, जेणेकरून शेतकरी आणि ग्राहक या दोघांचे हीत हे साध्य केले जाईल.

संदर्भ सूची :

1. भारतीय अर्थव्यवस्था - डॉ. देसाई, भालेराव.
2. कृषि व ग्रामिण अर्थशास्त्र - डॉ. विजय कवि मंडन.
3. कृषि अर्थशास्त्र - वसुधा परोहित.
4. भारतीय अर्थव्यवस्था (वार्षिक अंक) वित्त मंत्रालय भारत सरकार पुरस्कृत.
5. भारतीय अर्थव्यवस्था - रूद्र आणि दत्त सुंदरम.

RESEARCH JOURNEY

Impact Factor 6.261

ISSN- 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOW ASSOCIATION'S
UGC Approved Multidisciplinary international E-research journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

PUBLISHED BY

Mrs. Swati Dhanraj Sonawane,
Director, Swatidhan International Publications, Nashik

PRINTED BY

Shaury Publication
Kapil Nagar, Latur-413512
Mob. 8149668999



Visit to - www.researchjourney.net
www.rjournals.co.in

SWATIDHAN PUBLICATION



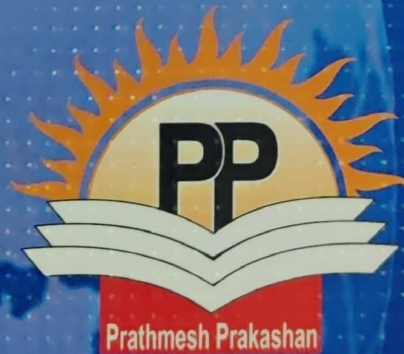
Val No. : 6 Issue No : 2 Feb. 2018

ISSN No. : 2320-9410



NEW INTERNATIONAL RELIABLE RESEARCH JOURNAL

UGC Approved List No. 63613



Prathmesh Prakashan, Aurangabad.

- Chief Editor -
Asst. Prof. A. V. Hingmire

- Executive Editor -
Asst. Prof. L. M. Rathod

IMPACT FACTOR 2.009



**NEW INTERNATIONAL
RELIABLE RESEARCH JOURNAL**

AIMS & SCOPE

New International Reliable Research Journal (NIRRJ) is a monthly International Journal publishing in multidisciplinary. It is published in All Subject and All Languages.

New International Reliable Research Journal (NIRRJ) has been started to publish the research paper by great thinkers, intelligentia, scholars, lecturers. Those who have contributed in the field of Higher Education and Research for advanced Knowledge.

Chief Editor

Asst. Prof. A.V. Hingmire

Executive Editor

Asst. Prof. L.M. Rathod

The Editor, Editorial Board and Publisher assume no responsibility for statements and opinions expressed by the Author in this Research Journal

Single Issue Rs. 300/-, Life Membership Rs. 10000/- (Ten Years)
Each Paper Rs. 1200/- Institution Yearly Rs. 3600/-

Instruction Call for papers

The Papers must be an original contribution. The size of the paper should not exceed 2000 to 2500 words in A4 size. in MS-Office (Word), Time New Roman (Font size - 12) for English and ISM DVB-ttsurekh (Font size 14) font in Marathi and Hindi. along with paper should the title, Authors Name, mailing address and Telephone Nos.

Mode of payment : Payble at State Bank of India Ambajogai Dist. Beed

Account No. : 32887113235, Hingmire A.V.

IFSC Code : SBIN0003403

For Details Information Please visit www.prathmeshpublication.in

www.prathmeshpublication.in



**NEW INTERNATIONAL
RELIABLE RESEARCH JOURNAL**

Chief Editor
Asst. Prof. A.V. Hingmire

Executive Editor
Asst. Prof. L.M. Rathod

ADVISORY BOARD

♦ **Dr. Ganesh Shetkar,**
Asst. Professor,
Govt. B.Ed. College, Ambajogai.
Member of Management Council,
Dr. B.A.M.Univ. Aurangabad.

♦ **Prof. Dr. Shobhna Joshi,**
Dean, Faculty of Edu.
Head of Dept.(Edu.)
Dr. B.A.M.Univ. Aurangabad.

♦ **Dr. B.S. Handibag,**
Dean, (Language Faculty)
Dr. B.A.M.U. Aurangabad.

♦ **Dr. V.V. Khandare,**
Dean, (Social Science)
Dr. B.A.M.U. Aurangabad.

♦ **Prof.Dr. D.B. Dhaigude,**
Dept. of Maths
Dr. B.A.M.U. Aurangabad.

♦ **Dr. D.D. Sawale**
Reader, HOD (Dept. of History)
V.R. Shinde College, Paranda.
Chairman, BOS (History)
Dr. B.A.M.Univ. Aurangabad

♦ **Dr. Ganpat Rathod,**
Reader, (Dept. of Hindi)
S.R.T. College, Ambajogai

♦ **Dr. Ankush Kadam,**
Asst. Prof. (Dept. of Physics)
Jawahar College, Andur
Member of Academic Council,
President of BAMUCTA A'bad.

♦ **Dr. A.Y. Dalvee**
Principal,
Vasundhara Mahavidyalaya,
Ghatnandur, Tq. Ambajogai.

♦ **Dr. Haridas Rathod,**
Vice Principal,
Havgiswami Mahavidyalaya,
Udgir, HOD (Dept. of Geo.)

♦ **Dr. R.N. Karpe**
Co-ordinator,
N.S.S. Programme,
Dr. B.A.M.U. Univ. Aurangabad.



NEW INTERNATIONAL RELIABLE RESEARCH JOURNAL

Chief Editor
Asst. Prof. A.V. Hingmire

Executive Editor
Asst. Prof. L.M. Rathod

EDITORIAL BOARD

Sr. No.	Name of Editor	Subject	College / Inst. Name
1	Asst. Prof. Chate Ram	Marathi	Vaidyanath College, Parli Dist. Beed
2	Asst. Prof. More K.C.	Marathi	Prof. V.D. Karad College of Edu. Kaij Dist. Beed
3	Dr. Raut K.K.	Marathi	Asst. Teacher, Yogeshwari Nutan Vidyalaya, Ambajogai Dist. Beed
4	Dr. Kadam Sachin	Hindi	Sangamner Maha. Sangamner Dist. Nagar
5	Asst. Prof. Jadhav U.C.	Hindi	Dnyanopasak Mah. Jintur Dist. Parbhani
6	Dr. Rajpankhe M.S.	English	Yashvantrao Chavan College, Ambajogai Dist. Beed
7	Asst. Prof. Raut S.R.	English	Vasant College Kaij Dist. Beed
8	Dr. Vyavhare Kranti	Sanskrit	HOD Dr. BAMU A'bad
9	Asst. Prof. Kandle S.C.	Sanskrit	Savarkar college Beed
10	Dr. B.R. Lahorkar	Education	Shri Balaji B.Ed. College Washim
11	Asst. Prof. Phulari N.N.	Education	BSPM B.Ed. College, Ambajogai Dist. Beed
12	Asst. Prof. Shep B.B.	Education	SSTE B.Ed. College Ambajogai Dist. Beed
13	Asst. Prof. Chavan G.P.	Poli. Science	Adarsh Mahavidyalaya Hingoli
14	Asst. Prof. Ade V.V.	Political Science	C.J. Patel Arts, Comm, Sci. College Tirora Dist. Gondiya
15	Dr. Devarshi M.A.	History	Savarkar Mah. Beed
16	Dr. Smt. Manda T. More	History	Shri Swaropsingh Hirya Naik College of Education, Navapur Dist. Nandurbar
17	Dr. Sawant S.S.	Economics	Bhosla Military college, Nashik
18	Asst Prof. Mule P.K.	Economics	Yashwantrao Chavan college, Tuljapur Dist. Osmanabad
19	Dr. Dokhle Manik	Pub. Admn.	Late Baburao Patil college, Hingoli
20	Dr. Sangekar S.S.	Pub. Admn.	Sant Ramdas college, Ghansangavi Dist. Jalna



NEW INTERNATIONAL RELIABLE RESEARCH JOURNAL

CONTENTS

Sr. No.	Title & Name of the Author(s)	Page No.
1	Authorship Pattern and Collaborative Research Paper Published In Conference Proceeding of Library & Information Science Mr. Barphe Vijay Uttamrao / Dr.Kapde Deepak	1
2	Myth And Modern Dramatic Techniques In The Selected Plays Of Girish Karnad -A Study A.RAMESH	8
3	Financial Inclusion: Present Scenario and Road Ahead Dr. Subhash Savant	13
4	शिक्षक शिक्षणातील अध्ययन संदर्भातील नवविचारपवाह शहाणे सुनिता विठ्ठल / डॉ. कनिज फातेमा	17
5	पर्यटनातुन ग्रामीण विकास : एक समाजशास्त्रीय अभ्यास विशेष संदर्भ : ग्रामीण महाराष्ट्र डॉ. संजय सुरेवाड	25
6	बँकांच्या घोटाळ्यात जनतेचे मरण प्रा.डॉ.डी.बी.तांदुळजेकर,	29
7	Mental Health & Well-being of College Teachers and Students Laxman Kisanrao Shitole	32
8	Ethical dimensions of Immanuel Kant's Rationalism Vijayalaxmi M / Yugendar Nathi,	41
9	ROLE OF COMMERCIAL BANKS IN RURAL DEVELOPMENT IN INDIA K.Srinivas,	48
10	సాహితీ లోకంలో దేవులపల్లి రామానుజ రావు జె. శంకర్(వరీశోధక విద్యార్థి), తెలుగు శాఖ, ఉ.వి.	53



ORIGINAL ARTICLE

बँकांच्या घोटाळयात जनतेचे मरण

प्रा.डॉ.डी.बी.तांदुळजेकर,
अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख,
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय,
अंबाजोगाई, जि.बीड

भारत सरकारच्या समाजवादी समाजरचनेकडे वाटचाल करणाऱ्या धोरणाचा भाग म्हणून १९५५, १९६९, आणि १९८० मध्ये देशातील मोठ्या व्यापारी बँकांचे झालेले राष्ट्रीयीकरण, १९७५ मध्ये क्षेत्रिय ग्रामीण बँकांची निर्मिती, १९८२ मध्ये झालेली नाबार्डची स्थापना या सर्वांचा परिणाम म्हणून १९६९ नंतर देशात झालेली बँकांची संख्यात्मक वृद्धी शाखांचा विस्तार, दरडोई बँकांची संख्या, ठेवी आणि कर्जांमध्ये झालेली वृद्धी. ही वाढ होत असतांना ठेवी, कर्जांच्या गुणात्मक दर्जाकडे झालेले दुर्लक्ष झाले. परिणामी १९८० ते १९९० च्या दशकामध्ये अडचणीत आलेला बँक व्यवसाय, परकीय चलनाचा, कर्जाचा निर्माण झालेला प्रश्न आणि अशात उदारीकरणाचे जागतिक पातळीवर वाहणारे वारे, डंकेल प्रस्ताव, गॅट करार आणि भारताने स्वीकारलेले खुले आर्थिक धोरण आणि त्यानंतर भारतीय बँक व्यवसायाला विविध बँकांच्या अनेक घोटाळयाने दिलेले हादरे.

यामध्ये पहिला मोठा हादरा १९९२ मध्ये हर्षद मेहता सेक्स्युरिटी घोटाळयाने दिला. मुंबईच्या नरोमन पॉइंट स्थित स्टेट बँक ऑफ इंडिया शाखेतील अधिकारी कर्मचाऱ्यांना हाताशी धरून हर्षद मेहताने ४९९९ कोटी रूपयाचा अपहार केला. कर्जातून सेक्स्युरिटी आणि सेक्स्युरिटीतून कर्ज असा तो अपहार होता. तो घोटाळा बँक रीसीप्टसच्या माध्यमातून हर्षद मेहताने घडवून आणला.

१९८४ मध्ये हर्षद मेहताने शेअर मार्केट मध्ये दलाल म्हणून काम करण्यास सुरुवात केली. पुढे स्वताची एक फर्म स्थापन करून अल्पावधीमध्ये भारतातील श्रीमंत लोकांच्या यादीमध्ये एक श्रीमंत म्हणून तो पुढे आला. शेअर बाजारामध्ये त्याला **बीग बूल** म्हणून लोक ओळखू लागले. नंतर त्याच्या सेक्स्युरिटी घोटाळयाने त्याचे जे व्हायचे ते झाले. कैदेमध्ये असताना त्याचा मृत्यु झाला. हर्षद मेहताचा वारसा त्याच्या कंपनीमध्ये काम करणारा एक नौकर केतन पारीख यानेही पुढे सार्वजनिक क्षेत्रातील बँकांच्या व्यवस्थापणातील त्रुटीचा फायदा घेत बँक घोटाळा केला.

आज हर्षद मेहता, केतन पारीख, ललीत मोदी, विजय माल्ल्या, याच्या पावलावर पाउल ठेवत सार्वजनिक क्षेत्रातील पंजाब नॅशनल बँक आणि बँक ऑफ बडोदा मध्ये निरव मोदी मेहुल चौकशी या मामा भाच्या ने आणि विक्रम कोठारी आणि राहुल कोठारी या पीता पुत्राने ११४०० कोटी रू. आणि ३६९५ कोटी रू. याचा घोटाळा करून अर्थव्यवस्थेत सुनामी निर्माण केली. दोनच दिवसात या बँकांच्या भागधारकांचे जवळजवळ १४ हजार कोटी रू. नुकसान झाले. निरव मोदी आणि मेहुल चौकशी च्या बँक घोटाळयामुळे पंजाब नॅशनल बँकेला ११४०० कोटी रू. तर एस.बी.आय. ला १३६० कोटी रूपयाचा फटका बसला. पंजाब नॅशनल बँकेच्या मुंबई येथील बँडी हाऊस शाखेतील व्यवस्थापक गोकुळनाथ शेठ्टी सह त्याचे चार सहकारी आणि निरव मोदीच्या कंपनीचा सीएफओ विपुल अंबानी यानी एकत्र येऊन निरव मोदीला २०११



ते २०१७ या कालावधीमध्ये २९३ एलओयु देऊन ११३०० कोटी रूपयाचा घोळ केला तर मेहुल चौकशी याने जवळजवळ ७००० कोटी रूपयाचा विविध बँकाचा घोळ केला आहे. तर विक्रम कोठारी आणि राहुल कोठारी या पिता-पुत्राने ३६९५ कोटी रू. सर्वाजनीक बँकांचे थकवलेले आहेत. या सुनामीने आणि घोटाळ्याच्या धक्क्याने सार्वजनिक बँकांच्या विश्वासाचे पार बारा वाजून गेले. शेअर बाजार कोसळला, व्यापारी बँकांच्या एकंदरीत कार्यप्रणालीवर पुन्हा एकदा प्रश्नचिन्ह निर्माण झाले. सार्वजनिक क्षेत्रातील व्यापारी बँकांच्या पतीची आणि नियतीची राखरांगोळी झाली. देशांतर्गत आणि आंतरराष्ट्रीय पातळीवर भारतातील व्यापारी बँकाकडे संशयाने बघण्याच्या वृत्तीला यामुळे बळ मिळाले.

आज देशामध्ये जी आर.बी. आय. प्रणाली आहे. यामध्ये सार्वजनिक, खाजगी, विदेशी, सहकारी बँकांचे जे जाळे आहे. त्यामध्ये संख्यात्मक दृष्ट्या सार्वजनिक व्यापारी बँकांची शाखा, ठेवी, कर्ज खाजगी आणि विदेशी बँकाशी सार्वजनिक क्षेत्रातील व्यापारी बँकांची तुलना केली तर, सार्वजनिक क्षेत्रातील वाढता एन.पी.ए. चा आकडा एक चिंतनाचा आणि चिंतेचा विषय ठरलेला आहे. दिवसेंदिवस सार्वजनिक क्षेत्रातील व्यापारी बँकांचा एन.पी.ए. चा आकडा वाढतो आहे.

सार्वजनिक क्षेत्रातील व्यापारी बँकांच्या शाखांची भारतभर मक्तेदारी आहे. २०१३-१४ साली सर्वच सार्वजनिक क्षेत्रातील व्यापारी बँकांचा एकूण नफा हा ५०५८२ कोटी रू. असताना विदेशी बँकांनी ११५८८ कोटी रू. कमावला, तर खाजगी खाजगी व्यापारी बँकांनी मिळविलेला एकूण नफा हा २०१३-१४ साली २८९९५ कोटी रू. इतका होता. प्रतीशाखा किंवा प्रती कर्मचारी सार्वजनिक व्यापारी बँकांचा नफा इतरांच्या तुलनेत कमी आहे. २००२ मध्ये SARFAESI Act. आल्यानंतर ही सार्वजनिक क्षेत्रातील व्यापारी बँकांचा एन.पी.ए. हा २००५-२००६ मध्ये जो ५१८२० कोटी रूपयांपर्यंत गेलेला आहे. जूलै २०१७ मध्ये देशातील ३८ व्यापारी बँकांचा एन.पी.ए. आकडा आहे. ८२९३३८ कोटी रू. पर्यंत वाढता एन.पी.ए. जर आपण कमी करू शकलो नाहीत. SARFAESI Act. २००२ हा एन.पी.ए. कमी करण्यास असमर्थ ठरला आहे.

मागील २०-२५ वर्षांमध्ये सार्वजनिक क्षेत्रातील जे अनेक एकामागून एक घोटाळे झाले त्यापासून आपण काही शिकणार नाहीत का? रिझर्व बँक ऑफ इंडिया, भारत सरकारचे अर्थ मंत्रालय, हे यापासून काही धडा घेऊन बँकिंग कार्य प्रणालीतील उणीवा दूर करण्यासाठी काही उपाय योजना करणार नाही का? बँकांनी घोटाळे करावेत. सीबीआय, ईडी आणि पोलिस यंत्रणा त्यावर कार्यवाही करतील, अटक होईल, शिक्षा होईल, वसुली होईल, होणार नाही. काळाच्या ओघात लोक विसरून जातील. आणि पुन्हा एक नविन घोटाळा पुढे येईल हे असे किती दिवस चालू ठेवणार? या अशा घोटाळ्यांचा देशाच्या अर्थव्यवस्थेवर होणारे प्रतिकूल दुरगामी परिणाम देशातील सर्वसामान्य लोकांनी भोगतच राहावयाचे का? सार्वजनिक बँकांचा एन.पी.ए. इमानदार आयकर दात्यांच्या करातून वर्षानुवर्ष अशाच पद्धतीने भरून द्यायचा का? या आणि अशा अनेक प्रश्नाची उत्तरे शोधायची असतील तर बँकिंग व्यवसाय प्रणालीमध्ये आमुलाग्र बदल करणे गरजेचे आहे.

कर्ज कालावधी, मर्यादा आणि तारण याची सांगड घालत असताना कोण कशासाठी आणि किती कर्ज घेत आहे. कर्ज मंजूर करण्याची अधिकार यंत्रणा दुरुस्त करणे आवश्यक आहे. कर्ज मंजूर करणारी यंत्रणा, मोठ्या उद्योगगृहांना किंवा मोठ्या व्यावसायिकांना कर्ज देत असताना सार्वजनिक क्षेत्रातील बँकांनी स्वतंत्र व्यवस्थापन मंडळाच्या अधिपत्याखाली अशी प्रकरणे निकाली काढणे आवश्यक आहे. हे करत असतांना शाखा व्यवस्थापक ते मुख्य व्यवस्थापकाची जबाबदारी निश्चित करणे आवश्यक आहे. सर्वच सार्वजनिक क्षेत्रातील बँकांनी मोठ्या व्यक्ती कर्जदाराची माहिती ही आदान प्रदान करावी. एका व्यक्तीने, संस्थेने एका सार्वजनिक बँकेकडून कर्ज घेतले तर दुसऱ्या सार्वजनिक बँकेने त्या व्यक्तीला कर्ज देऊ नये आणि दिलेच तर पहिल्या बँकेचे ना हरकत प्रमाणपत्र दिल्याशिवाय कर्ज वाटप करूच नये.

आज देशामध्ये २७ बँका सार्वजनिक क्षेत्रामध्ये काम करत आहेत. खर्च एवढ्या संख्येची आवश्यकता आहे का? या बँकांचे एकीकरण करून संख्या जर कमी करता आली किंवा एकच बँक

निर्माण केली तर एक ग्राहक एकदाच सार्वजनिक क्षेत्रातील बँकेकडून घेऊ शकेल किंवा त्याला त्याचे नुतनीकरण करता येईल. परंतु अनेक बँकाकडे जाऊन वेगवेगळी कर्ज तो घेणार नाही. अशा परस्थितीत बँकाचा कर्ज बुडीचा धोका कमी होईल.

आज सार्वजनिक क्षेत्रातील कर्ज बुडीत जी प्रकरणे आहेत. त्यात मोठ्या रक्कमा बुडवणाऱ्या व्यक्ती, संस्था, कंपण्या ज्या आहेत. त्यांची वर्तमानपत्रातून आणि ऑनलाईन पध्दतीने नावे जाहीर करण्यास काय अडचण आहे. समाजाला, लोकांना आणि देशाला ही नावे कळू द्या, त्यांची पत, इमेज लोकांच्या समोर येऊ द्या ? त्याचा एक फायदाच होईल. कारण आपल्या उच्च पदाचा अवमान होऊनये म्हणून बरीच मंडळी कर्जाची परत फेड करतील.

आज बँकाचा **एन.पी.ए.** वाढण्यास बँकांची कार्यप्रणाली ही तितकीच जबाबदार आहे. कर्ज प्रणालीचे अंतर्गत आणि बाह्य ऑडिट करणारी यंत्रणा ही संशयाच्या फेऱ्यात आहे. प्रत्येक सार्वजनिक क्षेत्रातील अंतर्गत हिशोब तपासणी यंत्रणा काय आहे ? ती किती परीपूर्ण आहे ? बाहेरची यंत्रणा सार्वजनिक बँकांचे ऑडिट करता असताना अशा उणीवा त्यांना सापडत नसतील तर त्यांची दुरूस्ती करणे गरजेचे आहे. अंतर्गत किंवा बाह्य हिशोब तपासणी करणारे ऑडिटर्स, सी.ए. आपला स्वःहित साधण्याचा प्रयत्न करत असतील किंवा त्याचा हेतू हा स्वच्छ नसेल तर अशा लोकांवर कायदेशीर कार्यवाही करून त्यांच्या नोंदणी प्रमाणपत्र रद्द करणे आवश्यक आहे.

सार्वजनिक क्षेत्रातील बँकांचे नियमन आणि नियंत्रण करण्याची जबाबदारी ही आर.बी.आय.ची असतांना या उणीवास आम्ही जबाबदार नाहीत असे आर.बी.आय. म्हणून शकत नाही. हर्षद मेहताच्या घोटायानंतर शेअर बाजाराचे नियमन आणि नियंत्रण करण्यासाठी जशी सेबीची निर्मिती झाली तशी स्वतंत्र यंत्रणा आर.बी.आय. ने एन.पी.ए. च्या संदर्भात निर्माण करणे गरजेचे आहे.

भारत सरकार किंवा भारत सरकारचे अर्थमंत्रालय या जबाबदारीतून मुक्त होत नाही. कारण त्यांनीही मोठी कर्ज आणि एन.पी.ए. नियंत्रणासाठी स्वतंत्र यंत्रणा निर्माण करण्यासाठी आर.बी.आय. ला आदेशीत करावे आणि आरबीआय ने मोठ्या कर्जासाठी एक स्वतंत्र यंत्रणा निर्माण करावी जेणे करून बँकामध्ये भविष्यात घोटाळे हे होणार नाहीत.

सार्वजनिक क्षेत्रातील बँकांचा एन.पी.ए. आणि हर्षद मेहता ते निरव मोदी आणि विक्रम कोठारी पर्यंत बँकांच्या मध्ये झालेले अनेक घोळ आणि घोटाळे यावर तो मार्ग असेल अन्यथा असेच चालू राहिले तर भविष्यामध्ये आपला देश हा बँकांनी दिवाळखोरीत काढलेला देश असेल.

Peer Reviewed

ISSN 2319-8648

Indexed (SJIF)

Impact Factor - 7.139

Current Global Reviewer

UGC Approved International Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages



Editor in Chief
Mr. Arun B. Godam



CURRENT GLOBAL REVIEWER

Issue XI , Vol. IV (Indexed)
March. 2018

Peer Reviewed
SJIF Impact factor

ISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 7.139

Impact Factor – 7.139 ISSN – 2348-7143

Curren Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal

PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

March 2018 Issue- XI Vol. IV

Chief Editor

Mr. Arun B. Godam

Shaurya Publication , Latur

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Issue XI , Vol. IV (Indexed)
March. 2018

Peer Reviewed
SJIF Impact factor

ISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 7.139

Editorial Board Member

Dr. V.D. Satpute
Principal,
Late Ramesh Warpudkar
ACS College, Sonpeth Dist. Parbhani
(M.S.)

Dr. Shivaji Wadchkar
Dept. of Hindi
Late Ramesh Warpudkar
ACS College, Sonpeth Dist. Parbhani
(M.S.)

Dr. Vanita Kulkarni
HOD,
Dept. of Hindi,
Late Ramesh Warpudkar
ACS College, Sonpeth Dist. Parbhani
(M.S.)

Dr. Ashok Jadhav
Dept. of Public Administration
Late Ramesh Warpudkar
ACS College, Sonpeth Dist. Parbhani
(M.S.)

Dr. Sunita Tengse
Dept. Sociology
Late Ramesh Warpudkar
ACS College, Sonpeth Dist. Parbhani
(M.S.)

Dr. Vitesh Nikte
Dept. Of Public Administration
M.B. College Latur (M.S.)

Dr. Amol Kale
Dept. Of. Public Administration
Peoples' College, Nanded. (M.S.)

Dr M.U. Yusuf
Assistant Professor,
Dept of Commerce,
Sir Sayyed College,
Aurangabad, Dist. Aurangabad

S. R. Uchale
Librarian,
Shri Bhausaheb Vartak College,
Borivali (W), Mumbai

S.R. Kadam
Head, Dept. of History,
Janvikas College,
Bansorala, Dist. Beed (M.S.)

Dr. Gopal S. Bhosale
Head, Dept. of Hindi,
Janvikas College,
Bansarola, Dist. Beed (M.S.)

Dr. Hanumant Mane
Research Guide & Head, Dept. of Marathi,
Shivchatrapati College,
Kalam, Dist. Osmanabad(M.S.)

Prof. Mohan S. Kamble
Dept. of Marathi,
Janvikas Mahavidyalay,
Bansarola, Dist. Beed (M.S.)

Prof.Chitade Nandkishor
Dept. of Economics,
Janvikas Mahavidyalay,
Bansarola, Dist. Beed (M.S.)

Dr.Koshidgewar Bhasker
H.O.D (Computer Science)
Vai. D.M.Deglurkar College,
Degloor, Dt. Nanded (M.S.)

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Issue XI , Vol. IV (Indexed)
March. 2018

Peer Reviewed
SJIF Impact factor

ISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 7.139

Index

1. Digital Banking :An Overview 5
Dr Madhukar P Aghav
2. Financial Markets : Evaluating Averages and Indicators 13
Dr Sachin Nagnath Hadoltikar
Memon Sohel Mohd Yusuf
3. Human Resource Management (Hrm) :An Overview 19
Dr. Kathar Ganesh. N.
4. Impact of Mergers & Acquisition on Private Sector Banks 26
In Global Economy
Dr. Nanaji Krishna Aher
5. Dramatic Stress: The Spirit of Play 32
Sheema Farheen
Dr Farhat Durrani
6. Recent Trend InBanking 41
Swapnil .Kalyan. Laghane, Dr Quazi Baseer Ahmed
7. Corporate Governance in Maharashtra Companies 49
Dr. Rajesh Bhausahab Lahane
8. Effective Digital Marketing Strategies & Approaches 59
Dr Vikrant Uttamrao Panchal
9. Global Competitiveness of Indian Industries Strategy and 70
Innovation
Dr. Rajendra Ashokrao Udhan
10. Indian logistics Trade in Dynamic World Scenario 79
Adnan Ali Zaidi, Dr Memon Ubed
11. Demonetization: Before And After Menkudle D.V 95
Dr. Shahuraj S. Mule
12. लातूर जिल्ह्यातील मराठी महिन्यानुसार यात्रांचे वितरण : एक भौगोलिक अभ्यास 99
प्रा.डॉ.आर.एस. धनुश्वर
13. हिंदी साहित्य में किसान विमर्श 102
डॉ. सुभाष इंगळे
14. हस्त भरत कला – मार्गदर्शन आणि उपयोगिता हस्त-भरतकलेचा इतिहास : 105
डॉ. एम.एन साखळकर
15. अध्यापन पध्दती व व्यावसायिक विकास घडवून आणणाऱ्या सुधारणा 109
डॉ. सतीश नारायण लोमटे
16. महाराष्ट्रातील अवर्षण प्रवण स्थितीचा संशोधनात्मक आढावा 111
प्रा. डॉ. डी. बी. तांदुळजेकर

महाराष्ट्रातील अवर्षण प्रवण स्थितीचा संशोधनात्मक आढावा

प्रा. डॉ. डी. बी. तांदुळजेकर

अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख, यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, अंबाजोगाई

जल हे सर्व जीवांच्या उत्पत्तीचे कारक मानले जाते. म्हणून जल अमृत मानले जाते. जलाचे संवर्धन व जतन करा म्हणजे जल तुमचे जतन आणि संवर्धन करेल. या मानवतावादी धोरणातून मानवाने जलाशी अनेक पातळ्यांवरून मागील शेकडो वर्षांपासून आपले नाते प्रस्थापित केले आणि त्यामधूनच जल संस्कृतीचा, जलातून जावनाकडे बघण्याचा एक विधायक दृष्टिकोन निर्माण झाला. जोपर्यंत मानव या मूलभूत ग्रहिताशी प्रामाणिक होता तोपर्यंत त्याला पाण्याची आडचण जाणवत नव्हती. परंतु १९व्या शतकाच्या उत्तारार्धामध्ये पाण्याकडे बघण्याच्या त्याच्या विधायक दृष्टिकोणात बदल होऊ लागला आणि पर्यावरण संतुलन, भूजल संवर्धन, पाण्याचे न्याय वाटप आदींची जागा स्वार्थाने घेतली, तेव्हा पाण्यावरील सार्वभौमत्वाची नवी कल्पना आकार घेऊ लागली. त्यामधून पाण्याचे पावित्र्य, पाण्याचे सांस्कृतिक उत्तरदायित्व आदि संकल्पना पुसल्या गेल्या व पाणी एक व्यापारी मूल्य असलेली वस्तू असून तिच्या व्यापारी मूल्यामध्ये वाढ कशी होईल आणि भांडवली गुंतवणूक केल्यास आपणास किती लाभ होऊ शकेल यावर माणसाने आपले लक्ष केंद्रित केले त्यामुळे पाण्याशी असलेले सर्व पातळीवरील संबंध धोक्यात आले. ते नव्याने प्रस्थापित करण्याची आज खरी गरज आहे.

महाराष्ट्रातील अवर्षणाची स्थिती:

भारत मौसम विज्ञान विभाग येथील शास्त्रज्ञांनी १८७५ ते १९९७ या १२३ वर्षांतील पावसाच्या अभ्यासावरून सतत ३ पेक्षा जास्त शुष्क आठवड्याची शक्यता आणि अवर्षण प्रवणता निर्देशांक काढला आहे. त्याचे अवर्षण प्रवण निर्देशांक निकष व तिव्रता पुढीलप्रमाणे आहे.

अवर्षण प्रवणता निर्देशांक निकर व तिव्रता : DI अवर्षण प्रवणतेचा निर्देशक

$DI < 20$	अति तिव्र अवर्षण प्रणता
$20 < DI < 35$	तिव्र अवर्षण प्रवणता
$35 < DI < 50$	मध्यम अवर्षण प्रवणता
$50 < DI < 70$	सौम्य अवर्षण प्रवणता
$70 < DI$	क्वचित्त अवर्षण

या निकषानुसार महाराष्ट्रात १२३ वर्षांपैकी २७ वेळा २२ टक्के अवर्षण प्रवण स्थिती उदभवलेला आहे. पुढे अवर्षणाचा तक्ता दिला आहे. अवर्षणाचे सतत दोन वर्षे असे चार वेळा (१९०५, १९११-१९१२, १९७१-१९७२ व १९८४-१९८५) पडले आहे. परंतु सतत तिन वेळा अवर्षणाची स्थिती झालेली नाही. एकूण २७ अवर्षण वर्षांपैकी १८७७, १८९९, १९१८ व १९७२ साली संपूर्ण महाराष्ट्रात अवर्षण स्थिती झालेली आहे. एका दशकात जास्तीत जास्त चार वेळा अवर्षण झाल्याचे दिसून येते. या अभ्यासात असेही दिसून येते की कोकाण विभागात अति तिव्र किंवा तिव्र असे अवर्षण स्थिति झालेले नाही. पण ९ वेळा मध्यम अवर्षण स्थिती झालेली आहे. मध्य महाराष्ट्र, मराठवाडा व विदर्भात मध्यम किंवा तिव्र अवर्षण स्थिती ९, ११ व १६ वेळा आलेली आहे. महाराष्ट्रात अवर्षणाची वारंवारिता कोकाण, मध्य महाराष्ट्र, मराठवाडा व

विदर्भात अनुक्रमे ७.७, १५ व १३ टक्के आहे. महाराष्ट्र प्रदेशाचा विचार केला तर येथे अवर्षणाची वारंवारता २२ % आहे म्हणून राज्याला अवर्षण प्रवण क्षेत्र म्हणता येईल.

अवर्षण प्रवण क्षेत्राची लक्षणे :

- येथील पाउस हा बेभरवशाचा आहे. काही वेळा उशिरा येतो काही वेळा नेहमीपेक्षा लवकर थांबतो तर काही वेळा पावसात खंड पडतो. महाराष्ट्रात एकाच वर्षात १ ते ५ वेळा पावसात खंड पडल्याची उदाहरणे आहेत आणि पावसात खंड पडल्याचा कालावधी २ आठवड्यांपासून ते सतत ९ आठवड्यापर्यंतचा आहे.
- एकूण पडणारा पाउस हगामी पिकाची गरजेएवढा किंवा जास्त असला तरी प्रत्यक्ष पावसाचा कालावधी थोडा असतो त्याची तिब्रता जास्त असते. पडलेले संपूर्ण पाणी जमीनीत मुरत नाही त्यापैकी बरेच पाणी वाहून जाते आणि वाहून जाणाऱ्या पाण्याबरोबर जमीनीच्या वरच्या थरातील सुपिक माती वाहून जाते.
- भूजलाचे पुरेशा प्रमाणात पूनर्भरण होत नसल्यामुळे भूजल पातळी हळूहळू कमी होत राहते.
- काळ्या व तांबड्या अशा दोन्ही प्रकारच्या जमीनी आढळतात तेथील शेतकरी जमीनी सुधारणेवर जास्त खर्च करू शकत नसल्यामुळे जास्त चढ उताराच्या, सेद्रीय पदार्थांचे प्रमाण कमी झालेल्या उत्पादकता कमी असलेल्या जमीनी आढळतात.
- अवर्षण प्रवण क्षेत्रातील शेतजमीनीपासून मिळणारे पिकाचे उत्पादन जाड्या भरड्या अन्नधान्यापुरते मर्यादित आहे. काही ठिकाणी तेलबियाची लागवड होते, परंतु कोरडवाहू पिकावर पुरेशी गुंतवणूक करण्याचा धोका पत्करल्याचे दिसत नाही. त्यामुळे शेतीतून योग्य उत्पादन व उत्पन्न कमीच असते. येथे हलकी उथळ जमीनही लागवडीखाली आणण्याचे प्रमाण जास्त दिसते.

अवर्षण प्रवण क्षेत्राच्या निश्चीतीकरणाचा आढावा :

अवर्षण प्रवण क्षेत्राच्या स्थाननिश्चीतीचा हेतू असा आहे की देशाच्या आणि राज्याच्या कोणत्या भागात कोणकोणत्या काळामध्ये अवर्षण सध्य परिस्थिती निर्माण झाली. अवर्षणाची तिब्रता किती होती, त्याचा त्या विशिष्ट प्रदेशाच्या विकासावर त्याचा काय परिणाम झाला, अवर्षणाचे होणारे दुष्परिणाम टाळण्यासाठी त्या विशिष्ट प्रदेशामध्ये कोणत्या प्रकारची उपचार कामे होऊ शकतात याचे नियोजन करण्याच्या कामी ही स्थान निश्चीती मदत करत असते. केंद्र आणि राज्य सरकार यांनी नियुक्त केलेल्या समित्या, अभ्यासगट, तसेच काही तज्ञ व्यक्ती यांनी विविध निकषाचा अवलंब करून महाराष्ट्रातील वेगवेगळे पाणलोट क्षेत्र, त्यातील जिल्हा आणि तालुके अवर्षण प्रवण म्हणून जाहीर केलेले आहेत त्याचा थोडक्यात नपशील पुढीलप्रमाणे आहे.

१) श्री एन. एस. परदासानी

महाराष्ट्र सरकारने अवर्षण पत्रण क्षेत्र निश्चीत कामासाठी १९६० साली श्री एन एस परदासानी यांच्या अध्यक्षतेखाली वस्तुस्थिती अन्वेषण समिती स्थापन केली. अवर्षण प्रवण क्षेत्राची स्थिती निश्चित करण्यासाठी पर्जन्यमान, आणेवारी व जमीन महसुलाची स्थिती आणि भूतकाळात टंचाई जाहीर झाल्याचे प्रसंग इ. निकषावर आधारित अ, ब, क अशा तीन गटामध्ये महाराष्ट्रातील अवर्षण क्षेत्राचे वर्गीकरण केले. प्रत्येक तीन वर्षांमध्ये, सहा वर्षांमध्ये व दहा वर्षांमध्ये एकदा ज्या भागात पिके सर्वस्वी किंवा जवळ जवळ सर्वस्वी बुडाली असतील तो भाग अनुक्रमे अ, ब, व क गटामध्ये

समाविष्ट केला. समितीच्या शिफारशी विचारात घेऊन महाराष्ट्र शासनाने राज्यातील ५३ तालुक्यांमध्ये अवर्षण क्षेत्र असल्याचे जाहीर केले.

२) अजितप्रसाद जैन (१९७२):

केंद्र शासनाने १९७२ साली श्री अजितप्रसाद जैन यांच्या अध्यक्षतेखाली दुसऱ्या सिंचन आयोगाची स्थापना केली. आयोगासमोर असलेल्या अनेक विषयांपैकी सतत अवर्षणग्रस्त प्रदेशाकरिता किमान सिंचनाच्या सोयी सूचविणे का एक विषय होता. त्या अनुषंगाने सतत अवर्षणग्रस्त क्षेत्र निश्चित करण्यासाठी आयोगाने हवामान, महसुली तुट, दुष्काळ व सिंचनाच्या सोयीची उपलब्धता या निकषाचा विचार करून वार्षिक पर्जन्यामानाच्या ७५ टक्क्या पेक्षा कमी पाउस पडल्यास अशा वेळी त्या भागाला अवर्षण प्रवण क्षेत्र म्हणावे. त्यानुसार मागील ६० वर्षात २० टक्क्यांपेक्षा अधिक वेळ अवर्षणाची परिस्थिती असल्यास या भागाला सतत अवर्षण क्षेत्र समजावे असे या आयोगाचे म्हणणे आहे. अवर्षण प्रवण क्षेत्र निश्चित करण्यासाठी या आयोगाने तालुका क्षेत्र निश्चित केले. या आयोगाने एण लागवडापैकी ३० टक्के लागवड सिंचनाखाली असेल तर अशा तालुक्याचा यामध्ये समावेश करू नये असे सूचविले. महाराष्ट्रातील ४५ तालुक्यांचा सतत अवर्षण प्रवण क्षेत्र म्हणून या आयोगाने निश्चिती केली.

३) सुकथनकर समिती (१९७२)

महाराष्ट्र शासनाने १९७२ साली महाराष्ट्रातील पाणी टंचाई क्षेत्राचे सर्वेक्षण करण्यासाठी पुन्हा एकदा वस्तुस्थिती अन्वेषण समिती नियुक्त केली. या समितीने अवर्षणग्रस्त क्षेत्र निश्चित करण्यासाठी पुन्हा पर्जन्यमान, पिकासाठी वेळेवर पाउस पडणे व न पडणे, आणेवारी, जमीन महसुलाचे विलंबन भूतकाळात टंचाई निर्माण झाल्याचे प्रसंग, उत्पादन, विक्रीसाठी शिल्लकी उत्पादन, भावामधील चढउतार, अन्नधान्याचा उठाव आणि लोकसंख्या विचारात घेऊन महाराष्ट्रातील सतत अवर्षण प्रवण क्षेत्र निश्चिती केली.

जून ते ऑक्टोबर दरम्यान ११ किंवा अधिक आठवडे पाऊस कमी पडत असल्याचे आढळून आले. तो भाग समितीने अवर्षण मानला आहे. मात्र मोठ्या सिंचन प्रकल्पांतर्गत जर पाणी पुरवठा होत असेल तर त्या भागाला या म्हणून वगळण्यात आले आहे. या समितीने महाराष्ट्रातील ८३ तालुके अवर्षण प्रवण क्षेत्र म्हणून निर्देशित केलेले आहेत. त्यानंतर पूर्वी अवर्षण प्रवण म्हणून जाहीर झालेल्या तालुक्याची त्यात भर घालून महाराष्ट्र शासनाने ८७ तालुक्यांना अवर्षण प्रवण क्षेत्र म्हणून जाहीर केले.

४) डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन समिती :

अवर्षण प्रवण क्षेत्र कार्यक्रम व वाळवंट विकास कार्यक्रम याची व्याप्ती आणि अंमलबजावणी यासंबंधी शिफारशी करण्यासाठी केंद्र शासनाने डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन यांच्या अध्यक्षतेखाली एका अभ्यास गटाची १९८२ ला नियुक्ती केली होती. अवर्षण प्रवण क्षेत्र कार्यक्रमाखाली केंद्रशासनाने संमत केलेल्या एकूण तालुक्यांमध्ये खालिल प्रकारचे तालुके सदर कार्यक्रमातून वगळवे असे या अभ्यासगटाने सूचविले.

७५० मिमी किंवा अधिक पाउसमान असलेल्या प्रदेशात जेथे पिकाखालील निव्वळ क्षेत्राच्या ३० टक्के किंवा अधिक क्षेत्रामध्ये जलसिंचनाच्या सोयी निर्माण झालेल्या आहेत. ७५० मिमी पेक्षा कमी पाउसमानाच्या प्रदेशात जेथे पिकाखालील निव्वळ क्षेत्राच्या ४० टक्के किंवा अधिक क्षेत्रामध्ये जलसिंचनाच्या सोयी निर्माण झाल्या आहेत. अवर्षण प्रवण क्षेत्र विकास कार्यक्रमांमध्ये समाविष्ट नसलेले जे तालुके खालील कसोट्यांना उतरत असतील त्यांचा नव्याने त्या कार्यक्रमात समावेश करावा. वार्षिक पाउसमान ७५० मिमी पेक्षा कमी असल्यास निव्वळ सिंचनक्षेत्र पिकाखालील निव्वळ क्षेत्राच्या १५

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Issue XI , Vol. IV (Indexed)
March, 2018

Peer Reviewed
SJIF Impact factor

ISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 7.139

टक्याहून कमी असावे. वार्षिक पाउसमान ७५० ते ११२५, मिमी दरम्यान असल्यास निव्वळ जलसिंचनाक्षेत्र पिकाखालील निव्वळ क्षेत्राच्या १५ टक्याहून कमी असावे. वार्षिक पाउसमान ११२५ मिमी पेक्षा अधिक असल्यास निव्वळ जलसिंचन क्षेत्र पिकाखालील क्षेत्राच्या १० टक्याहून कमी असावे. अशा प्रकारे नव्याने समावेश करण्यास योग्य असलेले तालुके संबंधित जिल्हयातील एकूण तालुक्याच्या २० टक्याहून कमी असावेत.

महाराष्ट्र शासनाने १९७३ साली अवर्षण क्षेत्र म्हणून जाहीर केलेल्या ८७ तालुक्यापैकी ७२ तालुक्यांना अवर्षणप्रवण क्षेत्र कार्यक्रमा खाली केंद्रशासनाने मान्यता दिली. वर नमुद केलेल्या निकषाच्या अनुषंगाने या अभ्यासगटाने अशी शिफारस केली की या ४२ तालुक्यापैकी १५, तालुके सदर कार्यक्रमातून वगळवे व २६ नवीन तालुके त्यामध्ये समाविष्ट करावेत. त्यानुसार एकूण ५३ तालुके या कार्यक्रमाखाली आणावे अशी शिफारस या अभ्यासगटाने केली.

५) डॉ. व्ही. सुब्रमन्यम समिती १९८४

महाराष्ट्रातील अवर्षण प्रवण क्षेत्राचे पुनर्विलोकन करण्याच्या दृष्टीने महाराष्ट्र शासनाने सन १९८४ साली डॉ सुब्रमन्यम यांच्या अध्यक्षतेखाली एक समिती नेमील होती या समितीने अवर्षण प्रवण क्षेत्र निश्चीत करण्यासाठी विविध तालुक्यातील पर्जन्यमान पिण्याच्या पाण्याची गरज, जमिनीची खोली या निकषाचा विचार केलेला आहे. सर्व हंगामातील कार्यसाधक पाउस निश्चीत केला. विचारात घेतलेल्या एका वर्गापैकी किती वर्षामध्ये हंगामातील कार्यसाधक पाउस अवर्षण दर्शक पावसाइतका किंवा त्याहून कमी होता हे प्रत्येक तालुक्याच्या बाबतीत शोधून काढले. एकूण विचारात घेतलेल्या वर्षाच्या २० टक्के किंवा त्याहून अधिक वर्ग अवर्षणदर्शक गाउसमान किंचा त्याहून कमी पाउसमान झाल्याचे आढळले से तालुके त्यांनी अवर्षण मानले.

१९८४ पर्यंत अवर्षण प्रवण म्हणून जाहीर झालेल्या ८९ तालुक्यापैकी नाशिक जिल्हयातील इगतपुरीखेरीज इतर ८८ तालुके आणि जळगाव जिल्हयातील जामनेर, जालना जिल्हयातील जालना व जाफ्राबाद, बीड जिल्हयातील अंबाजोगाई व लातूर जिल्हयातील लातूर व औसा हे सहा तालुके असे एकूण ९४ तालुके अवर्षण ठरविण्यात आले.

- आधार महाराष्ट्र जल व सिंचन आयोग अहवाल १९९९, प्र.क्र.८८७.

राष्ट्रगीत

जन-गण-मन अधिनायक जय हे

भारत भाग्य-विधाता,

पंजाब-सिन्धु-गुजरात-मराठा-

द्राविड-उत्कल-बंग

विन्ध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा

उच्छल-जलधि-तरंग

तव शुभ नामे जागे

तव शुभ आशीष मांगे,

गाहे तव जय-गाथा

जन-गण-मन-मंगलदायक जय हे

भारत-भाग्य-विधाता

जय हे, जय हे, जय हे,

जय जय जय जय हे ।

2017-2018

M.S.P. Mandal's

Yeshwantrao Chavan College, Ambajogai

Teachers Personal Memoranda

1. Full Name

: Tandujekar Dhurmoaj Baburao

Sumame Name Father's/Husband's Name

2. Address - 1. Local

: Mandadeep Residency, Flat No-204,
Subhas Nagar, Barsew Road, Latur

Phone No. _____ Mobile. : 9403814837

2. Permanent : Mandadeep Residency, Flat No-204
Barsew Road, Latur.

Phone No. _____ Mobile. : 9403814837

Date of Birth

: 04/07/1967 Blood Group +B

Qualifications

: MA. EL. SET. Ph.D.

Subject

: Economics

Designation

: Professor

PF Account No.

: _____

Total Exper. of Teaching:

21 years.

Date of Superannuation:

0. Details of Assigned Work:

a) Co-curricular Activities :

b) Extra-curricular Activities :

1. PAN No.

: AJHPK0879M

2. E-mail ID

: dtandujekar@gmail.com

3. Adhar Card No.

: 325081171260



2018-2019

M.S.P. Mandal's
Yeshwantrao Chavan College, Ambajogai
Teachers Personal Memoranda

1. Full Name : Tandujekar Dharmraj Baburao
Surname Name Father's/Husband's Name
2. Address - 1. Local : HOD Economics Yeshwantrao
Chavan College, Ambajogai Dist
Beed.
Phone No. _____ Mobile. : 9403814837
2. Permanent : _____

Phone No. _____ Mobile. : _____
3. Date of Birth : 04/07/1967 Blood Group B+
4. Qualifications : M.A. ECO. SET, Ph.D.
5. Subject : Economics.
6. Designation : Associate professor
7. PF Account No. : _____
8. Total Exper. of Teaching: 21 years.
9. Date of Superannuation: _____
10. Details of Assigned Work: _____
a) Co-curricular Activities : _____
b) Extra-curricular Activities : _____
11. PAN No. : abtandujekar@gmail.com
12. E-mail ID : _____
13. Adhar Card No. : _____

M.S.P. Mandal's

Yeshwantrao Chavan College, Ambajogai
Teachers Personal Memoranda

1. Full Name : Tanduljekar Pharmraj Baburao
Sumame Name Father's/Husband's Name
2. Address - 1. Local : HOD Economics, Yeshwantrao
Chavan College, Ambajogai
dist. Beed.
Phone No. _____ Mobile. : 9403814837
2. Permanent : Nandadeep Residency, Flat no 204
Sobhas Nagar, Buski Road
Latur
Phone No. _____ Mobile. : 9403814837
3. Date of Birth : 04/07/1967 Blood Group B+
4. Qualifications : M.A. - ECO. SET, PHD
5. Subject : Economics
6. Designation : Associate professor.
7. PF Account No. : _____
8. Total Exper. of Teaching: 21 years.
9. Date of Superannuation: _____
10. Details of Assigned Work: _____
- a) Co-curricular Activities : _____
- b) Extra-curricular Activities : _____
11. PAN No. : dbtanduljekar@gmail.com
12. E-mail ID : AJHPK0879m
13. Adhar Card No. : 325081171260

M.S.P. Mandal's
Yeshwantrao Chavan College, Ambajogai
Teachers Personal Memoranda

1. Full Name : Dr. Tandujekar Dharmraj Baburao
Sumame Name Father's/Husband's Name
2. Address - 1. Local : Mundadeep Residency, Flat No 204
Subhas Nagar, Barshi Road
Latur.
Phone No. _____ Mobile. : 9403814837
2. Permanent : Mundadeep Residency, Flat No.
204, Subhas Nagar, Barshi Road
Latur 413512 7020896130
Phone No. _____ Mobile. : 9403814837
3. Date of Birth : 04/07/1967 Blood Group B+
4. Qualifications : M.A.(Eco) SET, Ph.D.
5. Subject : Economics
6. Designation : Professor.
7. PF Account No. : _____
8. Total Exper. of Teaching: 24 years
9. Date of Superannuation: _____
10. Details of Assigned Work: _____
- a) Co-curricular Activities : _____
- b) Extra-curricular Activities : _____
11. PAN No. : ATHPK0879M.
12. E-mail ID : elbtandujekar@gmail.com.
13. Adhar Card No. : 325081171260

2021-2022

M.S.P. Mandal's

Yeshwantrao Chavan College, Ambajogai

Teachers Personal Memoranda

1. Full Name

: Dr. Tanduljekar Dharmraj Baburao

Sumame

Name

Father's/Husband's Name

2. Address - 1. Local

: HOD Economics, Yeshwantrao Chavan College, Ambajogai, Dist. Beed.

Phone No. _____

Mobile. : 9403814837

2. Permanent :

Mandadeep Residency, Flat No. 204, Subhas Nagar, Near Mandade Hospital, Basshi Road, Latur.

Phone No. _____

Mobile. : _____

3. Date of Birth

: 04/07/1967

Blood Group B+

4. Qualifications

: M.A. EW. SET. Ph.D.

5. Subject

: Economics

6. Designation

: Professor

7. PF Account No. _____

8. Total Exper. of Teaching:

25 years.

9. Date of Superannuation: _____

10. Details of Assigned Work: _____

a) Co-curricular Activities: _____

b) Extra-curricular Activities: _____

11. PAN No.

: ATHPK0879M

12. E-mail ID

: dbtanduljekar@gmail.com

13. Adhar Card No.

: 325081171260



2022 - 2023

M.S.P. Mandal's

Yeshwantrao Chavan College, Ambajogai
Teachers Personal Memoranda

1. Full Name : Dr. Dharmraj Baburao Tandurjekar
Sumame Name Father's/Husband's Name

2. Address - 1. Local : Mandadeep Residency, Flat No-204
Subhas Nagar, Bhusi Road,
Latur

Phone No. _____ Mobile : 9403814837

2. Permanent : Mandadeep Residency, flat No-204
Subhas Nagar, Bhusi Road,
Latur.

Phone No. _____ Mobile : 9403814837

3. Date of Birth : 04/07/1967 Blood Group +

4. Qualifications : M.A. ELO. SET. Ph.D.

5. Subject : Economics.

6. Designation : Professor

7. PF Account No. : _____

8. Total Exper. of Teaching: 26 years

9. Date of Superannuation: _____

10. Details of Assigned Work: _____

a) Co-curricular Activities : _____

b) Extra-curricular Activities : _____

11. PAN No. : AJHPK0879M.

12. E-mail ID : db-tandurjekar@gmail.com.

13. Adhar Card No. : 325081171260





MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Vidyawarta®

International Multilingual Research Journal



Jawahar Education Society's

Vaidyanath College

Parli-Vaijnath

Reaccredited by NAAC with 'B' Grade (CGPA2.53)

One Day National Seminar on

Demonetization And GST Impact on Indian Economy

3rd February, 2018

Organized By
Department of Economics & Commerce

Chief Organizer

Dr.Ippar R.K.

Principal & Senate Member,
Dr.BAMU, Aurangabad

Convener

Prof.Miss.Gaya Nagarao M.

Editor

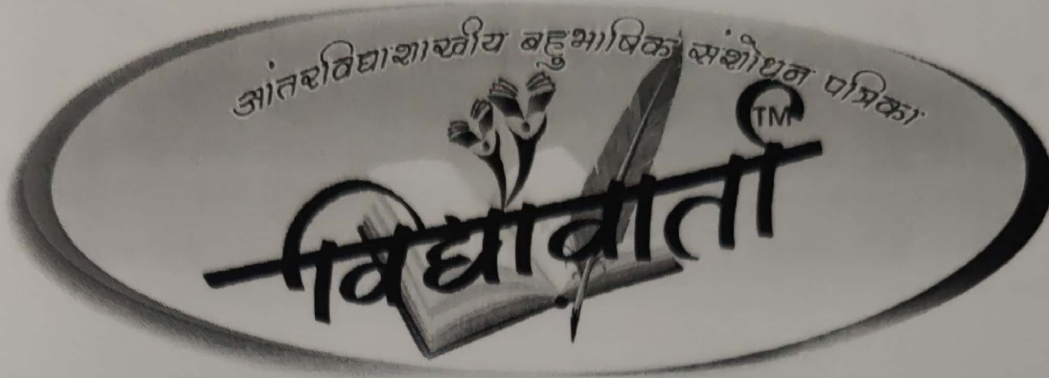
Dr.M.G.Mehatre

Prof.S.S.Sirsat



MAH/MUL/ 03051/2012

ISSN :2319 9318



Special Issue
February 2018

Jawahar Education Society's

Vaidyanath Collage Parli-vaijnath, Dist.Beed (Maharashtra)

Reaccredited by NAAC with 'B' Grade (CGPA2.53)

Affiliated to Dr. Babasaheb Ambedkar University, Aurangabad

National Seminar

on

Demonetization and GST Impact on Indian Economy

3 Feb. 2018

Organized By

Department of Economics & Commerce

Chief Editor

Dr. Ippar R.K.

Principal & Senate Member, Dr. BAMU, Aurangabad

Convener

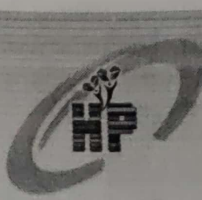
Prof.Miss. Gaya Nagarao M.

Editor

Dr.M.G. Mehatre

Prof.S.S. Sirsat

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205



Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

14) IMPACT OF DEMONETIZATION ON INDIAN ECONOMY Pravin A. Bonke	45
15) GOODS AND SERVICES TAX IN INDIA- ADVANTAGES AND CHALLENGES MR.MUNDE AVINASH DINKAR, DHARMAPURI.	49
16) "Impact of G.S.T on organized Kirana retail sector" Shri. Adsul Sumit Pratap, Miss. Kamble Kusum Sidram, Miss. Bhosale Harshada Parmeshwar	52
17) IMPACT OF GST ON AGREECULTURE SECTOR IN INDIA Dr. Anurath M. Chandre, Parli-Vaijnath	54
18) A STUDY ON GST AND ITS IMPACT ON GOVERNMENT AND RETAIL SECTOR Pradip Pundlikrao Shahane	59
19) GST AND AGRICULTURE SECTOR Yogesh A. Borade, Bharat B. Nagargoje	62
20) Economic Policy & OBC's Socio - Economical and Educational Status Dr. Bharat A. Pagare, Majalgaon, Dist. Beed	65
21) भारतीय अर्थव्यवस्थेचा कृषीक्षेत्रातील नोटबंदी व सेवाकरांचा परिणाम प्रा.डॉ. काळम प्रमोद गंगाधरराव, केज जि.बीड.	70
22) नोटबंदी आणि उच्च शिक्षणावर होणारे परिणाम प्रा.डॉ. आगळे सुधीर वसंतराव, केज जि.बीड.	73
23) निश्चलनीकरण आणि GST चा भारतीय अर्थव्यवस्थेवर परिणाम प्रा. गारुळे एन.टी., परळी वै.	76
24) जी.एस.टी.चा कृषी क्षेत्रावरील परिणाम मेघराज जनार्दन मोरे,	78
25) जीएसटी— क्रांतीकारी पाउल प्रा. डॉ. धारवाडकर डी.एस., प्रा.डॉ.भालेराव जी.पी.	81
26) वस्तु व सेवा कर तत्व आणि व्यवहार प्रा.डॉ. डी.बी.तांदुळजेकर, अंबाजोगाई	83

वस्तु व सेवा कर तत्व आणि व्यवहार

प्रा.डॉ. डी.बी.तांदुळजेकर

अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख,

बंशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, अंबाजोगाई

फुलाला इजा न पोहंचविता मध गोळा करणे म्हणजे कर ते सरकारने दिवसा लोकांच्या खिशावर टाकलेला दरोडा म्हणजे कर इतरपर्यंतच्या प्रवासामध्ये कर या संकल्पनेमध्ये अनेक लहान मोठे बदल मागील शंभर वर्षांच्या कालखंडात घडवून आले आहे.

खऱ्या अर्थाने दुसऱ्या महायुद्धानंतर सैनिकी राज्याच्या संकल्पनेची जागा ही कल्याणकारी राज्याच्या संकल्पनेने घेतली. जगामध्ये दुसऱ्या महायुद्धानंतर अनेक देश स्वतंत्र झाली. आणि त्या सर्वांनीच कल्याणकारी राज्याची संकल्पना स्विकारली. १९५० ते १९६० च्या दशकामध्ये जगाची दोन भागात विभागणी झाली. एका बाजूला समाजवादी, साम्यवादी तर दुसऱ्या बाजूला भांडवलशाही. १९९० च्या दशकामध्ये रशियाच्या पाडावानंतर भांडवलशाहीच्या विकासाची घोडदौड सुरू झाली. आणि जणू जगामध्ये कल्याणकारी राज्याच्या निर्मितीची सर्वांचे सुरू झाली याला भारतही आपवाद नव्हता.

भारताला स्वातंत्र मिळाल्यानंतर २६ जानेवारी १९५० ला जागाच्या पाठीवर भारत हा स्वतंत्र गणराज्य असलेला देश अस्तित्वात आला. घटनेच्या कलम २६४ ते ३६४ भाग १२ नुसार केंद्र आणि राज्य सरकारे यांचे वित्तीय संबंध स्पष्ट करण्यात आलेले आहेत. त्याचबरोबर कलम ३०१ ते ३०७ नुसार वेगवेगळ्या घटकराज्यांचे आपआपसातील व्यवसाय, व्यापार व्यवहार संबंधी संबंध हे स्पष्ट करण्यात आलेले आहेत. घटनेच्या कलम २६५ नुसार केंद्र आणि घटक राज्य सरकारे घटनात्मक कायदेशिर तरतूदीशिवाय

देशामध्ये प्रत्यक्ष किंवा अज्ञानाने कर आणि शकत नाही किंवा लागू शकत नाहीत

भारताने संघराज्य किंवा प्रणाली स्विकारत असताना उत्पन्नाची वाटणी केंद्र आणि घटकराज्य तसेच केंद्र शासित यांच्यामध्ये करण्यासाठी घटनेच्या कलम २७८ नुसार दर पाच वर्षांनी भारताने वाटणी वित्त आयोगाची स्थापना करतात आणि हा वित्त आयोग केंद्र आणि घटक राज्य सरकारे त्याचबरोबर केंद्र शासित प्रदेश यांच्यामध्ये उत्पन्नाची वाटणी करण्याचे काम करत असतात. वित्त आयोगाच्या शिफारशीनुसार भारतामध्ये उत्पन्नाची वाटणी केंद्र आणि राज्य सरकार यांच्यामध्ये होत असल्याकारणाने केंद्र आणि राज्या यांच्यामध्ये कोणताही वाद निर्माण होत नाही.

नियोजनाच्या ६७ वर्षांच्या काळामध्ये भारत सरकारने जे विविध आर्थिक धाडसी निर्णय घेतले. त्यामध्ये व्यापारी बँकांचे १९६९ चे राष्ट्रीयकरण १९९०-९१ चे खुले आर्थिक धोरण आणि २०१७ चा वस्तु व सेवा कर अधिनियम इत्यादी. नियोजनाच्या काळातील धाडसी आर्थिक निर्णय होत.

कर विषयक सुधारणा करण्यासाठी माजी वित्त आयोग अध्यक्ष विजय केंडकर यांच्या अध्यक्षतेखाली २००३ साली एक समिती गठित करण्यात आली. या समितीने २००६ साली आपला मसूदा तयार केला. २०११ साली वस्तु व सेवा कर विधेयक हे संसदेत मांडले गेले. केंद्र सरकार आणि राज्यसरकार यांच्यामध्ये सहमती न झाल्यामुळे हे विधेयक प्रलंबित राहिले. युपीये सरकारनंतर बी.जे.पी. पक्षाचे सरकार अस्तित्वात आल्यानंतर पुन्हा या विधेयकावर चर्चा सुरू झाली. देशाच्या बहुतांश राज्यामध्ये याच पक्षाचे सरकार आणि केंद्रामध्ये याच पक्षाचे सरकार असल्यामुळे वस्तु व सेवाकर विधेयक २०१७ पारित करणे या सरकारला शक्य झाले. आणि १ जून २०१७ पासून भारतामध्ये वस्तु व सेवा कर लागू झाला. आज या विधेयकाच्या बाजूने आणि विरोधामध्ये अनुकूल प्रतिकूल जी काही मते मांडली जात असली तरी दिर्घकाळाचा विचार केला असता देशाच्या विकासासाठी हे विधेयक आणि ही कर प्रणाली निर्माण होणे ही काळाची गरजच होती.

वस्तु व सेवा कर (जी.एस.टी.) काय आहे? वस्तु व सेवा कर कशासाठी? वस्तु व सेवा कराची कार्य प्रणाली काय आहे? वस्तु व सेवा कराचा भारतीय अर्थव्यवस्थेवर दुरगामी परिणाम काय होईल? याचा लेखाजोखा मांडण्याचा हा एक अल्पसा प्रयत्न.

जगामध्ये सर्वत्र राष्ट्रांमध्ये सैद्धांतिक पातळीवर राज्यस्व विषयक सिद्धांत हे समान असतात. तसे ते भारतातही आहेत. संघीय आणि संघ राज्यीय प्रणालीनुसार कर विषयक कायदे किंवा नियम इतका अल्पसा बदल हा असल्या कारणाने कर विषयक नियम किंवा कायदे लागू करण्यासाठी कमी अधिक प्रमाणात त्या-त्या राज्यांना थोड्या फार प्रमाणात अडचणी या येत असतात. एकसंघ राज्य प्रणालीमध्ये कर नियम किंवा कायदे तयार करणे तसे सोपे काम असते. याच्या तुलनेत संघराज्य प्रणालीमध्ये केंद्र आणि राज्य यांचे स्वतंत्र अस्तित्व आणि कायदे असल्याकारणाने राज्यस्व विषयक किंवा कर विषयक कायदे करणे हे थोडे जिकिरिचे असते. इंग्लंड, फ्रान्स ही एक संघराज्य प्रणाली स्विकारणारे देश आहेत. त्यामूळे या देशामध्ये सर्वप्रथम वस्तु व सेवा कर लागू केला गेला. भारतामध्ये वस्तु व सेवा कर लागू करण्यासाठी केंद्र आणि घटक राज्य सरकारने यांच्यामध्ये समन्वय प्रस्थापित करण्यासाठी वेळे लागला. त्याचे कारण आपली संघराज्यीय वित्तीय प्रणाली होय.

भारतामध्ये संघराज्य वित्तीय प्रणालीनुसार केंद्र आणि राज्य सरकारांना प्रत्यक्ष आणि अप्रत्यक्ष स्वरूपाची कर लादण्याचा अधिकार आहे. १ जून २०१७ पर्यंत केंद्र सरकार १५ प्रकारचे अप्रत्यक्ष कर तर २० प्रकारचे अप्रत्यक्ष राज्य सरकार आकारत होती. वस्तु कराबरोबर भारतामध्ये केंद्र आणि राज्य सरकारे मिळून जवळ जवळ ३३ सेवा कर ही लादत आणि आकारत होती. केंद्र आणि राज्य सरकार यांचे मिळून अप्रत्यक्ष स्वरूपाचे वस्तूवर आणि सेवावर जवळ जवळ ६८ प्रकारचे विविध कर होते. या सर्व करांना एकत्रित करण्याचे काम वस्तु व सेवा कर अधिनियम २०१७ नुसार झालेले आहे. याचा अर्थ १ जून २०१७ पासून देशामध्ये अप्रत्यक्ष स्वरूपाचा एक आणि एकच कर असेल.

वस्तु व सेवा कर देशामध्ये लागू झाल्यापासून १ देश एक कर आणि एकच बाजार अशी परिस्थिती

निर्माण झालेली आहे. याचा अर्थ संपूर्ण देशामध्ये एका वस्तुची किंमत सर्वत्र ठिकाणी सारखीच असेल. वस्तु व सेवा कर अधिनियम लागू होण्यापूर्वी एकाच वस्तुची किंमत देशाच्या विविध भागामध्ये वेगवेगळी असायची एकाच वस्तुवर केंद्र आणि राज्य सरकार विविध प्रकारचे वेगवेगळे कर लादत असत. आत मात्र एक आणि एकच कर असेल.

जी.एस.टी. समजून घेण्यासाठी सी.जी.एस. टी., एस.जी.एस.टी., आय.जी.एस.टी. आणि यु.टी. जि.एस.टी. समजून घेणे आवश्यक आहे. जी.एस.टी. ही प्रामुख्याने दोन भागामध्ये विभागली जाते. एक म्हणजे सी.जी.एस.टी. आणि एस.जी.एस.टी. आणि दुसरी म्हणजे सी.जी.एस.टी. आणि एस.जी.एस.टी. किंवा यु.टी.जी.एस.टी. सी.जी.एस.टी. चा महसूल हा केंद्राकडे जात असतो. तर एस.जी.एस.टी. महसूल हा राज्याकडे तर यु.टी.जी.एस.टी. चा मोबदला केंद्र शासित प्रदेशांना मिळणारा मोबदला असतो. जी.एस.टी. विधेयक २०१७ नुसार सी.जी.एस.टी. आणि एस.जी. एस.टी. चा दर हा समान असेल. तर यु.टी.जी.एस. टी. हा विषय केंद्राच्या अखत्यारीतील विषय आहे.

जी.एस.टी. मूळे एकतर कर रचनेमध्ये सुसूत्रा, पारदर्शकता येणार आहे. जी.एस.टी. ने देशातील व्यवसायीक, व्यापारिक उत्पादक यांच्यावर विश्वास ठेवलेला आहे. देशातील ११ लहान घटक राज्य जसे पूर्वोत्तर सेवन सिस्टर चंदीगढ उत्तरांचल राज्यामध्ये १० लाख रूपये उलाढाल असेल तर जी.एस.टी. खाते बंधनकारक आहे. तर ही घटक राज्य सोडून बाकीच्या घटक राज्यामध्ये ही मर्यादा २० लाख रूपये इतकी आहे. १ कोटी रूपयापेक्षा अधिकची उलाढाल असेल तर जी.एस.टी. खाते बंधनकारक असून अंकेक्षकाकडून लेखा परिक्षण करून घेणे हे बंधनकारक आहे. जी.एस.टी. खाते हे ऑनलाईन उघडता येते. त्याचे ऑनलाईन हिशोब सादर करता येतात. त्यामूळे हिशोबनिसाकडे जाण्याची आवश्यकता नाही. किंवा कर विभागाकडेही व्यवसायीकांना जाण्याची आवश्यकता नाही. ऑनलाईन पध्दतीने हिशोब ठेवणे आणि परतावा दाखल करणे हे सहज शक्य झाले आहे. त्यामूळे व्यापाऱ्यांची सोय ही जी.एस.टी.ने

करून दिलेली आहे. वस्तु व सेवा कर हा अंतीम उपभोक्त्याकडून वसूल केला जाणार असल्यामुळे अंतीम उपभोक्ता ज्या ठिकाणी असणार आहे त्याच ठिकाणावरून हा कर वसूल केला जाणार असल्यामुळे करावर कर हा असणार नाही.

वस्तु व सेवा कर विधेयक २०१७ आंमलात आल्यानंतर दिर्घकाळात किंवा दुरगामी अर्थव्यवस्थेवर काय परिणाम होईल याचा आपण या ठिकाणी थोडक्यात आढावा घेणार आहोत तो पुढील प्रमाणे.

१. राष्ट्रीय उत्पन्नामध्ये वाढ होईल :-

वस्तु व सेवा कर अधिनियम लागू झाल्यामुळे केंद्र आणि राज्य सरकारे यांच्या महसूलांमध्ये वाढ होईल. ही वाढ होत असताना विकसित घटक राज्यांच्या महसूलांमध्ये होणारी वाढ ही अधिक असेल तर विकसनशिल घटक राज्यांच्या महसूलांमध्ये वस्तु व सेवा करामुळे घट होण्याची शक्यता नाकारता येत नाही. परंतु पुढील पाच वर्षे घटक राज्यांचे होणारे नुकसान हे केंद्र सरकार भरून देणार आहेत.

मद्य विक्रीकर, डिझेल विक्रीकर पेट्रोल विक्रीकर, विद्युत विक्रीकर हे सर्व वस्तु व सेवा कर अधिनियम २०१७ च्या बाहेर असल्यामुळे राज्य सरकारांचे या पासून मिळणारे उत्पन्न हे कायम राहणार आहे. याचा परिणाम विकसित घटक राज्यांच्या उत्पन्नामध्ये भरघोस वाढ होण्याची शक्यता आहे. आणि विकसनशील घटक राज्यांचे होणारे नुकसान हे केंद्र सरकार भरून देणार असल्यामुळे त्या घटक राज्यांचेही विशेष असे नुकसान होणार नाही. परिणामी केंद्र आणि राज्य सरकारे यांच्या महसूलांमध्ये वाढ झाल्यामुळे देशाच्या एकूण जी.डी.पीमध्ये निश्चितच वाढ होण्यास मदत होईल.

२. किंमत पातळीत घट होईल :-

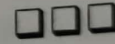
वस्तु व सेवा कर अधिनियम २०१७ पारित झाल्यामुळे दुबार कर दोष टाळला जाईल. या विधेयकामध्ये जवळ-जवळ १२०० वस्तु निश्चित केलेल्या आहेत. या निश्चित केलेल्या वस्तुपैकी ८० टक्के वस्तूवर १८ टक्के किंवा त्यापेक्षा कमी जी.एस. टी. असणार आहे. यापूर्वी जी अप्रत्यक्ष कर प्रणाली अस्तित्वात होती तेव्हा सरासरी ३५ ते ४० टक्के इतका कर एका वस्तूवर लादला जात होता. त्यामध्ये

केंद्र, राज्य, स्थानिक, एक्साईज, विक्री, व्हॅट, करमणूक इत्यादी स्वरूपाचे विविध कर लादले जात होते तसे आता होणार नाही. त्यामुळे देणात एकंदरीत किंमत पातळी ही नियंत्रणात येईल.

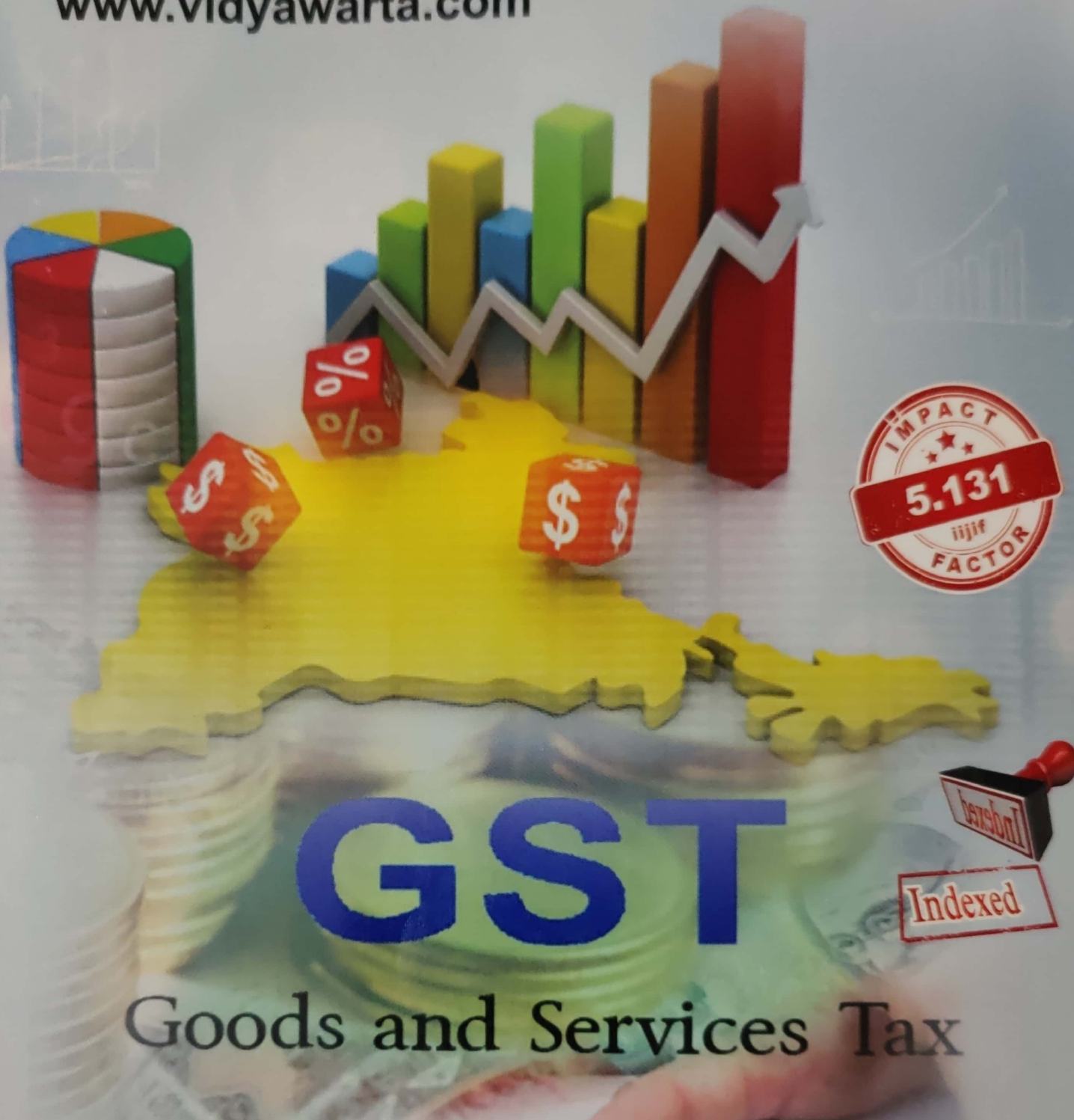
३. उत्पादन, उत्पन्न, रोजगार, गुंतवणूकीला चालणा देशामध्ये एक देश एक कर अस्तित्वात आल्यामुळे निश्चितच उत्पादन वाढीला चालना मिळेल. उत्पादनाला जेव्हा चालना मिळते तेव्हा रोजगाराला प्रतिपुष्टि मिळून गुंतवणूक आणि गुंतवणूकीतून पुन्हा विकासाला चालना ही मिळत असते. तसे होईल अशी आशा करायला हरकत नाही.

४. परकीय गुंतवणूक :-

देशामध्ये कर प्रणाली सरळ सोपी पारदर्शी झाल्यामुळे परकीय गुंतवणूक देशामध्ये आकर्षित होण्यास मदत होईल. परकीय गुंतवणूक देशामध्ये आली असता त्याचा अनुकूल परिणाम हा उत्पादनावर रोजगारावर निर्यात वृद्धीवर आणि रूपयाच्या मुल्यावर हा भविष्यामध्ये निश्चितच होईल अशी आशा जी.एस. टी.ने निर्माण केलेली आहे.



www.vidyawarta.com




GST

Goods and Services Tax

Published By

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh, Tq.Dist.Beed-431 126

(Maharashtra) Mob.09850203295 

E-mail: vidyawarta@gmail.com

www.vidyawarta.com



ISSN-2319 9318

